# कलवरी के आंसू

शशोवन

PUBLISHER
Hindi Masih Patra Prakashan
2379 Cochise Drive
Acworth, GA 30102 [ U.S.A. ]

**YKP Serial Number**
YKP - 0777 - 04 - 07 - 2005 / 1000
YKP - 0777 - 04 - 07 - 2010 / 1000

**ISBN : 0 - 9764933 - 0 - 6**

**Price**
$ 10.00
Rs. 200.00

**First Edition**
July 2005
**Second Edition**
October 2010

**© Yeshu Ke Paas, Inc.**

**Author**
Sharovan

**Composer, Printer & Distributor**
Yeshu Ke Paas, Inc.

---

**CALVASRY KE AANSOO**

(The story based upon the real situation of churches of Northern Part of India)

A Complete novel by Hindi Story Author and novelist Sharovan

Printed in United states of America

# कलवरी के आंसू

उत्तरी भारत के मिशन चर्चों की बिगड़ती हुई दशा का स्पष्ट
रूप व सही कारण प्रस्तुत करने वाला मर्मस्पर्शी कथाकार
शरोवन का भावनाओं में डूबा, दर्दभरा, आंसुओं से युक्त
एक अनूठा, शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास

PUBLISHER

**Yeshu Ke Paas, Inc.**

Hindi Masih Patra Prakashan

" तुम एक मसीही लड़के हो ? "
" जानता हूं। "
" तो फिर तुम्हारे दिल में ये शैतानी कार्य और उसकी युक्तियां क्योंकर आ गईं ? "
" इंसान की पवित्र भावनाओं पर जब बेइमानी, नफरत और जलस का कुठाराघात बिना कारण चलने लगे तो फिर वहां पर घृणा, क्रोध और इंतकाम की चिंगारियां अपने आप ही जन्म ले लेती हैं। "
" कलवरी ! "
" मत लो इस नाम को दुबारा अपनी जुबान पर। 'कलवरी' की पवित्र सलीब पर बेगुनाहों का कत्ल करने वालों को मेरी बंदूक कब्रिस्थान की तन्हाइयों में हमेशा के लिये दफ़न कर देती है। शर्म आनी चाहिये, मरे हुये लोगों के बसेरों का सौदा करने वालों को। इसीलिये मैंने उनको कब्रिस्थान पहुंचाने की कसम खाई है। "

**- उपन्यास अंश**

शशोधन
का एक और प्यारा, दर्दभरा, ज्वलंत
सामाजिक उपन्यास

# भारत की रचना

'उन परमेश्वर के चुने हुये लोगों को,
जिन्होंने उत्तरी भारत की मिशन सेवाओं में
अपने सारे मन और आत्मा से समर्पित होकर काम किया,
और बदले में पाया, अपमान, जिल्लत, तंगी और हर वक्त
अभावों में रिसता हुआ एक ऐसा जीवन कि,
जिसकी मिसालों से भारत का इतिहास आज तक रिक्त नहीं
हो सका है।'

# कलवरी के आंसू

## प्रथम परिच्छेद

**सांवतबाड़ी।**

हस्पताल का वातावरण। सर्दी के दिन थे, और सुबह की कोमल बेजान धूप अभी पूरी तरह से मजबूत भी नहीं होने पाई थी, कि साथ में ठन्डी ठन्डी हवाओं ने अतिरिक्त छेड़छाड़ आरंभ कर दी थी। उनका प्रकोप इसकदर बढ़ता जा रहा था कि शीत की एक हल्की लहर के स्पर्श मात्र से ही मानव शरीरों में कंपकपी छा जाती थी। सर्दी की ठिठुरन के कारण वातावरण का शव किसी लाश के समान रह रह कर अकड़ा जाता था।

हस्पताल के व्यस्त प्रांगण में डाक्टर, नर्सों तथा मरीजों का आवागमन पूरी तरह से जारी हो चुका था। सारे वातावरण में कोहरे की हल्की सी चादर का साथ लेकर ठंड का प्रकोप सारे माहौल को अपने अधिकार में कर चुका था, मगर फिर भी हस्पताल के चारों तरफ तथा सड़क के दोनों ओर मनुष्यों का भारी हुजूम हर पल बढ़ता जा रहा था। भीड़ के हरेक दर्शक की आंखों में एक अजीब ही कौतुहल और आश्चर्य की रेखायें खिंची हुई थीं। लोगों में बातें थीं। आश्चर्य था। उनके आकर्षण का कारण हस्पताल के चारों ओर छाई टिड्डी दल के समान पुलिस की एक बहुत ही बड़ी टुकड़ी का तैनात होना था। सुरक्षा और सतर्कता को ध्यान में रखते हुये शहर की सरकार ने अतिरिक्त पुलिस दल अर्थात् प्रादेशिक सेना को भी लगा रखा था। इसी कारण पुलिस का हरेक सिपाही सतर्क और चौंकन्ना था, क्योंकि पिछली ही रात लगभग दो बजे के करीब एक ऐसा केस हस्पताल के अंदर आया था कि जिसके कारण स्थानीय पुलिस के अतिरिक्त सुरक्षा दल को भी यहां पर आना पड़ा था।

सांवतबाड़ी और उसके आस पास के इलाकों में अपना आतंक फैलाने वाला कुख्यात डाकू कलवरी कल रात ही पुलिस की एक मुठभेड़ में घायल अवस्था में पकड़ कर यहां लाया गया था। उसके शरीर के कई एक भागों में गोलियां लगी थीं। आप्रेशन के द्वारा गोलियां तो निकाल दी गई थीं, परन्तु फिर भी वह डाकू हस्पताल का मरीज होने के साथ साथ एक

भयंकर अपराधी की हैसियत से पुलिस की कड़ी निगरानी में था। बिस्तर पर ही उसके हाथ पैरों में जंजीरें व हथकड़ियां डाल दी गई थीं। उसको इस समय पुलिस की एक विशेष सुरक्षा में हस्पताल के विशेष कमरे में रखा गया था। कलवरी नाम का ये डाकू अपने शहर और उसके पास के सभी क्षेत्रों में इतना अधिक कुख्यात था कि हस्पताल के हरेक डाक्टर, नर्सें तथा कर्मचारियों के होठों पर केवल उसका ही जिक्र था। हरेक मनुष्य की उत्सुकता व कौतुहलता केवल उस डाकू से ही सम्बंधित थी। मगर फिर भी हस्पताल और मनुष्यों की इस भीड़ में से बिल्कुल अलग थलग, हस्पताल के करीब ही बने हुये नर्सिस हॉस्टल के 'रोज़गार्डन' में एक नर्स चुपचाप बैठी हुई अपने विचारों में लीन थी। वह अभी कुछ देर पहले ही अपनी रात की ड्यूटी समाप्त करके आई थी, और सर्दी का प्रकोप होने पर भी यहां एकान्त में अपनी नर्स की ड्रेस पहने हुये ही बैठ गई थी।

सारे जमाने और दुनियां जहान से अलग, अपने विचारों में लीन, गंभीर, खोई खोई सी वह न जाने क्या से क्या सोचे जा रही थी। उसे इस समय किसी भी बात का तनिक भी होश नहीं था। हस्पताल के अन्दर और चारों ओर बिखरी हुई भीड़ का भी उसे जैसे कोई आभास नहीं था। यूं भी ये मनुष्य का स्वभाव है कि वह जब भी अपने विचारों की गहराइयों में डूब जाता है तो फिर उसे किसी भी बात का होश नहीं रह पाता है। यही दशा इस नर्स की भी हो चुकी थी। वह भी अपने अतीत के जिये हुये दिनों को जैसे फिर एक बार ढूंढ़ ढूंढ़ कर जमा कर लेना चाहती थी।

नर्सिस हॉस्टल के मन भावने, खुबसूरत पुष्पों के बगीचे में हर तरह के गुलाब खिले हुये नये दिन की नई सुबह का स्वागत कर रहे थे। हर फूल मुस्करा रहा था। हरेक कली के चेहरे पर चंचलता का राज्य था। फूलों की खुशबू चारों ओर बिखरते हुये, वातावरण को अपनी सुगन्ध से भरे दे रही थी। फूलों तथा क्यारियों की हरी भरी घास पर रात्रि की शबनम की बूंदें अभी भी टिकी हुई थीं, जो शायद ऐसा लगता था कि वे भी आकाश की गोद को छोड़ कर धरती का आंचल जैसे जबरन चूमने आ गई थीं।

अपने विचारों में अत्यन्त गंभीर और खोई हुई वह नर्स नीलू अभी तक बैठी हुई थी। अपनी ज़िन्दगी की पिछली भूली बिसरी बातों को सोच सोच कर उसका मन और भी अधिक उदास हो चुका था। दिल बार बार अतीत के भूले हुये प्रश्नों का उत्तर सुनने के लिये तड़प तड़प जाता

था। उसके जीवन के जिये हुये दिनों की वह कहानी कि जिसकी तस्वीर एक प्रकार से उसके मानस पटल से साफ हो चुकी थी, आज फिर अचानक ही जैसे उसकी ज़िन्दगी के किसी श्रृण का तकाजा करने उसके सामने आ गई थी। किसी के बरबाद जीवन की वे बिगड़ी हुई तस्वीरें कि जिनको दुबारा देखने के लिये उसने कभी कल्पना भी नहीं की होगी, आज उसको अपनी उजाड़ और तबाह हालातों की बिगड़ी हुई दशा का वास्तविक कारण बताने आ चुकी थीं। एक ऐसा कारण कि जिसके दोष की हरेक अंगुली आज उसको केवल अपनी तरफ ही उठती दिखाई देती थी। ये उसकी कैसी बिडम्बना थी कि, बगैर अधिकार लिये, मुहब्बतों की राहों पर चलने का अंजाम आज वह अपनी आंखों से देख रही थी, और गवाही में एक टूटा शब्द भी नहीं कह सकती थी। क्षितिज कुमार 'कलवरी', एक कुख्यात भयानक डाकू और मुजरिम आज उसके ही हस्पताल में, उसकी ही शरण में, अपनी ज़िन्दगी और मौत के झूले में पड़ा हुआ अपने दूषित जीवन का कारण मूक होकर जैसे सबको बता रहा था।

बैठे बैठे, नीलू उपरोक्त यही सब कुछ सोचती जा रही थी। सांवतबाड़ी के इस मशहूर हस्पताल की मुख्य नर्स नीलू, जिसने मानव जीवन को सदैव ही एक मनोरंजन की हैसियत से देखा था। मनुष्य के जीवन में आई हुई हरेक कठिन से कठिन गंभीर परिस्थिति को वह केवल खेल समझ कर टाल दिया करती थी। जिसने कभी भी किसी भी बात की चिन्ता न करते हुये सदैव ही मुस्करा कर जीना सीखा था। कभी भी किसी भी बात को गंभीरता से नहीं लिया था, और जो कभी उदास और गंभीर चेहरों को देख कर खिलखिला कर हंस दिया करती थी, आज स्वंय उदासियों का गुबार बन कर रह गई थी। ऐसी गंभीर थी कि अचानक ही उसके दिल में कोई टीस उठ कर रह जाती थी। आज उसके चेहरे की सारी आभा और मुस्कराहट न जाने कहां जाकर लुप्त हो चुकी थी। उसने जब से उस मशहूर कुख्यात डाकू कलवरी को अपने ही हस्पताल में घायल अवस्था में पड़ा देख लिया था, तब ही से उसका समूचा दिल उदास होकर रह गया था। आंखें सूनी और होठ खामोश थे। परन्तु फिर भी उसकी नज़रों के सामने उसके अतीत के वह चित्र बन उठे थे कि जिनको वह एक अरसे से अपने मानस पटल से उतार चुकी थी। नीलू के मन मस्तिष्क में उसकी ज़िन्दगी के पिछले जिये हुये दिन अपने आप ही किसी श्रृंखला की टूटती हुई कड़ियों के समान उसकी आंखों के समक्ष बिखरने लगे.....'

क्षितिज_____उदास बैठी हुई नीलू के दिल में जैसे एक आवाज सी उठी। उसने मन ही मन दोहराया_____क्षितिज। दिल के किसी कोने में दुबकी हुई वर्षों पूर्व उसकी किसी स्मृति ने जैसे करवट ली क्षितिज। उसके दिल से फिर एक आवाज़, उसकी सांसों की हूक बन कर उभरी____क्षितिज। वर्षों पूर्व प्यासे और सूखे होठ पुकार उठे क्षितिज। सूनी आंखों ने एक तस्वीर बनाई____क्षितिज। दिल ने किसी जानी पहचानी शख्सियत का स्पर्श किया_____क्षितिज। उसके पिछले जीवन की राहों का एक भूला बिसरा मोड़_____क्षितिज। एक पथिक, एक हमकदम, उसके जीवन की बहारों का एक ऐसा पुष्प जिसे उसने अनजाने में छू लिया था तो वह टूट कर उसके आंचल में तो गिरा था, मगर फिर जिसे उसने लापरवाही से बाहर निकाल कर फेंक भी दिया था। दिल के बगीचे से टूट कर पतझड़ की हवाओं में भटका हुआ, आज से कई वर्ष पहले का वह क्षितिज जो कभी एक दिन उसके दिल की खुशियों का भंडार बन कर उसके मन के घर में सदा के लिये बसेरा करने आया था, मगर कोई क्या जानता था कि समय के बदले हुये रूप के एक ही थप्पड़ के प्रहार के कारण आज वही क्षितिज बदनामी का सरताज बन कर हर दिल की चर्चा का विषय बन जायेगा।

नीलू को याद आया, आज से कई वर्षों का वह दिन जब कि वह सांवतबाड़ी में रहा करती थी। सांवतबाड़ी के एक बहुत ही बड़े मिशन कम्पाउंड में उसका घर था। तब क्षितिज भी वहीं पर रहा करता था। चूंकि दोनों एक उम्र और एक ही कक्षा के सहपाठी थे, सो दोनों साथ ही कॉलेज जाया करते थे। सांवतबाड़ी कॉलेज के वे प्यारे प्यारे दिन। वे सुन्दर पल, कितने सुन्दर और लापरवाह थे। किसकदर अल्हड़, कि साथ साथ चलते समय जब वह अचानक ही क्षितिज का हाथ थाम लेती थी। अनजाने में जब फिर स्पर्श पाते ही क्षितिज उसकी ओर देखने लगता था तो वह एक हल्की सी मुस्कान को बिखेरते हुये तुरन्त उसका हाथ छोड़ भी देती थी। इस प्रकार कि जैसे चोर चोरी करते हुये अचानक ही पकड़ लिया गया हो। नीलू को तो यादों की गिनती भी नहीं है कि न जाने कितने ही मौज भरे दिनों में तब वह क्षितिज के साथ साथ एक तितली के समान उड़ती फिरती थी। कितनी अल्हड़, चचंल बनी तब किसकदर बहती हुई हवाओं को अपना हमकदम बनाकर वह जैसे वायु के समान एक स्थान पर कभी टिकती ही नहीं थी।

नीलू तब सावंतवाड़ी के ही कालेज की एक हसीन और बेहद प्यारी छात्रा थी। वह जैसी ख़ूबसूरत थी, वैसी ही वह पढ़ने में भी काफी होशियार थी। उसे मालुम है कि इण्टर कालेज की पढ़ाई समाप्त करते ही उसने जैसे ही कालेज की चारदीवारी में अपना कदम रखा था, उसी समय से वह सारे कालेज में चर्चा का विषय बनने लगी थी। तब वह बी. ए. के प्रथम वर्ष में पढ़ने कालेज में आ गई थी। इण्टरमीडिएट करने के पश्चात वह तो डिग्री कालेज में पढ़ने लगी थी, मगर क्षितिज आगे नहीं पढ़ सका था। हांलाकि वह आगे पढ़ना चाहता था, परन्तु नहीं पढ़ सका था। नीलू को ख़ूब याद है कि जब एक दिन क्षितिज ने कितनी उदासी के साथ उससे कहा था कि,

" नीलू, ख़ुदा का कितना अच्छा अनुग्रह तुम्हारे साथ है कि, चलो तुम तो कालेज में पहुंच गई हो, मगर मेरी शिक्षा की सरहद शायद इण्टर के आगे नहीं है। मुझे अब अपनी आगे की शिक्षा का सपना तोड़ कर कोई नौकरी आदि ढूंढ़नी होगी।"

" क्यों ? " नीलू ने आश्चर्य से पूछा था।

" मुझे इलाहाबाद मिशन की लॉन एंव स्कॉलरशिप कमेटी ने आगे पढ़ने के लिये मिलने वाली सहायता देना अस्वीकार कर दी है।"

तब ये सुन कर नीलू चुप हो गई थी। उसके चुप हो जाने का कारण यही था कि वह सारी वास्तविकता को जानती थी। मिशन के द्वारा मिलने वाली पढ़ाई की ये सहायता मुख्यतः गरीब ईसाई बच्चों के लिये हुआ करती थी, मगर स्कॉलरशिप कमेटी में बैठे हुये प्रबन्धकों के मध्य व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण ये सहायता केवल उन्हीं बच्चों को मिला करती थी जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से चाहते थे। बहुत हुआ तो केवल ख़ानापूर्त्ति के लिये गरीब ईसाई बच्चों को थोड़ा बहुत प्रदान कर दिया, नहीं तो जो लोग बड़ी बड़ी जगहों पर बैठे हुये थे, उन्हीं के बच्चों को अधिकांशतयः ये पैसा पढ़ने के नाम पर दे दिया जाता था। सो ऐसा ही क्षितिज के साथ भी हुआ था। पहले तो इण्टर तक की पढ़ाई के लिये उसे थोड़ी बहुत सहायता मिल भी गई थी, मगर इस बार डिग्री कॉलेज की पढ़ाई के लिये तो उसे स्पष्ट मना ही कर दिया गया था। सो स्कॉलरशिप नहीं मिला तो वह आगे पढ़ भी नहीं सका, फलस्वरूप उसे घर पर बैठना पड़ गया। घर की आर्थिक परिस्थितियां उसे किसी भी कीमत पर आगे पढ़ाने और कॉलेज की पढ़ाई का ख़र्चा वहन करने की स्थिति में नहीं थी। हार मान

कर वह निराश होकर घर पर ही बैठ गया। पढ़ाई बन्द हो जाने के बाद अब जो उसे करना था, और जो वह कर सकता था, वही वह चुपचाप करने लगा। प्रति दिन अखबार चाटता। कोई जगह मिलने के बाद उसके लिये प्रार्थना पत्र भरता और डाक के द्वारा उसे रवाना करता, फिर उसके जवाब की प्रतीक्षा में डाकिये की राह देखा करता.....'

सोचते सोचते नीलू की बड़ी बड़ी गहरी आंखों से आंसू स्वतः ही किसी उदास चांदनी में टूटती हुई शबनम की बेजान बूंदों के समान पलकों की कोरों पर आकर अटक गये। उसके दिल में एक टीस उठ कर रह गई। होठों पर आह सी आ गई। दिल के किसी ज़ख्मी हिस्से में दर्द होने लगा। बड़े ही जोर का। इतने जोरों का, कि उसका प्रभाव चेहरे पर छाई हुई भरपूर उदासी ने ले लिया। उसकी आंखें भीग गईं। होठ जैसे फड़क कर ही मौन हो गये। दिल की खामोश नज़रें चुपचाप रोज़ गार्डन के फूलों से अपने दिल का दुखड़ा कहने को मजबूर हो गईं। कौन जानता था कि सांवतवाड़ी के इस बड़े और मशहूर हस्पताल की मुख्य नर्स नीलू के दिल में कितना दर्द था_____कितनी अधिक टीस और किसकदर उसको मन ही मन बुरा लग रहा था। अफसोस का मारा उसका अकेला, परेशान और तन्हा दिल अपने आप में ही चुपचाप रोने लगा था। अपने मन की दशा केवल वही जानती थी और उसके अतीत की यादों का वह भंडार कि जिसमें कभी उसने भूले से वे स्मृतियां अपने जीवन के मार्ग से अनजाने में उठा उठा कर भर लीं थीं कि जिन्हें फिर कभी भी दोहराने की शायद कल्पना भी नहीं की होगी।

ये शायद प्रकृति का नियम ही है कि जब भी मानव अपने आप में परेशान और दुखी होता है तो उसके साथ ही वातावरण में टिकी हुई हरेक वस्तु भी उसको अपने ही समान दर्दभरी और मायूस नज़र आने लगती है। नीलू का भी बिल्कुल ऐसा ही हाल हो चुका था। उसके दिल की परेशान हालत और मन के अंदर भरी उदासी के समान ही हस्पताल का ये फूलों से लदा हुआ हर समय मुस्कराने वाला रोज़ गार्डन भी जैसे आज चुपचाप मायूस बन कर उसके दर्द के हरेक टुकड़े को टुकुर टुकुर देखे जा रहा था। बगीचे का एक एक फूल उसको फीका फीका सा दिखने लगा था। वातावरण का हरेक कोना तक नीलू की उदासी देख कर अब खामोश पड़ गया था। वह भी जैसे अपनी मूक निगाहों के द्वारा चुप चुप उससे कोई सवाल कर रहा था।

किसे ज्ञात था कि हस्पताल के एक विशेष और पुलिस की कड़ी निगरानी के एक कमरे में घायल पड़े हुये कुख्यात डाकू क्षितिज कुमार 'कलवरी' की व्यक्तिगत ज़िन्दगी से नर्स नीलू के जीवन का क्या रिश्ता था। अपने जमाने का कभी एक निहायत ही भले और शरीफ शहरी ईसाई मसीही युवक की बरबाद ज़िन्दगी का तमाशा वह खुद अपनी ही आंखों से देख रही थी और उसके गम में उफ तक नहीं कर सकती थी। बिडम्बना थी कि ये युवक भी ऐसा था कि जिसकी पिछली ज़िन्दगी के हरेक लम्हों से नीलू के जीवन का एक विशेष सम्बंध जुड़ा हुआ था। वह सोच रही थी कि क्षितिज के डाकू जीवन की सारी बरबादियों का सारा श्रेय केवल उसको ही जाता था। वही अपने को दोषी और अपराधिनी समझने लगी थी।

नीलू की समझ में ऐसे में कुछ भी नहीं आ पा रहा था कि वह इस विषम परिस्थिति में अब क्या करे और क्या नहीं ? उसने सोचा कि काशः उसने नर्स का प्रशिक्षण नहीं लिया होता। नहीं लिया होता तो कम से कम अपने चाहने वाले के जीवन की हुई इस दुर्दशा को वह नहीं देखती होती। क्यों वह नर्स बनी थी ? क्यों उसने इसका प्रशिक्षण लिया था ? फिर यदि वह नर्स भी बनी थी तो वह यहीं इसी सांवतवाड़ी के हस्पताल में क्यों आ गई ? यहां आ भी गई तो ये क्षितिज यहां क्यों कर आ गया ? यदि आया भी तो इस दशा में क्यों ? अब यदि इस हस्पताल में बाकायदा इलाज होकर उसे जीवन मिल भी गया तो कानून तो उसको कभी भी जीवित नहीं छोड़ेगा। यहां से जाने के पश्चात क्षितिज के जीवन का क्या होगा। वह तो यहां से सीधा ही जेल जायेगा। फिर जेल जाने के पश्चात उसका न्याय होगा। फिर न्याय के बाद.....? सोच कर ही नीलू कांप गई। उसका दिल अचानक ही धड़क गया। इस प्रकार कि धड़कनों पर जब अधिक जोर पड़ा तो आंखों में आंसू भी भर आये। छलक गईं। गला भर आया। उसके जी में आया कि वह खूब जी भर कर रो ले। कहीं भी जाकर अपना सिर फोड़ डाले। पटक पटक कर अपनी जान ही दे दे। या फिर सारा हस्पताल ही उस पर टूट कर गिर पड़े। क्षितिज का इसकदर बुरा हाल देख कर वह तो अब कभी अपने आपको क्षमा नहीं कर सकेगी। कभी उसके साथ साथ पढ़ने और खेलने वाला एक होनहार मसीही युवक आज दुनियां की दृष्टि में जमाने का सबसे खतरनाक, बुरा और कुख्यात डाकू था। एक बागी। एक लुटेरा। अपने गिरोह का एक ऐसा नामी सरदार

'कलवरी' कि जिसको जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिये सरकार ने भरपूर इनाम रखा हुआ था। क्षितिज कल क्या था। नीलू अच्छी तरह से जानती थी। आज क्षितिज कलवरी के नाम से क्यों कुख्यात है ? सोचते ही नीलू की आंख से फिर आंसू टपक पड़े। वह कैसे खुद को क्षमा करे। कहां जाये। किस से अपने मन की बात कहे। सांवतवाड़ी मिशन कम्पाउंड की वे हसीन और मधुर बहारें कि जिनमें रह कर उसने कभी कोई ख्वाब सजाया था, आज फिर एक बार उसके मन मस्तिष्क ने उन्हें ताजा कर दिया। ऐसी यादें कि जिनके सपनों की मनमोहक छांव में खोकर उसने बड़े ही प्यार के साथ क्षितिज को कोई सपना दिखाया था। अपने प्यार का वास्ता देकर उसके अछूते दिल को सदा के लिये धड़का दिया था। उसको अपने साथ प्रेम की इस यात्रा में अपना पथिक, अपना हमकदम और हमसफर बनने को बाध्य कर दिया था..... '

सांवतवाड़ी मिशन कम्पाउंड की वह मधुर और कमसिन ढलती हुई सांझ। शहर के बाहर को अतिरिक्त निकाली हुई सड़क। 'बाई पास' का किनारा। ढलती हुई शाम में सूर्य की अंतिम लालिमा किसी भी समय अपना दम तोड़ सकती थी। सड़क अकेली थी। बिल्कुल सूनसान और तन्हा। किसी भी पथिक से बिल्कुल ही मरहूम। जब नीलू एक बड़े विश्वास के साथ क्षितिज के साथ इस डूबती हुई शाम की बेला में उसका हाथ पकड़े हुये टहल रही थी। जीवन में पहली बार वह उसके साथ इस प्रकार अकेली और इतनी दूर तक आई थी। क्षितिज को अपना और केवल अपना समझते हुये उसने उसका हाथ पकड़ लिया था। बहुत प्यार और अपनत्व के साथ। क्षितिज खामोश था। केवल नीलू ही बातें कर रही थी। क्षितिज तो केवल हां हूं में ही उसे उत्तर दे रहा था। घूमते और टहलते, अपने अपने विचारों और ख्यालों में डूबे हुये दोनों ही बहुत दूर तक निकल आये थे। इतनी दूर कि अब उनको अपने घरों की छतें भी नहीं नज़र आती थीं। सूर्य का गोला दिन भर का भागता भागता थक थकाकर अपना मुंह छिपा चुका था। सड़क बिल्कुल ही वीरान थी। कभी कभार कोई लारी या ट्रक वातावरण की खामोशी को भंग करता हुआ उन दोनों के पास से गुज़र जाता था। नीलू और क्षितिज घूमते हुये मिशन कम्पाउंड से काफी दूर तक आ चुके थे। संध्या डूब गई थी। डूबती हुई शाम का धुंधलका काला होकर आने वाली रात्रि में परिणित होता जा रहा था। इसके साथ ही दूर सड़क के किनारे लगे हुये वृक्ष की घनी पत्तियों के पीछे से चन्द्रमा भी झांकने लगा

था। रात बढ़ने लगी थी। दूर सांवतबाड़ी शहर की विद्युत बत्तियां भी इस आने वाली रात्रि के अंधकार को दूर भगाने के प्रयास में मुस्करा उठी थीं।

फिर जब समय काफी हो गया तो नीलू ने क्षितिज से वापस लौटने के लिये कहा। तब नीलू की इस बात पर क्षितिज दूर आकाश में मुस्कराते हुये आधे चन्द्रमा को निहारता हुआ उससे बोला कि,

" हां, चलते हैं। लेकिन देखो तो कितनी सुन्दर चांदनी की चादर फैलने लगी है। चलो पहले उस टीले पर जाकर थोड़ी देर को बैठेंगे।" ये कहता हुआ वह पास के टीले की ओर बढ़ने लगा। तब क्षितिज को टीले पर चढ़ते देख नीलू कुछ देर को तो अपने स्थान पर खड़ी हुई न जाने क्या सोचती रही। फिर बाद में बगैर कुछ भी कहे और आना कानी किये हुये वह भी चुपचाप क्षितिज के पीछे पीछे टीले की चढ़ाई चढ़ने लगी। क्षितिज तो शीघ्र ही अपनी लम्बी लम्बी टांगों से टीले के काफी ऊपर तक पहुंच गया, लेकिन नीलू जल्दी चढ़ने के प्रयास में किसी पत्थर से ठोकर खाकर अचानक ही गिर पड़ी। गिर पड़ी तो वह उठ कर अपनी चोट के स्थान को देखने लगी। क्षितिज अभी तक उसके गिरने से अनभिज्ञ बना हुआ चुपचाप आकाश में उगती हुई नादान तारिकाओं को निहार रहा था। तब नीलू ने क्षितिज को अपनी तरफ से अनभिज्ञ इस मुद्रा में देखा। चांदनी के दूधिया प्रकाश में उसने क्षितिज के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जी भर के निहारा। तब सोचा और दिल से विचारा; ये क्षितिज ! ये युवक ? क्यों उसने इस पर इतना शीघ्र ही विश्वास कर लिया और उसके साथ इस एकान्त में अकेली चली आई ? इसका क्या भरोसा ? पुरूष तो पुरूष ही हैं। यदि इसने उसके साथ ऐसा वैसा कुछ कर लिया तो वह तो कहीं भी अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगी। यूं भी किसी भी लड़की को इतना शीघ्र ही किसी भी युवक पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिये। अब वह क्या करे और क्या नहीं करे ? अकेली बढ़ती हुई रात___मदहोश चांदनी ? एकान्त ? एक अकेली जवान लड़की ? वह और क्षितिज। कुछ भी हो सकता है.....? सोचते ही नीलू का कोमल दिल कांप गया। अपनी बेबसी को देख कर स्वतः ही उसकी आंखें छलक गईं। नीलू ऐसा सोच ही रही थी कि तभी क्षितिज ने उसकी ओर देखा। देखते हुये वह उसकी तरफ आया। तब उसकी आंखों में बिना कारण आये आंसू देखते हुये वह आश्चर्य के साथ उससे बोला कि

" नीलू ... ! मैं ये क्या देख रहा हूं। तुम्हारी आंखों में आंसू ? "
" !! " तब नीलू ने अपनत्व भरी निगाहों से क्षितिज को निहारा, और बोली कि,
" हां।"
" लेकिन क्यों ? " क्षितिज ने पूछा तो नीलू बोली,
" बहुत चाहने लगी हूं मैं तुम्हें, शायद इसीलिये ये आंखें भर आई हैं।"
" !!"

क्षितिज नीलू की बात को सुन कर चुप हो गया। वह कुछेक पलों तक जैसे बहुत कुछ सोचता रहा। फिर बाद में वह नीलू से बोला कि,
" फिर भी प्यार की अंधी दरिया में कूद कर तुम मेरे साथ साथ बहो, उससे पहले मैं चाहूंगा कि तुम मेरे बारे में भी कुछ जान लो।"
" मैं कुछ भी नहीं जानना चाहती। सच में, मैं कुछ भी नहीं जानना चाहती हूं।" नीलू तपाक से बोली।
" फिर....? " क्षितिज का अगला प्रश्न था।
" तुम्हें मुझसे प्यार है।"
" हां।"
" मैं बस यही जानना चाहती थी।" कहते हुये नीलू ने जैसे चैन की सांस ली थी।

जिन दिनों से नीलू और क्षितिज का ये सिलसिला आरंभ होता है उस समय क्षितिज एक इक्कीस वर्षीय स्वस्थ नौजवान था। आरंभ से ही उसमें समाज सेवा और गरीब परेशान लोगों के प्रति असीम वेदना के अंकुर फूट चुके थे। वह एक बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी था, और सांवतबाड़ी के ही एक इंण्टर कालेज में पढ़ा करता था। घर में उसके माता पिता के अतिरिक्त उसका और कोई भी अपना नहीं था। वही अकेला अपने मां बाप के लिये सब कुछ था। वह एक मसीही परिवार से था और उसके माता पिता भी अपने परमेश्वर के सच्चे अनुयायी थे। शायद यही कारण था कि उनकी इसी शिक्षा का प्रभाव क्षितिज में भी आया था। उन्होंने क्षितिज को भी सदा सत्य बोलने, दूसरों की मदद करना और अपने परमेश्वर से सदैव प्रेम और अगाध श्रृद्धा रखने जैसी शिक्षायें दी थीं। अपने रहने वालों के मध्य भी उसके प्रति लोगों में अच्छी भावनायें थीं। सभी उसके प्रति अच्छी अच्छी भविष्य की आशायें रखे हुये थे। सब ही को उसके आचरण और भविष्य के प्रति एक विश्वास था कि एक दिन ये 'क्षितिज' के समान ही अपने समाज और मुहल्ले का नाम रोशन करेगा।

दिन इसी प्रकार से व्यतीत हो रहे थे। रोजाना सूर्य निकलता और नये दिन को जन्म देता। फिर बाद में दिन भर अपनी यात्रा का सफर पूरा करते हुये शाम को लाल होकर आकाश में थकते हुये अपना मुंह छिपा लेता। पक्षी अपने नीड़ों से निकलते। सारे दिन आवारागर्दी करते, एक दूसरे से लिपटते, प्यार की किलोलें करते, फिर संध्या को मुस्कराते और खेलते हुये अपने बसेरों में दुबक जाते। नीलू और क्षितिज का प्यार भी इन्हीं आजाद पक्षियों के समान दिन व दिन पनप रहा था। शायद इसका कारण था कि नीलू ने क्षितिज के अछूते दिल को अपने प्रथम प्यार की रश्मि से उज्जवलित कर दिया था। उसके दिल के अन्दर अपनी प्रीत का पहला पहला अंकुर उगा दिया था। सो दोनों जब भी अवसर मिलता एक साथ हो जाते। एक ही साथ चलते। चलते हुये एक दूसरे का हाथ थाम लेते। घन्टों एक ही स्थान पर बैठ कर प्रेम की मधुर मधुर बातें करते रहते। ऐसी बातें जो केवल उनके लिये होतीं। इन बातों में मुख्यतः उनके भविष्य के देखे हुये वे सपनों के महल होते कि जिन्हें साकार खड़ा करने के लिये वे न जाने कितनी ही योजनायें बनाते रहते। उनकी बातें थीं कि जो कभी भी समाप्त होने का नाम ही नहीं लेतीं। फिर जब दोनों शाम डूबते विदा होते तो दूसरे दिन का मिलने का समय और वचन भी ले लेते। इतना करने के

पश्चात तब वे बड़ी ही कठिनाई के साथ विदा होते। न चाहते हुये भी। परन्तु उनके मिलन के लिये दूसरा दिन भी होता। एक प्रकार से सारी उम्र ही पड़ी थी। इस कारण ये रात भर का विछोह चुपचाप न चाहते हुये भी सहन कर लेते, और विवश होकर दूसरे दिन मिलने की आशा में अपने अपने घरों को चले जाते। ऐसा था इनका मिलन। उनका पहला पहला प्यार। उनके प्यार की भावनायें कि जिसमें किसी भी खोट और अश्लीलता की बू नहीं आती थी। मन पवित्र थे। मन की भावनायें पवित्र और सामाजिक, धार्मिक नियमों के प्रति सजग थीं। मगर फिर भी शायद ये जमाने का चलन है कि समाज ने कभी भी दो प्रेमियों के प्रेम की भावनाओं से व्यक्तिगत मुहब्बत नहीं की है। सदैव ही उसने उन्हें एक संदेह और अंगुली उठाने के अंदाज से घूरा है। नीलू और क्षितिज का भावुक प्यार भी सांवतवाड़ी के मिशन कम्पाउंड में किसी भी नज़र से छुप नहीं सका। सारी की सारी बूढ़ी और दकियानूसी दृष्टियां उन दोनों को एक प्रश्नभरी निगाहों से अक्सर ही घूरने लगीं। चार लोगों के मध्य उन दोनों को लेकर कानाफूसी होने लगी। बातों का बवंडर तैयार होने लगा। बात एक कान से लेकर दूसरे कानों तक जाने लगी। नीलू के परिवारीजनों ने जब ये सुना तो सब के सब आश्चर्य करके ही रह गये। उन्हें अपनी बेटी पर विश्वास था, मगर क्षितिज पर.....? इसमें अवश्य ही सन्देह था। सारे मुहल्ले में उनकी बेटी के चर्चे थे। विश्वास था भी और नहीं भी। इसलिये वे कोई भी कदम उठाते, इससे पूर्व सारे मामले की जांच कर लेना उन्होंने उचित समझा।

फिर जब एक दिन, हर रोज़ के समान नीलू क्षितिज से विदा लेकर घर पर वापस आई तो उसकी मां ने उससे पूछ ही लिया। वे एक संशय के साथ उसे देखते हुये उससे बोली कि,

" नीलू।"

" ? "

नीलू के पग अचानक ही घर में घुसते हुये जहां के तहां ठिठक गये।

" कहां रहा करती है तू इतनी देर तक हर रोज़ ? "

प्रश्न के साथ साथ उनके कथन में क्रोध भी था। नीलू ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उसने चुप ही रहना उचित समझा। तब उसकी चुप्पी पर पहले से और भी अधिक सन्देह करती हुई उसकी मां ने आगे कहा कि

'' बोलती क्यों नहीं है ? चुप क्यों हो गई ? ''

तब बड़ी देर के सोचने के बाद नीलू जैसे गंभीर होकर बोली कि '' क्या बताऊं।''

'' कहां तेरा आना जाना और मिलना रहता है ? ''

'' जहां भी रहती हूं, कोई गुनाह तो नहीं करती हूं।''

'' क्या मतलब है तेरे कहने का। पाप जब उभर कर सामने आ जाता है क्या तभी पाप कहलाता है ? मुझे सब मालुम है।'' नीलू की बात को सुन कर उसकी मां ने कहा तो नीलू चुप हो गई। उसके तालू से जैसे जुबान चिपक गई। वह खामोश हो गई।

फिर क्षणिक चुप्पी के बाद उसकी मां ने उसे चेतावनी देते हुये उससे आगे कहा। वे बोलीं कि,

'' कल से तेरा उस आवारा और लापरवाह लड़के क्षितिज से मिलना जुलना बिल्कुल बन्द होना चाहिये।'' ये कहती हुई वे जैसे नीलू को आदेश देती हुई अन्दर जाने लगीं तो नीलू ने उनसे कहा कि,

'' ठीक है, जैसा आप चाहती हैं कल से वैसा ही होगा लेकिन.... ''

'' लेकिन क्या.....? '' अन्दर बढ़ते हुये उसकी मां के पैर अचानक ही ठिठक गये।

'' कुछ नहीं।'' नीलू ने कहा और फिर चुपचाप अन्दर अपने कमरे में चली गई। उसकी मां उसे आश्चर्य और विस्मय से ताकती ही रह गईं। वह जान गईं थीं कि उनकी बेटी ने कुछ भी कहने से इनकार तो कर दिया था, मगर उसके इस इनकार के भविष्य में होने वाली उसी बात का पूर्व इशारा था कि जिसके लिये उन्होंने उसे रोकना चाहा था। साफ जाहिर था कि बेटी ने प्रत्यक्ष रूप में उनका आदेश माना तो था, मगर अप्रत्यक्ष रूप से उसमें बगावत के लक्षण थे।

'' मैं जानती हूं कि तू कहना क्या चाहती है ? और जो चाहती है, वह मेरे जीते जी तो कभी भी नहीं होने का।''

नीलू को अपने कमरे में जाते देख उसकी मां कहते हुये भुनभुनाती हुई रसोई में चली गई और काम करते हुये बड़बड़ाने लगी।

' कालेज में क्या गई, और हमें पढ़ाने लगी।'

दूसरी तरफ नीलू अपने कमरे में आते ही अपने बिस्तर पर गिर पड़ी। आज उसकी मां ने उससे कटु शब्द कहे थे, इसका मलाल उसे नहीं

था, मगर उनकी आंखों में उसके प्रति सन्देह के चिन्ह भी थे, यही बात नीलू को परेशान करने लगी। उसने लेटे लेटे सोचा कि, जब उसकी मां उससे ऐसे कटु शब्द बड़ी आसानी से कह सकती है तो फिर उसके मन में कितने खराब विचार भी उसके प्रति बन चुके होंगे। वह सोचती होंगीं कि उनकी बेटी भटक रही है। परन्तु वह उनको कैसे समझाये कि क्षितिज वैसा लड़का नहीं है जैसा कि वे सोचती हैं। वह तो अन्य लड़कों से बिल्कुल ही फर्क किस्म का युवक है। उसने तो क्षितिज के लिये अपने मन में कुछ और ही सोच रखा है। ऐसा 'कुछ' कि जिसका प्रभाव उसके भविष्य के सपनों के रूप में होगा। वे सपने कि जिन्हें हरेक लड़की कम से कम एक बार अपने जीवन में अवश्य ही देखा करती है। लेकिन वह अपनी मां को किस प्रकार समझाये। किस प्रकार उनके दिल में क्षितिज के प्रति बसी गलतफहमी की विचारधारा को दूर करे। यदि उसकी मां ने उसकी पसन्द को स्वीकार नहीं किया तो फिर वह क्या करेगी। क्या उसमें साहस है कि वह परिवार और समाज के विरूद्ध अपने जीवन साथी का चुनाव खुद कर ले। बदनामी और मां बाप के प्रति नाफरमानी का कदम वह किस प्रकार से आगे बढ़ायेगी?

नीलू ने बिस्तर पर लेटे हुये ऐसा सोचा तो स्वतः ही अपनी बेबसी को सामने पाकर उसका दिल चुपचाप रोने लगा। पल भर में ही उसकी आंखों के सामने निराशा के बादल छाने लगे। क्या प्रेम पथ की राहों पर चलने का यही सिला मिलने की आशा हरेक को करनी चाहिये। परमेश्वर ने तो मनुष्य की रचना करते समय कोई भी भेदभाव नहीं रखा था, तो फिर इंसानों की दुनियां में ये अन्तर क्यों आ गया। सोचते सोचते जब नीलू से आगे कुछ भी नहीं बन सका तो फिर उसने यही सोच कर सन्तोष कर लिया कि अभी तो जीवन साथी के बन्धन में बंधने के लिये काफी वर्षों की दूरी है। अभी तो समय ही क्या है। उसके पढ़ने और अपने पैरों पर खड़े होने के लिये बहुत समय पड़ा हुआ है। जब समय आयेगा तब ही वह अपनी मां व परिवार वालों को समझा लेगी। वैसे भी कोई भी मां बाप अपने बच्चों की खुशियों का गला नहीं घोंटता है। सब ही को अपने बच्चों की खुशियों के समक्ष झुकना पड़ जाता है। सो अभी तो जैसा उसकी मां चाहती है, वह वही करती रहे। क्षितिज को वह सब कुछ समझा देगी। वह तो समझदार लड़का है। सब कुछ समझ लेगा।

सोचते सोचते नीलू को एक चैन सा आया। दिल को एक तसल्ली मिली तो वह अपने आप ही निश्चिंत हो गई। फिर आस पास के

वातावरण पर एक निगाह डाली। संध्या डूब कर काली हो चुकी थी। किचिन में बर्तनों की खटर पटर के स्वरों से साफ जाहिर था कि उसकी मां शाम का खाना बना रही थी। उसका बड़ा भाई भी अपने कमरे में अपने अध्ययन में जैसे लीन था। सारे घर में चुप्पी भी जैसे खामोशी का सहारा लेकर चारों तरफ अपना अधिकार जमा बैठी थी। बाहर आकाश में चन्द्रमा निकल आया था, और नीलू के कमरे की खिड़की से उसकी मद्धिम किरणें जैसे चुपचाप कमरे के भीतर झांकने का प्रयास करने लगी थीं। घर के अन्दर और बाहर जैसे सभी कोई अपने अपने कामों में व्यस्त हो चुके थे, मगर नीलू अभी तक बिस्तर पर बेजान सी पड़ी हुई अपने प्रथम प्यार के मार्गो के मध्य आने वाली कठिनाइयों के बारे में सोच रही थी। उन रास्तों के बारे में कि जिन पर अपनी मर्जी से चलने का परिणाम वह जान चुकी थी। यूं भी मां की कटु और दिल की भावनाओं को छीलने वाली बातें तथा समाज की हर समय नोंक के समान छिदने वाली नज़रों को वह पिछले कई दिनों से सहन करती आ रही थी। सन्देह तो उसे पहले ही से था, और आज वास्तविकता को वह खुद अपनी आंखों से देख भी चुकी थी। अपने प्यार के प्रति हर तरफ से मिली प्रतिक्रिया की पहली झलक वह देख ही चुकी थी। ऐसी झलक कि जिसके वास्तविक अंजाम की कल्पना बहुत पहले ही से की जा सकती है।

फिर जब रात और भी अधिक गहरी हुई तो कुछ देर के पश्चात रात्रि का चन्द्रमा भी पूरी तरह से निकल कर मसीही बस्ती के सूने इलाके में वृक्षों के पीछे से झांकने लगा। उसकी कमसिन रश्मियां वृक्षों की घनी पत्तियों के पीछे से चुपचाप जाली बुनने लगीं। नीलू अभी तक अपने कमरे के एकान्त में मौन बिस्तर पर पड़ी हुई थी। चुप। बिल्कुल खामोश। शायद बहुत ही उदास भी। अपने कमरे में उसने अभी बत्ती भी नहीं जलाई थी। फिर जलाने से लाभ भी क्या होना था। जब दिल में ही अंधकार हो तो दुनियां का कोई भी उजियाला अपना प्रभाव नहीं दिखा सकता है। इस बीच कितनी देर से वह अपने कमरे में ही थी, उसे समय का भी ज्ञान नहीं था। आज वह मां के पास किचिन में भी नहीं गई थी। फिर जाती भी कैसे। घर में घुसते ही तो मां की कटु बातों ने उसका सारा मूंड खराब कर दिया था। उसकी मां भी उसकी हरेक आदत को अच्छी तरह से जानती थी शायद इसी कारण उसने नीलू की छोटी बहन से शाम के खाने के लिये खबर करवाई थी। मगर नीलू ने भी न खाने के लिये मना करवा दिया

था। सिर के दर्द का बहाना और बेमतलब बोला गया झूठ शायद ऐसे ही समय पर काम आया करता है। मन खराब था ही, वह खाना क्या खाती।

नीलू अभी तक लेटी हुई थी। अपने कमरे की छत को यूं ही अंधकार में निहारे जा रही थी। कभी कभी खिड़की से ठन्डी ठन्डी हवा की कोई हल्की सी लहरों का रेला सा आ जाता तो वह फिर नीलू के कोमल गालों पर सुइंया सी चुभाने लगता। इसके साथ ही कमरे की खिड़की से आने वाली चन्द्रमा की कई एक किरणें नीलू के उदास दिल का हाल पूछने को आ जाती तो पल भर में ही सारा उदास वातावरण जैसे मन ही मन और भी कुम्लाह जाता था।

कई दिन गुज़र गये। कई हफ्ते। महीने होने को आये। इस बीच नीलू एक बार भी क्षितिज से नहीं मिल सकी। नहीं मिल सकी तो वह निराश होने लगी। अपने घर के दरवाजे पर खड़ी खड़ी वह एक आस से क्षितिज को चुपचाप निहारती रहती। बहुत कुछ आशा भी करती। मगर उसके मन में अब न जाने कौन सा भय समा गया था कि वह अब खुद ही महसूस करने लगी थी कि जैसे वह अपने जीवन की कोई बड़ी भूल करने जा रही है। उसे लगने लगा था कि जैसे क्षितिज भी अब उसमें कम रूचि लेने लगा है। वह जैसे उससे दूर हटता जा रहा है। उसका क्षितिज पराया होता जा रहा है। जब भी वह उसे देखती, वह उसकी आंखों में पढ़ती तो बहुत कुछ महसूस भी करती। वैसे भी दो प्रेमियों के लिये आंखों की मूक भाषा बहुत कुछ अहमियत रखती है। नीलू को जब ऐसा महसूस होने लगा तो उसके दिल पर जैसे छाले पड़ने लगे। उम्मीदों पर निराशाओं और विवशताओं के लाल अंगारे लोट गये। मन के अन्दर बसे हुये सारे सपने बिखरने लगे। ये सच था कि समय और मजबूरियों के कारण क्षितिज से नहीं मिल सकी थी, परन्तु दिल की हसरतों का तो वही तकाजा था। वही चाहतें थीं। मन की वही भावनायें थीं। न जाने क्यों जीवन में पहली बार बेमतलब ही उसको क्षितिज की वफाओं पर शक होने लगा। मगर यूं चुपचाप ऐसे सोचते रहने से क्या हो जाना था। उसने खुद ही क्षितिज से मिलने का इरादा कर लिया। मगर मिलने से पहले उसने मन में विचारा कि, ये वह क्या करने जा रही है। ये उसको हो क्या गया है। कहां वह अपनी आदत के अनुसार क्षितिज को मूर्ख बनाने चली थी। उसके साथ प्यार का नाटक करके वह उसको तड़पते हुये देखना चाहती थी। हर लड़के के समान वह क्षितिज को भी मूर्ख बना देना चाहती थी। मगर ये क्या हुआ कि वह तो खुद ही मूर्ख बन गई है। क्षितिज के साथ प्यार का नाटक करने के प्रयत्न में कहीं वह उसको सचमुच ही तो प्यार नहीं करने लगी है। कहीं उसका दिल क्षितिज को मन ही मन चाहने तो नहीं लगा है। नीलू ने अपने बारे में ऐसा सोचा तो वह एक असमंजस में पड़ गई। किंकर्तव्यविमूढ़ सी बनी वह क्षितिज और स्वयं के लिये सोचने लगी। ये सच था कि वैसे भी उसने आज तक अपने सम्पर्क में आये हरेक लड़के को मूर्ख ही बनाया था। उनके साथ प्यार का नाटक खेल कर, फिर बाद में उनके मार्ग से दूर हट कर उनको तड़पाना ही जैसे उसकी आदत का खेल बन गया था। ऐसे न जाने कितने ही लड़कों को वह बना चुकी थी। ये शायद उसका

व्यक्तिगत शौक था या फिर उसकी आदत की कोई कमजोरी; वह खुद भी नहीं जानती थी। पहले वह किसी भी लड़के से अपने प्रेम का नाटक करती। फिर जब वह लड़का उसके प्रेम में दीवाना हो जाता तो फिर वह उसे किसी भी खुबसूरत मोड़ पर लाकर छोड़ देती। तब जब वह उसके प्रेम में परेशान होने लगता था तो फिर उसकी दीवानगी और उसके प्यार में उसकी उजड़ी दशा को देख देख कर वह प्रसन्न होती थी। उसे देख कर हंसा करती थी। अभी तक वह ऐसा ही करती आई थी। न जाने कितने ही लड़कों के साथ उसने ऐसा ही किया था। इससे पहले जब वह सांवतवाड़ी के बाहर दूसरे शहर में थी तब वहां भी उसने ऐसा ही किया था। यहां सांवतवाड़ी में आने के पश्चात भी वह यही करने जा रही थी। यहां पर उसका पहला शिकार क्षितिज ही था। मगर क्षितिज के शिकार के प्रयत्न में वह खुद ही उसकी शिकार हो जायेगी, ऐसा उसने नहीं सोचा था। यही उसको बार बार परेशान करने लगा था कि, कहीं वह क्षितिज को सचमुच ही तो प्यार नहीं करने लगी है। उसके दिल के किसी कोने से कोई ध्वनि सी उठती तो उस ध्वनि के स्वरों से एक आवाज़ सी उसको सुनाई देने लगती कि, क्षितिज के साथ किया गया उसका प्यार का ये नाटक कहीं बहुत महंगा न पड़ जाये।

नीलू के इन्हीं विचारों और सोचों के उहापोह में कुछेक दिन और भाग गये। रविवार का दिन था। सुबह की धूप धीरे धीरे मजबूत होकर ऊपर चढ़ने लगी थी। क्षितिज अपने घर के बाहर खड़ा हुआ सांवतवाड़ी की इस छोटी सी मसीही बस्ती की कंटीले तारों की लगी हुई बाऊंड्री को चुपचाप निहार रहा था। आकाश की खामोश राहों में आवारा बादलों के समूह जैसे कहीं भी अपने बसेरे के ख्याल से अपना पड़ाव डालने के लिये कोई स्थान ढूंढ़ लेना चाहते थे। दूर कहीं किसी ईंट के भट्टे की गर्म चिमनियों से निकलता हुआ काला धुंआ धीरे धीरे विलीन होकर वातावरण की हवाओं में मिलता जा रहा था। क्षितिज अभी तक अपनी पूर्व मुद्रा में खड़ा हुआ था। बिल्कुल चुप। खामोश और जैसे सारी दुनियां जहान की किसी भी बात से बेखबर। वह अभी भी आकाश में उड़ते हुये आवारा बादलों को यूं ही ताके जा रहा था। तभी अचानक ही चर्च की घंटियों ने अपनी झंकार छोड़ी तो खामोश और चुप खड़े हुये क्षितिज के विचारों का ध्यान भी भंग हो गया। मधुर चर्च की घंटियों के शांति से भरे किसी सन्देश ने उसके कानों में जैसे कोई बात कही तो उसको सुनते ही उसका वीरान

और मौन दिल भी वातावरण के इस गुंजन के साथ जैसे पुलकित होने लगा। दिल के अन्दर एक अजीब और अनकही खुशी की लहरों ने उसको किसी आने वाली अनुभूति का एहसास कराया तो पल भर में ही उसके मन के अन्दर का बसा हुआ सूनापन भाग गया।

चर्च की सर्विस अभी आरंभ नहीं हुई थी लेकिन उसकी पहली घंटी की झंकारों ने सारे खामोश वातावरण में परमेश्वर की आराधना की खुशी में अपना गीत गाना आरंभ कर दिया था। मसीही बस्ती के लोग अब परमेश्वर की स्तुति में अपने घरों से निकल कर चर्च की बनी इमारत की ओर जाने लगे थे। अधिकतर सब ही के हाथों में परमेश्वर के वचन के रूप में बाइबल थी। साथ ही चेहरे पर एक खुशी और जीवन की भरपूर शान्ति के साथ दिल में समाया हुआ एक ऐसा चैन कि जो केवल उन्हें इस आराधना में सम्मिलित होने पर ही मिल सकता था। मगर लोगों की भीड़ में अपनी किस्मत और अपने किये गये कामों का मारा एक जन ऐसा भी था कि जिसके मन का चैन और चेहरे की आभा नीलू की प्यार से भरी केवल दो चार बातें ही छीन कर ले गई थीं। क्षितिज जो कि इतनी देर से अपने घर के बाहर खड़ा हुआ नीलू के साथ पिछले गुज़ारे हुये दिनों के एक एक पलों को बार बार दोहरा रहा था। ये सच था कि नीलू के प्यार में मिली सोचने और अपने आप में खोने जैसी भेंटों के कारण ही वह आज तक न जाने ऐसी कितनी ही चर्च की सर्विसों को नकारता आया था, उसे तो याद भी नहीं था। कच्ची प्रेमपथ की अपनी बनाई हुई राहों पर बगैर सोचे समझे भागते रहने के कारण वह तो चर्च जाना जैसे बिल्कुल ही भूल गया था। कितना अधिक वह अपने परमेश्वर से दूर हटता जा रहा था। वह जानता था कि एक मसीही व्यक्ति होकर ये उसके लिये कितनी अधिक लज्जा की बात हो सकती थी, अनुमान मात्र से ही कभी कभी वह बहुत कुछ सोचने पर विवश भी हो जाता था। मगर नीलू के प्यार में मिले अनछुये उपहार के कारण उसका इस प्रकार से सोचना और न सोचना फिर जैसे कोई भी अर्थ नहीं रखता था। वह तो केवल इतना ही भर महसूस करता था कि केवल प्यार के चन्देक लम्हों की प्राप्ति की ललक में वह अपने जीवन की समस्त खुशियां बरबाद कर देना चाहता है, और इसके लिये उसके पास गंभीरता से सोचने के लिये कोई वक्त भी नहीं था। शायद इसी लिये कहा गया है कि प्यार और दीवानगी ; जब भी एक साथ मिल जाते हैं तो कहीं न कहीं मनुष्य के जीवन में ऐसा अवश्य घटित हो जाता है कि जिसके चर्चे जमाने

में फिर एक अफ़साना बन कर फैलने लगते हैं।

मसीही बस्ती के अधिकतर लोग अपने प्रभु परमेश्वर की इबादत के ध्येय से चर्च की इमारत की तरफ जा चुके थे। क्षितिज के बूढ़े मां बाप भी बगैर उससे कुछ भी कहे सुने चुपचाप इबादत के लिये घर से निकल गये थे। उन्होंने उससे कुछ भी नहीं कहा सुना था। विशेष कर चर्च की इबादत में जाने के लिये। जब कि एक समय था कि वे प्रायः ही उसे चर्च जाने के लिये कहते रहते थे। उनके बहुत कहने और सुनने के पश्चात वह कभी कभार चला भी जाता था। मगर यूं बार बार केवल उनके कहने पर ही यदि वह जाये तो ऐसा कब तक चल सकता था। मनुष्य के अन्दर उसकी ख़ुद की भी तो इच्छाशक्ति होनी चाहिये। विशेषकर अपने ईश्वर की बन्दगी और उपासना के लिये। शायद इसी कारण अब उन्होंने अपने पुत्र से कहना बन्द कर दिया था, और परमेश्वर की इबादत व उसका आदर सम्मान उसकी ही इच्छा पर छोड़ दिया था। क्षितिज ख़ुद भी जानता था कि जब भी उसके माता पिता उससे चर्च जाने के लिये अधिक ज़ोर दिया करते थे तो वह उनसे बेमतलब ही बहस आदि करने लगता था, और फिर मिशन में बैठे हुये तमाम प्रबन्धक वर्ग के लोगों में ख़ामियां और कमजोरियां ढूंढ़ ढूंढ़ कर उन्हें बताने लगता था।

क्षितिज को अपने विचारों में खड़े खड़े इतनी अधिक देर हो चुकी थी कि चर्च की दूसरी घंटिया भी शोर मचा कर शान्त हो गई थी। जाने वाले लोग अपने परमेश्वर की आराधना और उसके सम्मान में सिर झुकाने चले भी गये थे। चर्च की सर्विस भी न जाने कब की आरंभ हो चुकी थी। लेकिन जैसे अपनी किस्मत और मुकद्दर का मारा क्षितिज अपने स्थान से एक इंच भी नहीं हट सका था। वह वैसा ही अपनी पूर्व मुद्रा में खड़ा हुआ दूर कहीं हरे भरे खेतों की लहलहाती बहारों को निहारता रहा। ईंट के भट्टे की चिमनियों से अब फिर से धुंआ उठने लगा था। शायद वहां पर काम करने वालों ने उसकी गर्म भट्टियों में फिर से कोयला डालना आरंभ कर दिया था। हवायें आज कुछ तेज थीं, इसीलिये चिमनियों से उठता हुआ धुंआ शीघ्र ही उनके प्रभाव से उड़ता हुआ आसमान के वातावरण में लुप्त हो जाता था। सर्दी के दिन थे। जनवरी का माह इस कारण ज़रा सी हवा की तीव्रता पर गालों पर जैसे सुइयां सी चुभने लगती थीं।

क्षितिज सारे जमाने और अपने आस पास के माहौल से बिल्कुल

ही बेख़बर फिर से भट्टे की चिमनी से उठते हुये धुंये को देखने लगा। देखने पर उसे लगा कि ऐसा ही कोई धुंआ जैसे उसके दिल के किनारों को फाड़ कर, उसकी भावनाओं को कुरेदता हुआ निकलने लगा है। ऐसा क्यों हो रहा था ? क्यों उसकी आस्थाओं को भूनता हुआ ये धुंआ उसके मन की सीमाओं को लांघ कर बाहर आ रहा था ? उसके दिल के भीतर ऐसी कौन सी सुलगती हुई भावनायें थीं कि जिनके बारे में उसके अलावा कोई भी कुछ नहीं जानता था।

" क्षितिज।"

अचानक ही क्षितिज के कानों से अपने नाम को संबोधित करता हुआ जाना पहचाना स्वर टकराया तो वह सहसा ही चौंक गया। इस प्रकार कि जैसे किसी ने उसके कानों में मीठा मीठा शहद घोल दिया हो। उसने तुरन्त ही पलट कर पीछे देखा तो उसके पीछे नीलू खड़ी थी। चुप और गंभीर ख़ामोश मुद्रा में, अपने सफेद सलवार सूट को पहने हुये। उसके हाथों में बाइबल थी, जो इस बात का सूचक थी कि वह चर्च जाने के लिये बाहर निकली थी।

" तुम ? " नीलू को इतने दिनों के पश्चात अपने पास आया देख कर क्षितिज के मुख से अचानक ही निकल गया तो नीलू बोली कि,

" हां, लेकिन मुझको यूं देख कर घबरा से कैसे गये ? "

" घबरा तो नहीं गया, हां चौंक अवश्य ही गया था।"

" क्यों ? " नीलू ने पूछा।

" तुमको इतनी स्वतन्त्रता से बिना भय और बेफिक्री के मेरे पास आया हुआ देख कर ? "

" तो तुम क्या समझते हो कि मेरी क्या आजादी छिन गई है ? "

" हां। कम से कम मेरी बज़ह से तो तुम्हारे पैरों में ताले डाल दिये गये हैं। जानती हो कि सारी मसीही बस्ती में लोग क्या क्या कहने लगे हैं, तुम्हारे और मेरे बारे में ? " क्षितिज ने गंभीरता से कहा तो नीलू ने उसे उत्तर दिया। वह बोली कि,

" लोगों की छोड़ो। मुझे उनके विचारों के बारे में पूरा अनुमान है। मगर तुम शायद भूल में हो। मेरे लिये कोई भी पावन्दी नहीं लगाई गई है। मैं ही तुम से ख़ुद मिलने नहीं आई थी।"

" नहीं मिलने आई थी। मतलब क्या है तुम्हारा ? " क्षितिज ने आश्चर्य से

पूछा।

" क्यों ? क्या मैं इसका कारण जान सकता हूं।"

" क्योंकि मैंने उड़ना सीखा है, बंधना नहीं।" नीलू ने तपाक से कहा तो क्षितिज की आंखों की पुतलियां सहज ही फैल गईं। वह उसको कुछेक पलों तक गंभीरता से ताकता रहा। फिर जैसे कुछ सोच कर वह उसकी बात पर अविश्वास करता हुआ बोला कि,

" बड़ी अजीब बात है कि, जिसका जीवन ही खुदा ने किसी से बंधकर जीने के लिये बनाया हो, वह लापरवाही से मौसमी हवाओं में उड़ने का ख्वाब रचाये। कब तक उड़ती रहोगी इस तरह से। आखिरकार कभी न कभी, किसी न किसी से तो तुम्हें बंधना ही होगा ? "

" मुझे इसकी कोई भी परवाह नहीं है। कल क्या था। और आने वाले कल में क्या होगा। मैं ये कुछ भी नहीं जानती हूं। मैं तो वर्तमान में विश्वास करती हूं।"

नीलू ने बड़े ही आत्म विश्वास के साथ ये शब्द कहे तो क्षितिज का आश्चर्य के साथ मुंह खुला का खुला ही रह गया। वह बड़ी देर तक उसकी आंखों में वृक्षों की उन डगमगाती और हिलती हुई परछाइयों के प्रतिबिम्बों को देखता रहा जो कि हवाओं के कारण स्थिर नहीं रह पा रही थीं। तब आखिर में वह बड़े ही गंभीर स्वरों के साथ नीलू से बोला,

" इसका मतलब कि तुम्हारे मेरे साथ किये गये वे प्यार के सारे वादे ? वह ढेर सारी कसमें ? तुम्हारा मेरे दिल में जमा किया गया एक विश्वास और अभी दूर क्यों जाओ ; तीन हफ्ते पहले ही बाई पास की उस सूनी पहाड़ी टीले पर तुम्हारा वह मेरे प्रति किया गया अपना संकल्प ..... इतना जल्दी बदल गई.....? "

" समझ लो कि सब एक सपना थीं। आंखें बन्द थीं तो सब कुछ अपना था। आंखें खुलीं और सपना टूटा और सब कुछ समाप्त।" ये कह कर नीलू हल्के से मुस्कराने लगी तो फिर भी क्षितिज को उस पर विश्वास नहीं हुआ। वह फिर से नीलू से उसकी आंखों में झांकता हुआ बोला कि,

" नीलू, एक बार मेरी आंखों में देखो, और फिर कहो कि सचमुच ये सब सपना था।"

" हां, ये सब सपना था।"

" सच कह रही हो तुम। तुम्हारे हाथों में बाइबल है ? " क्षितिज ने फिर

पूछा तो नीलू बोली,
" बाइबल को हमारे और अपने बीच में क्यों लाते हो।"
" इसलिये कि दो प्यार करने वालों के मध्य परमेश्वर का वचन ही एक तीसरे बजूद के रूप में साक्षी होता है।"
" !! " नीलू क्षितिज की बात का जब कोई उत्तर नहीं दे सकी तो उसने आगे कहा। वह बोला कि,
" नीलू कह दो कि तुमने जो कहा है, वह एक मजाक था।"

क्षितिज के कहने पर नीलू ने पहले तो उसे एक बार देखा। फिर सोचा। तब बड़ी देर के पश्चात गंभीर स्वरों में वह क्षितिज से बोली कि,
" क्षितिज, मैं कभी भी नहीं सोचती थी कि तुम इन सब बातों को इतनी गंभीरता से लोगे। सोच लेना कि नीलू ने तुम से कभी भी कोई प्यार नहीं किया था। उसने सचमुच ही तुम से कोई मजाक किया था।"
" नीलू ....? " क्षितिज की चीख ने पल भर में ही सारे वातावरण का जैसे गला घोंट दिया।
" यूं चिल्लाओ मत। दुनियां में केवल एक ही नीलू और क्षितिज नहीं हैं। कदम कदम पर तुमको हर रोज़ एक से बढ़ कर एक नीलू मिलेंगी। चाहे किसी को भी पसन्द कर सकते हो। ज़िन्दगी के वे बसेरे जिनमें मनुष्य अपने जीवन साथी के साथ रह कर अपनी उम्र का एक एक पल ख़ुशियों के साथ गुजारने का सपना सजाता है, दिल और आत्मा के चुनाव पर निर्भर हुआ करते हैं। इस सच्चाई को हो सके तो ग्रहण करने की कोशिश करना। मैं चर्च को चलती हूं। गुडबाय।"

क्षितिज अपने आप में तड़प कर ही रह गया। नीलू के इस ब्यान पर उसके दिल में आया कि वह नीलू को पकड़ कर उसकी जुबान ही काट डाले। मगर नहीं, अपनी मसीहियत की शिक्षा कि 'बदला लेना किसी भी मनुष्य का काम नहीं है' सोच कर वह अपनी बिगड़ी हुई भावनाओं को दबाकर ही रह गया। वह जानता था कि नीलू ने ही ख़ुद उसको कभी कोई सपना दिखाया था। वह उसके दिल की कोमल और अनछुई भावनाओं का ऐसा पुष्प थी कि जिसे अब कुम्हलाते देर भी नहीं लगी थी। वह तो सोचता था कि नीलू उसका प्यार ही नहीं बल्कि उसका जीवन थी। सब ही कुछ तो उसने उसके ऊपर निर्भर कर रखा था। उसने उसके साथ सच्चे और पवित्र हृदय से प्रेम का संसार सजाया था। एक ऐसा प्यार जो नाटक नहीं बल्कि एक विश्वास था। वह तो उसके साथ प्यार की इन राहों में चलता हुआ

इतना दूर पहुंच चुका था कि वह नीलू को अपने शरीर का कोई ऐसा अंग समझने लगा था कि जिसे कभी भी काट कर अलग नहीं किया जा सकता है। नीलू उसका अपना जीवन थी। अपना संसार। संसार की समस्त खुशियां। खुशियों के गीत। गीतों का उपहार। फिर ऐसी दशा में उसका प्रेमी हृदय किस प्रकार अपने इस प्यार का कोई भी अनिष्ट सोच सकता था। ऐसा तो वह कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था।

नीलू जा चुकी थी। जा चुकी थी, मगर सारे वातावरण में अपने इस उपेक्षित व्यवहार का प्रभाव भी छोड़ गई थी। क्षितिज बड़ी देर तक वहीं खड़ा रहा। खड़ा खड़ा सोचता रहा। विचारता रहा। सोचता रहा, अपने खुद के बारे में। नीलू के बारे में। अपने और नीलू के प्यार के बारे में। ऐसा प्यार_____प्यार का ऐसा खेल कि जो कि पिछले कितने ही दिनों से खेला जा रहा था। परन्तु जब ये खेल समाप्त हुआ तो किसी के लिये व्यंग साबित हुआ था तो किसी के लिये उसके दिल का दर्द बन गया था। ऐसा दर्द कि जो कि अब आसानी के साथ समाप्त भी नहीं हो सकेगा। क्षितिज जो कि अपने प्यार में फूलों को बटोरने की इच्छा रख कर चला था, मगर वक्त की एक ही करवट ने उसकी झोली में जीवन भर के लिये उसके बेवफा प्यार के कांटे भर दिये थे।

नीलू चर्च में इबादत के लिये जा चुकी थी। कितनी आश्चर्य की बात थी कि वह उस परमेश्वर की इबादत करने गई थी कि जिसने प्यार की खातिर अपना पवित्र लहू बहाया था, मगर नीलू ने किसी के प्यार के अरमानों का गला कितनी बेरहमी से काट डाला था, इस तथ्य को केवल क्षितिज जानता था और उसका टूटा, ज़ख्मी, शीशे के समान चकनाचूर वह दिल कि जहां पर अब नीलू के बेवफा प्यार के अफसानों के सिवा अब कुछ और बाकी नहीं रहा था।

क्षितिज का संसार उजड़ गया। प्यार लुट गया तो उसको सांवतवाड़ी की सारी मसीही बस्ती ही वीरान और सुनसान कब्रिस्थान जैसी नज़र आने लगी। अपने पराये दिखने लगे। दिल में अब न कोई खुशी बाकी रही थी और ना ही जीवन का कोई सपना ही। उसे अब ना तो घर में ही चैन था और ना बाहर ही कहीं शान्ति। कई कई दिनों तक वह कालेज ही नहीं गया। चेहरा उसका फीका और उदास रहने लगा। हर समय उसको अपनी नीलू का अचानक से परिवर्तित व्यवहार और एक प्रकार से

बेवफा प्यार सताने लगा। नीलू का उसके प्रति बदला हुआ व्यवहार तथा स्पष्टवादिता का प्रभाव ऐसा हुआ कि आठ दस दिनों के अन्तर में ही क्षितिज का तो जैसे सारा हुलिया ही बदल गया। कई कई दिनों तक वह शेव ही नहीं करता। चेहरे पर झाड़ी समान दाढ़ी बढ़ने लगी। होठ सूख़ने लगे। घर से यदि वह कहीं बाहर निकल जाता तो फिर उसके लौटने का कोई समय ही नहीं होता। समय असमय वह ख़ाना ख़ाता। यदि कहीं वह बैठ गया तो वहां से उठने का उसका कोई समय ही नहीं होता। प्यार में उसे ज़रा सी ठोकर क्या लगी कि वह दीवानों समान अपनों से ही अलगाव रखने लगा। वह भूल गया कि वह एक मसीही युवक है, और उसका इस प्रकार से दीवानगी की तरह बनाया हुआ आचार व्यवहार कोई शोभा नहीं देता है। मगर उसको अपने सिवा जैसे किसी और बात की चिन्ता ही नहीं थी। उसने ना तो अपना रवैया ही बदला और ना ही दिनचर्या में कोई भी बदलाव। वह जैसा था वैसा ही बना रहा।

फिर उसके इस प्रकार से बदले हुये व्यवहार और दिनचर्या का प्रभाव ऐसा हुआ कि मसीही बस्ती के लोग भी उसको यदाकदा टोकने लगे। जब लोगों ने उसके लिये उसके बूढ़े मां बाप से कहा तो उन्हें भी चिन्ता हो गई। उसका बदला हुआ हुलिया और चेहरे का ख़ोयापन देख कर वे ये तो समझ गये कि लड़का कहीं न कहीं भटकने लगा है। मगर उसके भटकने का कारण क्या हो सकता है, इस बात को वे भी नहीं जान सके। सालाना परीक्षायें बिल्कुल ही पास आती जा रहीं थीं। जनवरी का माह भी समाप्त हो चला था। क्षितिज के माता पिता को अपने इकलौते बेटे पर पूरी आशायें थीं। वही एक प्रकार से उनके बुढ़ापे का सहारा था। मगर क्षितिज का बदला हुआ रूप देख कर उनको भी अपने बेटे और अपने बुढ़ापे के दिनों के लिये चिन्ता होने लगी। जब मां से नहीं रहा गया तो उसने अपने पुत्र को एक दिन गौर से निहारा। निहारा तो उसकी ममता तो उमड़ी ही, साथ ही दिल एक परेशानी और चिन्ताओं से भर गया। उन्हें तब सोचते देर नहीं लगी कि अवश्य ही उनका बेटा कहीं भटक गया है। वे समझ गई कि क्षितिज को कोई मानसिक रोग लगने लगा। ऐसा रोग जो कि इस उम्र के बच्चों को बड़ा शीघ्र ही पकड़ लेता है। शारीरिक रोग का इलाज तो फिर भी संभव है, मगर मानसिक रोग का वह क्या करें। उनका चिन्तित होना बहुत स्वभाविक ही था। तुरन्त ही उनके मस्तिष्क के तारों ने काम करना आरंभ किया। वे सोचने लगीं कि लड़के के

रोग का कारण कौन सा होना चाहिये। फिर जब अधिक सोचा तो उनक बूढ़ा और थका हुआ दिमाग तुरन्त ही नीलू की ओर केन्द्रित हो गया। उन्हें ध्यान आया कि नीलू पहले तो अक्सर ही उनके घर आया करती थी। इतना अधिक कि जब देखो वह उनके ही घर में बनी रहती थी। मगर अब वह बिल्कुल ही नहीं आ रही है। उन्होंने सोचा कि हो न हो उनके बेटे के रोग का कारण उस ही तरफ से आरंभ होता है। सो उन्होंने पहले तो क्षितिज से ही इस बारे में पूछना चाहा, मगर बाद में ये सोच कर उन्होंने अपना विचार बदल दिया कि जब लड़के ने अभी कुछ नहीं बताया है तो वह नीलू के बारे में कैसे बता सकता है। बेहतर होगा कि वह इस बारे में खुद नीलू से ही पूछें। तब एक दिन उन्होंने अवसर मिलने पर नीलू से इसका ज़िक्र किया तो उसने भी उनको निर्लिप्त भाव से उत्तर दे दिया,

' मुझे क्या मालुम है कि उसे क्या हो गया है। पहले जब वह मुझसे बात करता था तो मैं भी करती थी। लेकिन अब जब उसने मुझसे खुद ही बात करना बन्द कर दी है तो मैं कौन होती हूं उसके पीछे पीछे भागने वाली ? '

तब नीलू का उत्तर सुन कर क्षितिज की मां भी अपना सा मुंह लेकर रह गई थीं। हांलाकि नीलू का बोलने का ढंग उन्हें भी अच्छा नहीं लगा था, मगर वे करती भी क्या, कमी तो उनके पुत्र में ही थी सो ऐसा सुनना तो उनकी तकदीर ही थी। आगे से उन्होंने उससे फिर कुछ भी नहीं कहा। केवल क्षितिज के पिता को अवश्य ही सब कुछ बता दिया। वे भी सुन कर गंभीर तो हो गये मगर साथ ही उन्होंने अपने बेटे के लिये प्रार्थना करने पर बल दिया। एक प्रकार से अपनी समस्त चिन्तायें परमेश्वर के ऊपर डालने की सलाह दी। वे चूंकि स्वभाव से पादरी और मसीह यीशु के प्रचारक थे, उनसे यही उम्मीद की जा सकती थी। लेकिन एक दिन उन्होंने भी परिवार की शाम की प्रार्थना के समय क्षितिज को खूब ही समझाया। दुनियां की ऊंच नीच जैसी बातों के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी। उसके लिये बैठ कर काफी देर तक दुआ भी की। इसका असर ये हुआ कि क्षितिज को भी तब एहसास होने लगा कि वह ये क्या करने लगा था। क्या करने जा रहा था। अपने साथ साथ अपने बूढ़े मां बाप को भी दुख देने लगा था। तब वह विवश होकर सामान्य तरीके से रहने का प्रयत्न करने लगा। अपनी बिगड़ती हुई दशा को बदला। ना चाहते हुये भी कालेज जाने लगा, और अपनी पुस्तकों से फिर से ध्यान लगाया।

तब इस प्रकार से क्षितिज का दिन तो कालेज, मित्रों और किताबों के द्वारा कट जाता था परन्तु जैसे ही संध्या का धुंधलका सिमटने लगता और रात्रि की कालिमा सारे वातावरण में स्याही के समान फैल जाती तो फिर क्षितिज का मन भी जैसे काला हो जाता था। उसके दिल में उसकी बरबाद मुहब्बतों के भगोड़े बादलों के काफिले आ आकर जैसे दिल का चैन छीनने वाली दस्तकें देने लगते। तब ऐसी दशा में नीलू के बेमुरव्वत प्यार की हवाओं के लावारिस झोंके उसको सारी सारी रात तक परेशान करते रहते।

दिन इसी प्रकार से सरकते जा रहे थे। परीक्षायें भी पास आ चुकी थीं। अब तक नीलू का क्षितिज के प्रति सारा रवैया बिल्कुल ही बदल चुका था। एक प्रकार से वह जैसे क्षितिज को भूल ही चुकी थी। भूल चुकी थी या फिर जबरन उसे भुलाने का उसने कोई संकल्प कर लिया था। दिल की इस गहरी बात को तो वह भी अच्छी तरह से नहीं जानती थी। मगर इतना अवश्य ही था कि उसके हाव भाव से ये जरूर लगता था कि वह भूल चुकी थी कि उसने भी कभी किसी के दिल में अपनी यादों का कोई दीप जलाया था। कभी किसी से अपनी मुहब्बतों के भाप के समान उड़ कर विलीन होने वाले वादे भी किये थे। उसने जो प्यार की अग्नि जलाई थी, उससे उसकी कोई हानि हुई थी या नहीं, मगर इतना अवश्य ही था क्षितिज के सारे अरमान अपनी संजोई हुई आस्थाओं पर मजबूर मुहब्बत का कफन डाल कर जल चुके थे।

नीलू यूं भी एक स्वछन्द और अल्हड़ विचारों वाली लड़की थी। हरेक दशा में उसने हंसना ही सीखा था। एक प्रकार से उसको लड़कों को परेशान करने में मज़ा ही आता था। वह जब भी सुना करती कि अमुक लड़का उसके कारण परेशान और 'देवदास' बना जाता है तो उसे एक प्रकार से खुशी ही होती थी। लेकिन जब वह क्षितिज के बारे में सुनती तो उसे पहले अच्छा तो लगता, मगर फिर न जाने क्यों एक टीस भी उसके दिल में उठ कर रह जाती थी। उसका भी दिल जैसे तड़पने लगता था। क्षितिज से अलग होकर वह इतना तो समझ गई थी कि चाहे अब तक उसने कितने ही लड़कों को मूर्ख बनाया होगा मगर क्षितिज के चक्कर में वह खुद भी मूर्ख बन चुकी है। जो रोग उसने क्षितिज को लगाया है उसकी जकड़ में वह खुद भी आ चुकी है। लेकिन वह करती भी क्या ? कर भी क्या सकती थी ? उसने क्षितिज के प्रति जो भी कुछ किया था वह कोई

केवल अपनी ही ओर से तो नहीं किया था। वह जानती है कि एक ओर उसका स्वंय का अपना प्यार और अपनी चाहत थी तो दूसरी तरफ उसकी मां का निर्देश और उनका कहा मानना भी उसका कोई कर्तव्य था। जब उसकी मां और परिवार वाले नहीं चाहते हैं कि वह क्षितिज से अब और भविष्य में किसी भी तरह का कोई भी सम्बन्ध रखे तो फिर क्षितिज को धोखे में रखे रहने से तो अच्छा है कि एक बार वह उसको बेवफाई का विष देकर उसके प्यार की लालसाओं को सदा के लिये मार डाले। अपना प्यार या फर्ज ? वह किसको चुनती ? इसलिये फिलहाल उसने अपनी मां और परिवार को प्रमुखता देते हुये अपने प्यार की बलि चढ़ाने का निश्चय कर लिया था। वह ये भी जानती है कि क्षितिज तो एक लड़का है। आसानी से ये सदमा बर्दाश्त भी कर लेगा। केवल उससे शिकायतें ही तो करेगा, सो वह उसकी शिकायतें सुनती भी रहेगी। मनुष्य की संवारी हुई प्यार की आस्थाओं का केवल दो ही तरह का हश्र हुआ करता है। मजबूरियों के कफन को समेट कर या तो वे धूं धूं करके जला करती हैं , या फिर रंगत भरे चमन में फूलों की खुशबू बन कर सब को अपनी महक से भर दिया करती हैं। क्या हुआ जो उसकी भी चाहतों भरी आस्थायें न चाहते हुये भी सामाजिक रीतियों के कब्रिस्थान में दफन हो गईं। इस संसार में न जाने कितने ही लोग हैं जो कि बगैर प्यार के अपनी ज़िन्दगी की उम्र पूरी किया करते हैं। यदि उसके भाग्य में ऐसा ही कुछ है तो वह भी ये सब करने का प्रयत्न करेगी।

सालाना परीक्षायें समाप्त होकर कालेज बन्द हो गये। क्षितिज ने अपनी आर्थिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये फिरोजपुर की एक दवाइयां बनाने वाली कम्पनी में नौकरी कर ली। अपनी परीक्षा के केवल बीस दिनों के पश्चात ही वह अपने शरीर पर नीलू के प्यार की बेवफा ठोकर का एक इल्जाम लगा कर और अपने दिल से उसकी स्मृतियों के कफन का बोझ बांधे हुये वह एक दिन फिरोजपुर चला गया। हांलाकि वह अपनी शिक्षा आगे तक लागू रखना चाहता था। मगर नार्थ इंडिया सिनड की इलाहाबाद की बजीफा कमेटी ने उसे आगे की पढ़ाई के लिये कोई भी सहायता देने से इनकार कर दिया था। आगे की पढ़ाई के लिये मिलने वाले बजीफा के लिये उसने नीलू के पिता से व्यक्तिगत बात भी की थी। क्योंकि वह जानता था कि वे बजीफा कमेटी में एक अच्छे पद पर मिशन में कार्यरत् थे। इसीलिये नीलू को भी बजीफा मिल गया था, और वह अपनी आगे डिग्री कालेज की पढ़ाई के लिये तैयारी करने लगी थी। सो नीलू के पिता से व्यक्तिगत बात करने के दौरान हांलाकि उन्होंने क्षितिज को मना तो नहीं किया था, मगर जिस प्रकार का उन्होंने उसे उत्तर दिया था उससे स्पष्ट पता चलता था कि वे उसके बारे में ज्यादा दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। मगर क्षितिज को आगे की पढ़ाई के लिये बजीफा या श्रृण नहीं मिला था, इसका उसे इतना दुख नहीं था जितना कि मिशन में व्याप्त भ्रष्टाचार और दिन व दिन पनपती हुई स्वार्थी प्रवृत्ति का।

क्षितिज अपने साथ के कितने ही बच्चों को जानता था कि जिनके पिता और मां दोनों ही मिशन में बड़े से बड़े पदों पर कार्य कर रहे थे, और उनकी आय उसके पिता से हर दशा में अधिक थी, मगर फिर भी उन सब ही को बजीफा हर साल मिल जाया करता था। जब कि विदेश से मिलने वाली ये सहायता केवल गरीब ईसाई बच्चों के लिये आया करती थी।

उत्तरी भारत के चर्चों की आर्थिक दशा बिगड़ती जा रही थी। विदेशी सहायता बंद हो गई थी। बजीफा जैसी चीज केवल कुछेक चुने हुये और बड़े बड़े पदों पर बैठे हुये पदाधिकारियों के बच्चों तक ही सीमित हो चुकी थी। इसी कारण क्षितिज को भी उसकी आगे की पढ़ाई के लिये दो टूक उत्तर दे दिया गया था। मिशन का सेवा कार्य, धर्म प्रचार का कार्य तथा जगह जगह पर नियुक्त किये धर्म प्रचार कार्य के पादरियों को मासिक वेतन मिलना बंद हो चुका था। सांबतवाड़ी की सारी मसीही बस्ती अब

चमगादड़ों और अबाबीलों का ठिकाना बनती नज़र आने लगी थी। हरेक जगह एक अजीब ही चुप्पी और मायूसी सी छा गई थी। इसका कारण था कि लोग मिशन की सेवा से हटाये जाने के बाद अब स्थानीय शहरों और बाहर के शहरों में अपना कोई न कोई रोज़ी रोटी कमाने का धंधा करने लगे थे। ये हालत ठीक उस प्रकार से हो गई थी जैसा कि यीशु मसीह के सलीब पर मारे जाने और उनके गाड़े जाने के पश्चात उनके चेले निराश होकर अपना फिर से पुराना कारोबार याद करते हुये गलील के सागर पर मछलियां पकड़ने के लिये चले गये थे। मगर यीशु के चेलों के दिलों में तो फिर भी एक आशा थी कि उनका प्रभु फिर से उनके पास आयेगा, लेकिन यहां मिशन के कामों से बीच अधर में जैसे लटकाये और हटाये हुये लोगों के पास तो अब आशा नाम की कोई भी चीज़ बाकी नहीं रही थी। वे क्या करते और क्या नहीं। खाली पेट तो प्रभु का भजन भी करना असंभव था।

मिशन का कार्य बन्द हुआ तो उसका असर इबादतों में भी पड़ने लगा। रविवार की आराधना में लोगों की भीड़ कम होने लगी। जिन लोगों के हाथों में जो थोड़ी बहुत शक्ति मिशन की ओर से बच रही थी, उन्होंने इस बात का भरपूर लाभ भी उठाया। ऐसे लोग मिशन की ज़मीने, सामान, घर आदि को ही हड़पने और अवैद्य तौर पर बेचने लगे। चर्च सूने हुये तो उनकी भी खरोतफरोख्त होने लगी। बिके हुये चर्चो में जहां कभी इबादत होती थी, वहीं अब मिलीटरी के घोड़े और खच्चर बंधने लगे थे। उनको देखते ही ऐसा प्रतीत होता था कि अब वहां पर खुदा का नहीं बल्कि अक्षरशः शैतानी हरकतों का साम्राज्य स्थापित हो चुका है। जिस मसीही बस्ती में कभी एक शांति और चैन के स्वर सुनते नज़र आते थे, वहीं अब लोग बात बात पर झगड़ने लगते थे। जिस मसीही की भूमि को स्थानीय पुलिस ये नहीं जानती थी कि वह कहां पर है, वहीं अब आये दिन पुलिस के सिपाही दिखने लगे थे। रात में मिशन कम्पाऊंडों में चोरी का होना तो आम बात बन चुकी थी। लोग एक दूसरे की नुक्ताचीनी करते, दूसरों में दोष ढूंढ़ने की कोशिश में लगे रहते, यदि किसी के घर में किसी का कोई शादी ब्याह का रिश्ता लगना होता तो उसे बिना किसी भी बात के तोड़ने की चेष्टा करते____आपस के मध्य का प्यार, सहानुभूति जैसी अच्छी मानवता जैसी समस्त बातें अब समाप्त हो चुकी थीं। श्रृद्धा का कोई नाम और निशान नहीं रहा था।

विदेशी आर्थिक सहायता आनी बंद हो गई तो मिशन के रहे बचे कामों की बागडोर भारतीय मिश्नरियों ने अपने हाथों में ले ली। विदेशी मिश्नरी वापस अपने देश लौट गये। विदेशी मिश्नरियों ने परमेश्वर की इस सेवा का कार्य अचानक ही समाप्त क्यों कर दिया था ? क्यों उन्होंने इस सेवा कार्य के लिये सहायता देनी बन्द कर दी थी ? इस बारे में विभिन्न समुदायों में विभिन्न प्रकार के लोगों के अपने अपने विचार थे। किसी का कहना था कि जो धन उस परमेश्वर की सेवा कार्य के लिये विदेशी मिश्नरियों के द्वारा भारत में भेजा जाता था, उसका अनुचित उपयोग भारतीय मिश्नरी जो कि प्रबन्धक के रूप में विराजमान थे, करने लगे थे। किसी का विचार था कि ये कार्य देश के राजतन्त्र के द्वारा बन्द किया गया था। क्योंकि गैरमसीही समझने लगे थे कि मिश्नरी लालच देकर लोगों को मसीही बनाने लगे थे। मगर जो सबसे अधिक बात लोगों में प्रचलित थी, वह यही थी कि विदेशी मिश्नरी ये खूब अच्छी तरह से समझने लगे थे कि जो पैसा वे परमेश्वर के धमार्थ कार्यों के लिये देते हैं, उसका गलत उपयोग भारतीय मिश्नरी करने लगे हैं। जिस पैसे से गरीब मसीहियों की मदद होनी चाहिये, जिसे सेवा के कार्यों में लगना चाहिये और जिसको गरीब बस्तियों के उत्थान में जाना चाहिये, वही पैसा अमीर ईसाई पदाधिकारियों के परिवारों में उनकी स्वार्थ पूर्त्ति के लिये समाता जा रहा है। परमेश्वर के कार्यों के स्थान पर वे अपना स्वार्थ पूरा कर रहे हैं। ये स्वार्थी धर्माधिकारी अपने स्वार्थों को मसीहियत का जामा पहना कर बखूबी पूरा करते हैं। कोई भी अतिरिक्त धन जो कि मसीही बस्तियों के विस्तार व उत्थान के लिये या फिर किसी भी धर्मार्थ कार्य के लिये स्वीकृत होता था, उससे वे अपने नीलगगन को चूमते हुये महल खड़े करते थे। जितना भी सेवा कार्य यदि हो रहा था तो वह केवल सातवीं कक्षा के कारगुजार ही कर रहे थे। महलों और कोठियों में बैठे हुये पदाधिकारी तो कारों के अतिरिक्त पैदल चलना ही भूल चुके थे। जहां कारगुजार पैदल चला करते थे, वहीं ऐसे पदाधिकारियों को मोटी मखमली कालीन भी खुरदरी महसूस होती थी। कारगुजारों की साइकिलें गर्मी, लू और भरी धूप में गांव गांव भटकती थीं तो पदाधिकारियों की कारें शहरों की सड़कों पर चहलकदमी किया करती थीं।

सचमुच में यदि देखा जाये तो ये था मानव ज़िन्दगी का वह रूप जो बाहर से देखने पर उजली मज़ार के समान सफेद और भीतर से मृत

हड्डियों के कंकाल के सिवा और कुछ भी नहीं था। ईश्वर ने मनुष्य को संसार में भटकी और खोई हुई आत्माओं को बचाने एंव उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने के लिये भेजा है, मगर शैतानी प्रवृत्ति के लोग स्वयं इस धरती के ईश्वर बन कर पाप के संसार की सीमा को लगातार बढ़ाते रहते हैं।

मिशन का काम क्या बन्द हुआ था कि गिरजाघरों और मसीही सभाओं में लोगों का आना ही बंद होता जा रहा था। वे भी जैसे अपनी रोज़ी रोटी ढूढ़ने के प्रयास में रोटी प्रदान करने वाले को ही भूल गये थे। मसीही बस्तियों और चर्च कम्पाउंडों में अब वह भीड़ और चहलपहल ही नहीं दिखाई देती थी जो कि पहले कभी हर समय बनी रहती थी। अपनी ज़िन्दगी से जैसे थके और निराश सेवानिवृत्त प्रचारक, पादरी तथा अन्य मसीही लोगों के चेहरों की गुनगुनाहट और प्रसन्नता ही खो गई थी। हरेक मुखड़ा, खामोश, मूक, दुखी, निराश, बेबस तथा निराश कामनाओं का प्रतिबिम्ब और बेबस जीवन यापन का उदाहरण नज़र आने लगा था। दूर दूर तक कहीं कोई भी जीवन को खींचने वाली किसी भी गाड़ी के पहियों के निशान तक नहीं दिखते थे। मसीहियों के चेहरों पर उनके भविष्य के काले बादलों की परछाइयां स्पष्ट झलकने लगीं थीं।

सेवा का कार्य एक प्रकार से बिल्कुल ही ठप्प कर दिया गया था। केवल मिशन की कुछेक बची बचाई सम्पत्ति के आधार पर ही इस कार्य को केवल धकेला जा रहा था। गिरजाघरों के दान के नाम पर आने वाली रकम भी कम हो गई थी। मसीह का प्रचार करने वाले पादरी तथा प्रचारक लोग कुछेक तो अपने निजी छोटे मोटे धंधों को फिर से करने लगे थे, तो कुछेक ने इधर उधर कोई न कोई छोटी मोटी नौकरी कर ली थी। जो कुछ भी करने में असमर्थ थे। वे केवल निराश हाथ पर हाथ धरे हुये ईश्वर के भरोसे ही बैठ गये थे। इसके अतिरिक्त काफी कुछ तो अपने ऊपर से मसीहियत का लिवास हटाकर फिर से अपने पैत्रिक गांवों में लौट गये थे। सो ये था मसीह की बनी बनाई कलीसिया का वह बिगड़ा और दरिद्र रूप कि जिसका मानो अब कोई भी ना तो रखवाला था, और ना ही कोई पालनहार।

क्षितिज फिरोजपुर चला गया तो उसकी रही बची यादें भी नीलू के दिल से लोप हो गईं। साथ ही उसके जाने के पश्चात वह फिर पूरी तरह से स्वतन्त्र भी हो गई। मन से और अपने भूतपूर्व प्रेमी की नज़रों से भी। जीवन के हरेक दुख को खुशियों का घूंट बना कर पीने वाली नीलू का दिल एक बार भी फिर क्षितिज की उदासियों को महसूस नहीं कर सका। धीरे धीरे तब वह बाद में समय आने पर सामान्य भी हो गई।

समय का पहिया अपनी ही गति से घूमता रहा। दिन धीरे धीरे खिसकते रहे। बढ़ते हुये वक्त का पहिया मनुष्य के किसी भी अतीत के दर्द का सबसे बड़ा इन्जेक्शन होता है। समय अधिक हुआ तो नीलू के दिल से क्षितिज की हरेक याद मृत्यु का लिबास पहन कर अतीत के अंधेरों में खो गई। समय बीतता रहा। तारीखें बदलती रहीं। फिर दिन हफ्तों में, हफ्ते महिनों में बदलते ही चले गये। ग्रीष्मकालीन छुट्टियां समाप्त हो गईं। जुलाई का महिना आया तो कालेज के दरवाजे खुल कर विद्यार्थियों को पुकार उठे। नीलू ने भी अन्य विद्यार्थियों के समान इण्टरमीडिएट की परीक्षा पास करके बी. एस. सी. के प्रथम वर्ष में प्रवेश ले लिया। इस बीच वह क्षितिज के प्यार, विश्वास तथा यादों को भुला कर अपनी मुस्कराती ज़िन्दगी में खुशियों के दीप जलाने में व्यस्त हो गई। वह भूल गई कि कभी उसने अनजाने में या फिर छेड़खानी में ही क्षितिज को अपने प्यार का वास्ता देकर कोई मधुर सपना दिखाया था। उसके साथ झूठे प्यार का कोई नाटक भी खेला था। शायद अब उसे तो ये भी याद नहीं था कि एक दिन उसने खुद क्षितिज के दिल में अपनी चाहतों और हसरतों की कोई ज्योति जलाई थी। एक मसीह लड़के को स्वंय एक मसीही होते हुये अपने प्यार की बाहों में समेटा और फिर उसे अचानक ही दूर छिटकते हुये उसके जीवन का सारा सुख चैन छीन लिया था।

नीलू के दिन इसी प्रकार से अपनी अल्हड़ और लापरवाह ज़िन्दगी की हसीन वादियों में सिमट सिमट कर व्यतीत हो रहे थे। अपने कालेज में वह अब तक एक अल्हड़ और खुशमिजाज छात्रा के रूप में प्रसिद्धि पा चुकी थी। वह अपनी पढ़ाई और अपने कालेज जीवन की दिनचर्या में पूरी तरह से व्यस्त थी ही कि तभी इन दिनों उसे क्षितिज का एक पत्र प्राप्त हुआ। पत्र फिरोजपुर से आया था, और जिसे क्षितिज ने उसको कालेज के पते पर भेजा था। फिर नीलू को जैसे ही पत्र मिला, उसने उसे तुरन्त ही खोल दिया और खोल कर वह उसे पढ़ने लगी,

' नीलू,

आशा है कि ठीक ही होगी, और अब तक तो मुझे भूल भी चुकी होगी। मैं तुम्हें यूं परेशान न करता, परन्तु तुम्हारे साथ की गुजारे हुये दिनों की स्मृतियों का वह दीप जो एक दिन खुद तुम्हीं ने जलाया था, आज भी मेरे हृदय में न जाने क्यों जल रहा है ? न मालुम क्यों ? हांलाकि तुमने मुझसे ऐसा कोई ठोस वायदा तो नहीं किया है, परन्तु फिर भी मुझे तुम्हारी बेवफाई पर विश्वास नहीं है। जब भी मैं तुम्हारे बारे में ख्याल करता हूं तो यही एहसास होता है कि तुमने मेरे साथ कोई भी छल नहीं किया है। अवश्य ही तुम्हारे सामने ऐसी कोई विवशता आ गई होगी कि जिसके कारण तुम चाहकर भी मेरा साथ नहीं दे सकीं। इतना सब होने पर भी मुझे तुम से फिर भी कोई शिकायत नहीं है। तुम जहां भी रहो, सदा खुश रहो। मेरा दिल सदैव ही तुम्हारी खुशियों के लिये परमेश्वर से दुआयें करता रहेगा। अभी फिलहाल सांवतवाड़ी आने का मेरा कोई भी इरादा नहीं है। मैं जहां भी हूं, जैसा भी हूं, जीवित तो हूं ही। शायद इतना ही काफी भी है मेरे लिये ?

क्षितिज '

नीलू ने पत्र पढ़ कर समाप्त किया तो स्वतः ही उसके दिल की गहराइयों में एक टीस सी उतरती चली गई। मन को एक गहरा धक्का सा लग कर रह गया। दिल में कहीं चोट सी लगी। क्षितिज ने आज उसको पत्र लिख कर फिर जैसे उससे अपने उधार में दिये गये किसी प्यार का तकाजा किया था। ऐसा तकाजा कि जिसमें बगैर किसी भी अधिकार के उसको वापस अपनी चीज मांगने का कोई हक था।

नीलू ने ऐसा सोचा तो उसके जिये हुये दिनों की बिखरी हुई कड़ियां एकत्रित होकर श्रृंखला का रूप बन गईं। तब उसने सोचा। गहराई से विचारा। कितने दिन हो गये हैं। लगभग सात माह। काफी दिन हो चुके हैं जब कि उसने क्षितिज के साथ बांधी अपनी प्यार की डोर तोड़ दी थी। तोड़ दी थी, और एक प्रकार से वह तो इस बारे में सोचना ही भूल गई थी। परन्तु, क्षितिज ? वह नहीं भूला है। और शायद अब वह भूलेगा भी नहीं। यदि नहीं भूला, और कहीं वह इसी प्रकार से उसे याद भी करता रहा, तब क्या होगा ? सोचते ही नीलू एकाएक असंमजस में पड़ गई। यदि

किसी दिन क्षितिज ने फिर कभी अपने प्यार का वास्ता दिया, तब वह क्या करेगी ? इस प्रकार के तमाम प्रश्नों से जब नीलू खुद ही कैद हो गई तो वह तुरन्त कोई निर्णय भी नहीं कर सकी। बहुत चाह कर भी वह जब स्वंय को नहीं समझा सकी तो फिर यही सोच कर उसने खुद को समझा लिया कि जब भी ऐसा अवसर आयेगा तब ही वह कोई निर्णय करेगी। अभी से इस बारे में परेशान होने से क्या लाभ। जब समय आयेगा, तभी सब कुछ देखा जायेगा। ऐसा सोचते हुये उसने फिलहाल अपने आपको क्षणिक सन्तोष देने का प्रयास किया, मगर वह ये भी नहीं कर सकी। कदम कदम पर उसको क्षितिज का चेहरा याद आता रहा। क्षण क्षण में क्षितिज के चेहरे की तस्वीर उससे एक ही प्रश्न करती रही। और वह प्रश्न था उसकी बेवफाइयों का। राह चलते हुये किसी का हाथ पकड़े हुये अचानक ही बीच सफर में तन्हा छोड़ देने का। क्षितिज भी मानो उससे बार बार यही प्रश्न कर रहा था। ऐसी ही उसकी कुछ शिकायत थी। यही बातें थीं। नीलू सोचती, तो सोच कर ही रह जाती थी। उसे क्या करना चाहिये और क्या नहीं। क्षितिज को उसके पत्र का क्या उत्तर देना चाहिये। वह इनकार करे या इकरार ?

इसी उहापोह में वह सारे दिन परेशान बनी रही। कालेज में भी उसका मन नहीं लग सका। मन और आत्मा, दोनों ही से वह बेहद खामोश और चुप बनी रही। दिल उदास हो चुका था उसका क्षितिज के पत्र को पढ़ कर। इस प्रकार कि जब मन पर किसी के दर्द की छाया गहरी पड़ने लगी तब उसको जीवन में पहली बार महसूस हुआ कि किसी के साथ खेला हुआ पल भर के प्यार का खेल कितना अधिक मंहगा भी हो सकता है। किसकदर उसकी इस चुहलबाजी का मूल्य बढ़ भी सकता है। आज प्यार की जिस पगडंडी पर वह खड़ी थी, वहां पर आकर वह क्षितिज को ना तो कोई दोष दे सकती थी, और ना ही प्यार करने से रोक सकती थी। ये कैसा संजोग था कि प्यार की ओलम भी न जानने वाले को उसने एक दिन अपने मनोरंजन के लिये प्यार का पहला पाठ पढ़ाया था, और उसी ने उसके दिल पर अपने प्यार की वह बेमिसाल इबारत लिख दी थी कि जिसको ना तो वह मिटा सकती थी, और ना ही अब बार बार पढ़ सकती थी..... '

सोचते सोचते, नीलू का जब दिल अधिक खराब हो गया तो वह किसी से कुछ भी कहे बगैर कालेज छोड़ कर अपने घर की तरफ आने

लगी। आज कितने ही अरसे के पश्चात क्षितिज के मात्र एक छोटे से पत्र ने जैसे फिर उसके दिल में अपने गुज़रे हुये प्यार के दर्द का कोई गीत छेड़ दिया था।

सड़क छोड़ कर नीलू जैसे ही मसीहियों की बस्ती में प्रविष्ट हुई तो उसको सामने से यहूदा दास अपनी कार में आते हुये दिख गया। यहूदा दास.....! मसीही प्रबन्धक समिति व सम्पत्ति का एक ऐसा नाम कि जिसे मसीही समाज में हर कोई जानता होगा। यहूदा दास की शक्ल देखते ही नीलू के मुख का स्वाद अचानक ही खराब हो गया। मन एक अजीब ही प्रकार की ग्लानि से भर गया। वह क्या, मसीही समाज का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो उनके कारनामों से वाकिफ नहीं होगा। अपने पद और अधिकार को लेकर यहूदा दास ने भरपूर अनुचित लाभ उठाया था। ये बात समस्त मिशन में हर जगह फैली हुई थी। यहीं सांवतवाड़ी की मिशन बस्ती में उसकी आलीशान कोठी बनी हुई थी। न जाने कितने ही मिशन के मकानों को वह गैर मसीहियों में बेच चुके थे। यहीं नहीं दूसरे अन्य शहरों में भी उन्होंने मसीही बस्तियों के वृक्ष कटवा कर उन्हें वीरान और सूना कर दिया था। जब से विदेशी सहायता बंद हुई थी और मिशन का प्रबन्ध स्थानीय भारतीय प्रबन्धकों के हाथों में आया था, तब ही से मसीही समाजों के अधिकांशतयः खेत, और अन्य सम्पत्तियों की खरीदफरोख्त होने लगी थी। इस प्रकार कि इस मसीह सेवा के नाम पर 'मसीहा' को फिर से बेचा जाने लगा था। फिर से उसे हर दिन सलीब पर चढ़ाया जा रहा था।

समय बढ़ता रहा। और समय के बढ़ते हुये इस दौर के साथ साथ नार्थ इंडिया सिनड के अधिकतर गिरजाघरों, चर्च कम्पाऊंड एंव मसीही कलीसियाओं पर जैसे विपदाओं के बादल बरसने लगे। लोग परमेश्वर की इबादत तो क्या अपने मसीह ही को भूल गये। भूल गये अपने परमेश्वर को। उसके प्यार और अनुग्रह और उसकी सारी दया को भूल कर वे शैतान की दासता के दास बन गये। इस प्रकार कि वे मसीह यीशु का प्यार व शिक्षा भूल कर बड़े ही धड़ल्ले से शैतानियत के कार्य करने लगे। अधिकतर मसीही कम्पाऊंड वीरान हो गये। मिशन के वे हरे और लहलहाते हुये खेत कि जिनसे गिरजाघरों की कुछ आर्थिक सहायता हो जाती थी, उन्हें मिशन के ही पदाधिकारी मोटी मोटी रकमों में बेचने लगे। कभी सुनने में आता कि अमुक स्थान का पुराना कम्पाउंड बेच दिया गया है, और अब वहां पर आलीशान बाजार बन रहा है। कभी सुनने में आता कि किसी अन्य स्थान का कब्रिस्थान ही बेच दिया गया है, और अब वहां पर आवास विकास कालोनी के घर बन रहे हैं। मसीही सम्पत्ति की ये नीलामी इसकदर बढ़ी कि जिन गिरजाघरों में इबादत नहीं हो सकी उन्हें भी बेच दिया गया, और अब उस स्थान को मिलिटरी के खच्चरों को बांधने के लिये उपयोग में लाया जा रहा है। लालच और अवसरवाद की ये प्रवृत्ति इतनी अधिक प्रबल हुई कि जिसको जैसा भी अवसर मिला वह वैसा ही लाभ लेने लगा। लालची और स्वार्थी प्रवृत्ति के 'यहूदा' मसीह यीशु के गीत गाना छोड़ कर मसीहा को सरेआम बेचने के गीत गाने लगे। मिशन की वह सम्पत्ति जो कि मसीही सेवा के नाम पर विदेशी मिश्नरियों की एक प्रकार से धरोहर थी, उनके विदेश लौटने के पश्चात भारतीय मिश्नरियों के द्वारा सरेबाजार नीलाम होने लगी थी। ये सिलसिला यहां तक चला कि मसीही सम्पत्ति के नाम पर दालान, खेत, बाग और बगीचे, मसीही कम्पाउंड और गिरजाघरों को बिकते देख कर ऐसा प्रतीत होता था कि मसीहा को फिर एक बार फकी फरीसियों और महायाजकों के मध्य बेचने और सलीब देने के लिये लाकर खड़ा कर दिया गया है। इस प्रकार कि वे सब के सब उसे नोच नोच कर खा जाना चाहते हैं। इतना सब होने पर भी कुछेक धर्मान्ध और परमेश्वर के सच्चे अनुयायी ऐसे भी थे कि जब उन्होंने अपने मसीही समाज का ऐसा घिनौना और स्वार्थी, लालची और जमाखोरों के द्वारा प्रस्तुत किया गया रूप देखा तो लज्जा के कारण अपना सिर पकड़ कर ही रह गये। मगर ऐसे लोग कर भी क्या सकते थे। ऐसे

अनुयायियों की संख्या भी कम थी, और ताकत तथा ओहदे के अनुसार शक्ति भी कम। फिर कोई उनकी सुनने वाला भी नहीं था। मसीहियत और मसीही समाज का रूप बिगाड़ने वाले मुख्य रूप से प्रवन्धक ही थे। मिशन की रही बची कार्यप्रणाली ऐसे ही ख्वाऊ प्रवृत्ति के लालची लोगों को सौंप दी गई थी। सो वास्तविक मसीह के अनुयायी अपने प्रभु परमेश्वर की कलीसिया का बिगड़ता और पतित रूप देख कर केवल खामोश रहते और चुपचाप अपने परमेश्वर से प्रार्थना किया करते।

नीलू जब भी इस बारे में विचार करती या फिर मिशन का ऐसा बिगड़ता हाल देखा करती तो एक बार को उसका भी दिल पसीज़ जाता। वह सोचा करती कि मानो यीशु के नाम पर खड़ी की गई उसकी दुल्हन जैसी कलीसिया का वह हाल चला था कि जिसके बिगड़ाव की कोई सहज ही कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इतना तो सत्य था कि ये सब देख कर कोई भी आसानी से कह सकता था कि लोग मसीह को भूल चुके हैं। उसके प्रति लोगों के दिलों में वह प्रेम और श्रृद्धा नहीं बची थी कि जिसके बल पर कभी उनका परमेश्वर गर्व भी किया करता होगा। अपने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये लोग मसीह की आराधना को महत्व ही देना भूल गये। एक प्रकार से लोगों ने उससे अपना मुंह फेर लिया था। उसका कोई भी मूल्य नहीं जाना। शायद इसीलिये धर्मशास्त्र में भी इसी बात को कहा गया है कि, ' लोग उससे मुंह फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हमने उसका मूल्य न जाना।' - यशायाह ***53 : 3***

इस बीच बढ़ते हुये समय की तमाम रेखाओं के दायरों में व्यस्त होकर नीलू एक दिन क्षितिज को पूर्णतः भूल गई। भूल गई और साथ ही क्षितिज के स्थान पर किसी अन्य की दुनियां को संवारने में पूरी तरह से लीन हो गई। अब क्षितिज के स्थान पर उसके दिल में कोई दूसरी तस्वीर रहती थी। और आश्चर्य की बात थी कि उसके दिल में विराजमान जो नया चित्र था, वह था एक अन्य गैर मसीही लड़के अश्वनी का। नीलू का सहपाठी। अश्वनी नीलू के जीवन में आया तो उसके दिल और दिमाग से क्षितिज की रही बची स्मृतियां भी समाप्त हो गईं। अब यदि वह सोचती भी तो केवल अश्वनी के लिये। सपने सजाती तो अश्वनी के लिये। इस प्रकार कि उसकी सांसों की रग रग में अश्वनी समाता चला गया।

फिर नीलू एक दिन अपने घर के बगीचे में बैठी कोई पुस्तक पढ़ रही थी। छुट्टी का दिन था। हवायें भी बन्द थीं। आकाश साफ था। धूप हर

पल तेज होती जा रही थी। इसी बीच उसकी सहेली वीनू मुस्कराती हुई उसके पास आ गई। आते ही वह भी उसी के पास आकर वहीं बैठ गई।

वीनू, नीलू की बचपन की मित्र थी, और वह भी यहीं सांवतबाड़ी की इस मसीही बस्ती में रहा करती थी। उसका घर भी नीलू के बिल्कुल ही पड़ौस में था। वीनू इस समय हाई स्कूल की छात्रा थी।

" आज अकेले अकेले बगीचे में पढ़ाई कैसी चल रही है ? " वीनू ने नीलू की मुखमुद्रा को गौर से निहारते हुये कहा।

" यूं ही। सोचा कि पढ़ाई के साथ साथ धूप भी ले लूंगी, इसीलिये यहां आकर बैठ गई थी। "

" क्या पढ़ रही हो ? "

" वनस्पति विज्ञान। " नीलू ने पुस्तक दिखाते हुये कहा तो वीनू बोली,

" मैं देख सकती हूं ये पुस्तक ? "

" हां हां क्यों नहीं। " ये कह कर नीलू ने पुस्तक वीनू की तरफ बढ़ा दी।

तब वीनू ने जैसे ही पुस्तक को खोल कर देखना चाहा तो तुरन्त ही एक तस्वीर उसके अन्दर से निकल कर भूमि की हरी घास पर गिर पड़ी। नीलू उस तस्वीर को उठा पाती इससे पहले ही वीनू ने उसे उठा लिया। फिर उसे देखते ही न जाने वीनू को क्या हुआ कि उसके चेहरे के भाव बदलते देर भी नही लगी। ऐसा लगा कि जैसे उस फोटो को देखने ही भर से उसके मुंह का स्वाद बिगड़ गया था। तुरन्त ही उसकी आंखों में लाल लाल डोरे और मुख पर नफरत के अंगारे से जलने लगे। नीलू ने जब उसकी इस बदली हुई मुद्रा को देखा तो चौंक गई। फिर न जाने क्या सोचती हुई वह वीनू से बोली कि,

" ला मुझे दे ये तस्वीर। "

" !! "

तब वीनू ने गंभीर होते हुये, फोटो नीलू की तरफ बढ़ाकर उसकी आंखों में झांकते हुये एक संशय से कहा कि,

" एक बात पूछूं मैं ? "

" क्या ? "

" इस कमीने की फोटो तेरी किताब में कैसे आ गई। "

" ऐ.... ज़रा होश में। कैसे बोलती है तू इसके लिये ? " नीलू ने वीनू को उस तस्वीर के प्रति अनुचित सम्बोधन के बारे में जैसे टोक दिया।

इस पर वीनू क्षण भर को चुप हो गई। उसने कहा तो कुछ नहीं, मगर वह मौन होकर नीलू के चेहरे के भाव पढ़ने का प्रयास करने लगी। फिर थोड़ी देर के पश्चात नीलू ही ने बात आगे बढ़ाई। वह बोली,

" कहीं से भी आई, तू क्यों जांच पड़ताल करने लगी ? "

" मतलब है तभी तो पूछ रही हूं मैं। "

" क्या मतलब है ? " नीलू ने उसे भेदभरे ढंग से देखते हुये कहा।

" यही कि तेरे पास ये फोटो क्यों है। " वीनू ने पूछा।

" अरे जाहिर है कि, कोई तो कारण होगा ही। अच्छी लगती होगी। लेकिन तू क्या इसे जानती है ? "

" जानती ही नहीं, खूब अच्छी तरह से पहचानती भी हूं मैं। "

" अगर जानती है तो बता दे कि कौन है ये। "

" अश्वनी भटनागर। "

" ?? "

तस्वीर वाले का वास्तविक नाम वीनू के होठों से सुन कर नीलू पल भर को आश्चर्य से गड़ गई। इस प्रकार कि जैसे सामने बैठे हुये किसी रेखा पढ़ने वाले पंडित ने उसका हाथ देखते हुये उसके भूतकाल की किसी चोरी का हाल सही सही बता दिया हो।

" तुझे मालुम है कि ये कैसा और किस जाति का लड़का है ? " वीनू ने नीलू का दिल फिर कुरेदना चाहा।

" हां, जानती हूं। बहुत ही अच्छा और पैसे वाला लड़का है ये। " नीलू जैसे कहीं बहुत दूर ख्यालों में खोती हुई बोली।

" !! " नीलू की इस बात पर वीनू ने उसे गौर से देखा। उसके चेहरे के भावों को ढंग से पढ़ना चाहा। फिर एक भेदभरे ढंग से निहारती हुई वह उससे बोली कि,

" तेरी पसंद क्या हर महिने बदला करती है ? "

खामोशी। नीलू बोली तो कुछ नहीं केवल उसकी निगाहों से अपनी नज़रें मिलाती हुई केवल हल्के से मुस्करा कर रह गई।

" मैं गंभीरता से पूछ रहीं हूं तुझसे ये सब। मज़ाक में उड़ा देने वाली बात नहीं है ये। " वीनू ने फिर कहा तो नीलू जैसे लापरवाही से बोली कि,

" अरे छोड़ न। यही तो दिन हैं चार अंखियां करके किसी के होश उड़ा देने के। "

" इसका मतलब है कि तू कभी भी किसी एक पर स्थिर नहीं रह सकती है। पहले राज, अशोक, दर्शी, क्षितिज और अब ये.....! चक्कर क्या है ये सब ?"

" वीनू.....! कभी तो मेरे पक्ष में भी बात कर लिया कर।" नीलू ने जैसे परेशान होते हुये कहा।

" ठीक कह रही हूं मैं। इसके अलावा और मैं कह भी क्या सकती हूं। बस मैं इतना ही आगाह कर सकती हूं कि तू जिसको ज़िगर का टुकड़ा समझ कर अपने दिल से चिपकाये हुये है, वह कोई बहुत ही खतरनाक सांप है। ऐसा सांप कि जो तुझको डसेगा नहीं, बल्कि तेरा सारा कुछ लूट कर भाग जायेगा।"

" वीनू, बगैर किसी के बारे में जाने हुये तुझे ऐसे नहीं कहना चाहिये।" नीलू जैसे नाराज़ सी हो गई।

" बुरा लग गया होगा तुझे। लेकिन ध्यान रखना कि तू एक मसीही लड़की होकर किसी हिन्दू लड़के का सहारा ढूंढ़ रही है। परमेश्वर तुझे कभी भी मॉफ नहीं करेगा।"

" हिन्दू है तो क्या हुआ। मैं उसे मसीही बना लूंगी।" नीलू ने जैसे कोई सपना देखा।

" हूं। तू क्या उसे मसीही बनायेगी। तुझे खुद पहले मसीही बनने की आवश्यकता है।" वीनू निर्लिप्त भाव से बोली।

" हां, अब तू चाहे कुछ भी कह ले। वैसे मैं इतना अवश्य ही कहूंगी कि अपने क्रिश्चियन लड़के भी पढ़े लिखे और अमीर नहीं होते हैं।" नीलू ने अप्रत्यक्ष तौर पर अश्वनी की तारीफ की तो वीनू जैसे बिफरते हुये उससे बोली कि,

" नीलू पहले अपनी बन्द आंख की पट्टी खोलने का प्रयत्न कर, तब बाद में किसी दूसरे की आंखों के तिनके की शिकायत करना। तेरे सिर पर फिर किसी के प्यार का भूत चढ़ा बैठा है। तुझे अभी दिखाई भी क्या दे सकता है।" वीनू का मूंड जैसे फिर खराब हो गया था।

" तू आखिरकार कहना क्या चाहती है ?" नीलू ने वीनू को इस प्रकार से बदलते तेवरों के मध्य बात करते देखा तो पूछ ही लिया।

" एक हिन्दू लड़के के साथ किसी मसीही लड़की का इस तरह से मेल जोल और फिर उसके साथ विवाह आदि के सपने देखना, परमेश्वर की नज़रों में सरासर पाप कहलाता है।"

" लेकिन मैं पाप कहां कर रही हूं। मैं तो एक हिन्दू लड़के को बचा रही हूं। शादी करके, उसे ईसाई बना लूंगी।" नीलू ने कहा तो वीनू अपना बुरा सा मुंह बनाते हुये उससे बोली कि,

" हूं। तूने यदि ये बात किसी और लड़के के लिये कही होती तो शायद एक बार को मैं तेरा विश्वास भी कर लेती। मगर अश्वनी....? उसे तो मैं अच्छी तरह से जानती हूं। वह तेरा सब कुछ न छीन कर ले जाये और तुझे कहीं का भी नहीं छोड़ेगा तो तू मुझे वीनू नहीं, कुछ और कह देना।"

वीनू ने अपनी त्यौरियां चढ़ाकर ये शब्द कहे तो नीलू जैसे उसकी तरफ से नाराज होती हुई उसे एक टक घूरती रह गई। कुछ बोल भी नहीं सकी वह। बड़ी देर तक चुप ही बनी रही। साथ ही बिल्कुल खामोश भी।

तब दोनों सहेलियों में काफी देर की चुप्पी के पश्चात वीनू ने ही आपस के मध्य छाई मूकता को तोड़ा। वह बोली कि,

" अब क्या सोचने लगी तू ?"

" यही कि तू मेरी सहेली होकर भी मेरी पसंद से जल उठी।"

" मैं कोई नहीं जलने लगी। मेरी बात को गौर से सुन। एक बार को केवल अश्वनी ही तेरी मुख्य पसन्द हो सकती है, लेकिन अश्वनी की मुख्य पसन्द तू अकेली कभी भी नहीं हो सकती है। मेरी इस बात को तू हमेशा याद रखना।"

" तू केवल अश्वनी के ही पीछे क्यों पड़ कर रह गई है ?" नीलू से जब नहीं रहा गया तो उसने एक सन्देह के साथ वीनू से पूछ ही लिया।

" इसलिये कि मैं उसके स्वभाव को आज से नहीं बल्कि उन दिनों से जानती हूं, जब कि वह मेरे भाई के साथ पढ़ा करता था, और इसी बहाने कभी कभी मेरे घर आ जाया करता था। वह तो बार बार फेल होता रहा है इसी कारण आज तेरे साथ भी एक ही कक्षा में पढ़ रहा है।"

" इसका मतलब तू उसे तो जानती ही है।"

" हां।"

" और तू ये भी जानती होगी कि नीलू ने आज तक कितनों से सच्चा प्यार किया है।" नीलू ने जब बात का रूख बदला तो वीनू ने तुरन्त ही उत्तर दिया। वह तपाक से बोली,

" एक से भी नहीं। लेकिन तू ये मत भूल जाना कि तेरे इस तरह के प्यार के नाटक तुझको किसी दिन बहुत ही मंहगे पड़ेंगे।"

" तब की तब देखी जायेगी। यही तो दिन हैं मौज और मस्ती मारने के।" नीलू लापरवाही से बोली तो वीनू ने फिर से उसको समझाना चाहा। उसने कहा कि,

" देख नीलू, अभी तू हरेक से यही नाटक करती रहे। रोजाना ही एक से एक नये लड़के से अपने वादे दोहराती रहे। लेकिन फिर जब एक दिन सारे के सारे एकत्रित होकर तुझसे अपना तकाजा करेंगे तब तू क्या करेगी। तूने इसके बारे में भी कुछ सोचा है क्या ?"

" अच्छा अब बस कर तू। थोड़ी देर को चुप भी हो जा। बहुत हो गया। बात और वातावरण को गंभीर मत बना।" नीलू ने कहा तो वीनू ने जैसे अपने हथियार डालते हुये कहा कि,

" ठीक है। जैसी तेरी मर्जी और जैसा तू सोचे।"

इसके बाद किसी ने भी कुछ नहीं कहा। दोनों ही चुप बनी रहीं। कुछेक पलों तक दोनों के मध्य खामोशी एक तीसरे बजूद के समान उनके मन के भावों को चुपचाप निहारती रही। इस बीच सूर्य काफी कुछ ऊपर तक आ गया था। उसकी मजबूत होती हुई रश्मियों का प्रभाव वातावरण की सारी रात की नमी को सोख़ चुकी थीं। प्रबल होती हुई धूप अब शरीरों को काटने का प्रयास कर उठी थी।

दोनों ही सखियां अभी तक मौन थीं। किसी ने भी, कोई भी बात अभी तक आरंभ नहीं की थी। दोनों के हृदयों में अपने अपने प्रकार के प्रश्न थे। विभिन्न विचार थे। यदि देखा जाये तो दोनों के विचारों और हृदय की भावनाओं में कितनी अधिक असमानता थी। किसकदर उनमें दूरियां थीं। कितना अधिक वे एक दूसरे की धारणाओं के विपरीत थीं। एक परमेश्वर से बिना किसी भी भय के दूर और दूर तक भागी जा रही थी, तो दूसरी उसी को ईश्वर के अथाह प्यार, उसकी दया, कृपा, उसकी बहुतेरी आशीषों तथा उसके महान प्यार का वास्ता देकर उसके करीब लाने का एक असफल प्रयास कर रही थी।

मानव जीवन की अपेक्षायें व आस्थायें यदि प्यार के अपने बनाये हुये मार्गों के साथ चलने लगती तो वह मंजिल जिसकी इंसान अपने दिल में एक तस्वीर बना कर प्राप्त करने की इच्छा रखता है, कितनी ही सुन्दर होती ; इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। मगर इंसान करता तो वही है जिसकी परमेश्वर ने सदा मनाही की है, बगैर इस भय के कि, मनुष्य के किये गये कामों का एक एक हिसाब उसके स्वंय के उस खाते में

लिखा जा रहा है, कि जिसका एक दिन उसे हिसाब भी देना है। यदि मनुष्य ये सोचे कि ये सच नहीं है तो फिर सच वह भी नहीं है कि जिसकी इंसान बड़ी बड़ी बड़ाइयां किये फिरता है। मनुष्य के अपने हाथों के द्वारा बनाये हुये बसेरे और घरोंदे इस नाशमान संसार से एक न एक दिन ढह ही जाने हैं; इंसान इतना तो विश्वास करता है, मगर प्यार के घरोंदे यदि बनते भी हैं तो केवल टूटने के लिये ही, इस सच्चाई के आंकड़े दुनियां में सबसे अधिक हैं। ये बात भी सपने देखने वाले को सोचनी तो चाहिये ही।

€

समय लगातार बढ़ता रहा। मसीहा मसीहियों के समाज में बिकता रहा। उसकी उपासना तथा उस पर ईमान रखने वाले ही उसकी बोलियां लगाते रहे। ये सब भरे समाज और संसार में बेधड़क चलता ही रहा तथा साथ ही नीलू और अश्वनी के बेमेल प्यार की गाड़ी का पहिया इश्क की बनाई हुई अंधी राहों पर बेतहाशा भागता रहा। इस प्रकार समय बढ़ते बढ़ते काफी दिन हो जाते हैं। कई हफ्ते, कई माह, लगभग एक वर्ष यूं ही व्यतीत हो जाता है।

क्षितिज को फिरोजपुर गये हुये एक वर्ष से भी अधिक हो चुका था। वह अपने बूढ़े मां बाप की सहायता करता रहा। उन्हें समय पर पैसा भेजता रहा, ताकि उनकी आवश्यकतायें पूरी होती रहें। मगर सांवतबाड़ी आने का उसका एक बार भी मन नहीं हो सका। हांलाकि उसके मां बाप दोनों ही ने उससे कितनी ही बार कहा होगा, लेकिन वह फिर भी नहीं आया। उसे बड़े दिन पर बुलाया तो वह खुद ही टाल गया। ईस्टर आया तो उसके माता पिता ने एक उम्मीद उससे लगाई कि शायद लड़का इस बार मिलने को आ जाये, मगर वह फिर भी नहीं आया। आने का उसका एक बार भी मन नहीं हुआ। नीलू की बेवफाई और उसके नाटकीय प्यार की हरकतों ने उसके दिल की गहराइयों में वह अलगाव और अरूचि की भावना उत्पन्न कर दी थी कि जिसके कारण उसको सारा सांवतबाड़ी ही बेवफा नज़र आने लगा था। यहां की हवाओं के स्पर्श मात्र से ही उसका दम सा घुटने लगता था।

इतने अरसे के अन्तराल में नीलू क्षितिज को बिल्कुल ही अपने दिल से निकाल चुकी थी। अश्वनी के सहारे चलते हुये वह उसके बहुत ही करीब आ चुकी थी। इतना करीब कि जहां पर आकर फिर उसका वापस लौटने का कोई भी इरादा नहीं बनता था। जब ऐसा था तो फिर ऐसी स्थिति में वह किस प्रकार क्षितिज को अपने पास रख सकती थी। उससे मतलब भी क्यों कर होता। ये तो सच है कि नारी को तो सदा ही एक न एक सहारे की जरूरत रही है। और ये सहारा नीलू को अब अश्वनी से प्राप्त होने लगा था। हांलाकि, नीलू ने क्षितिज को एक प्रकार से अपने दिल से सदा के लिये निकाल तो दिया था, मगर फिर भी उसको समय समय पर उसके पत्र बराबर मिलते रहते थे। उसके इन पत्रों में अधिकतर उसके लिये एक तड़प ही होती। एक अनकहा प्यार बसा रहता। साथ ही

नीलू के लिये उसके सुन्दर भविष्य की शुभकामनायें भी होती। सो ये था क्षितिज और उसका प्यार। उसके टूटे दिल की भावनाओं का हाल कि जिसको एक मानवी के स्थान पर देवी जानकर उसकी सच्चे हृदय से उपासना कर रहा था, उसी के दिल में उसके प्रति तनिक भी स्थान बाकी नहीं बचा था। वह तो किसी गैर की दुनियां सजाने में जैसे पूरी तरह से व्यस्त हो चुकी थी। व्यस्त हो चुकी थी, मन, आत्मा और कर्म से भी।

सांवतवाड़ी की मसीही बस्ती के हाल भी काफी कुछ बदल चुके थे। मसीही सम्पत्ति के नाम पर अंग्रेजों के द्वारा उनकी धरोहर के रूप में दिये गये समस्त खेत और बगीचे गैर मसीहियों को मोटी रकमों में बेच दिये गये थे। जिन स्थानों को गैर मसीहियों ने खरीदा था, अब वहां पर उन्होंने इतने ऊंचे ऊंचे दो मंजिल और तीन मंजिल तक के मकान बना लिये थे कि उनके सामने समस्त मसीही बस्ती किसी कबूतरखाने के समान प्रतीत होती थी। बस्ती के अधिकतर हरे भरे घने पेड़ काट डाले गये थे। इसलिये सारी मसीही बस्ती एक उजड़े हुये रेगिस्थान के समान दिखाई देती थी। लोगों में वह अपनत्व और प्यार नहीं बचा था कि जिसकी कभी उस माहौल में सुगन्ध महसूस होती थी। ज़रा ज़रा सी बात का बतंगड़ बना कर वे आपस में झगड़ने लगते थे। उनके अन्दर लड़ाई झगड़ा तो जैसे रोज़मर्रा की आम बात हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त मसीही बस्ती का वह सबसे बड़ा मैदान कि जहां पर कभी मसीहियों की बड़ी आराधनायें और कन्वेन्शनें हुआ करती थीं, उसे भी छोटे छोटे प्लॉट बना कर बेच डाला गया था। अब वहां पर गैर मसीहियों के निवास स्थान बने हुये थे। कुछेक घर जो कि मसीही बस्ती में खाली पड़े हुये थे उन्हें भी किराये पर उठा दिया गया था। सारी मसीही बस्ती का समस्त वातावरण ही बदल गया था। कहीं भी जैसे कोई भी शान्ति नज़र नहीं आती थी। किसी के अन्दर किसी भी लगाव और प्यार की कोई फूटी किरण भी जैसे शेष नहीं बची थी। ऐसा लगता था कि जैसे हर स्थान और हरेक जगह पर वीराना तथा सूनेपन ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया है। मसीहियों की इस बस्ती में बसी मनहूस ख़ामोशी तथा उजाड़ ज़िन्दगी को देखते ही प्रतीत होता था कि जैसे फिर एक बार खुदा की चुनी हुई कौम दासता की जंजीरों में जकड़ कर बाबुल को रवाना कर दी गई है, और खुदा ने वहां पर से अपनी रहमत और अनुग्रह का साया उठा लिया है। मसीहियों की नाफरमानी और बेहूदगी को देख देख कर परमेश्वर ने भी जैसे अपनी

आंखें फेर लीं थीं। जिस मसीहियत भरे माहौल में कभी परमेश्वर की आराधना और स्तुति के स्वर गूंजा करते थे, वहीं अब गैर मसीहियों के बने हुये मन्दिरों में आरती के कीर्तन होने लगे थे। जिन तन्दूरों और खाना बनाने वाली जगहों पर जब कभी मसीही कन्वेंन्शनों में आये हुये प्रभु के अनुयायियों के लिये भोजन पका करता था, वहीं अब शाम होते ही उल्लू बोलते और अबाबीलें चिपकने लगीं थीं।

यहूदा दास ने मिशन की सम्पत्ति को जहां उन्हें अवसर मिला बेच बेच कर अब तक सारे मसीही समाज तथा आस पास के इलाकों में काफी नाम कमा लिया था। उसने अधिकतर स्थानों में मिशन की सम्पत्ति तो बेची ही थी, साथ ही उसने कहीं कहीं गिरजाघरों तथा पुराने कब्रिस्थानों तक को नहीं छोड़ा था। उन्हें भी उसने बेच डाला था। इस कारण उसके इन कामों का प्रभाव ऐसा हुआ कि लोग मन ही मन उससे घृणा नहीं बल्कि घिन करने लगे। अन्दर ही अन्दर सब उससे जलते और उसकी उपस्थिति से दूर भागा करते थे। मगर फिर भी किसी भी मसीही व्यक्ति में इतना साहस नहीं था कि वह उसकी इस प्रवृत्ति का तनिक भी विरोध करे। शायद इसका मुख्य कारण मसीहियत में मिली उनकी वह शिक्षा ही थी कि जिसमें अपमान होने पर भी प्रभु यीशु ने एक गाल पर थप्पड़ खाने के पश्चात अपना दूसरा गाल भी फेर देने को कहा था।

क्षितिज के पिता अब तक काफी बूढ़े होकर अस्वस्थ्य रहने लगे थे। हांलाकि, उनका बराबर इलाज चल रहा था। क्षितिज उनकी बराबर सहायता कर रहा था। उसके पिता का काम तो बहुत पहले ही बंद हो चुका था। यूं तो मिशन का सारा काम ही बंद हो चुका था। क्षितिज के पिता सचमुच परमेश्वर का सच्चे हृदय से भय मानने वाले भक्त प्रकार के व्यक्ति थे। अपनी सारी उम्र उन्होंने परमेश्वर की सेवा ही की थी। भरी जवानी में गर्मी, बरसात और तड़कती लू में गांव गांव साइकिल चला चला कर परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया था। लेकिन अब आकर उन मसीही कलीसियाओं की बरबादी देख कर उनका दिल बुरी तरह से टूट गया था कि जिन्हें उन्होंने कभी एक प्रकार से अपने खून और पसीने से सींचा था। इसके साथ ही इकलौते बेटे की दूरियों ने भी उनके अन्दर अब जैसे जीने की कोई इच्छा नहीं रख छोड़ी थी। वे अधिकतर बीमार रहने लगे थे। उनका स्वास्थ्य भी बहुत अधिक गिर चुका था। मिशन की हुई बरबादी तथा उजाड़पना देख देख कर उनका मन भी बुरी तरह से

टूट चुका था। फिर टूटता भी क्यों नहीं। वह घर, वह कलीसियायें जिनको उन्होंने अपना सारा जीवन देकर पाला था, उनकी दिन रात देख भाल की थी और जिसको एक तरह से उन्होंने एक बहुत बड़ी कीमत चुका कर खरीदा था, अपने जीवन को समर्पित करके उन्होंने मसीह की कलीसियायें बनाई थीं; जब वे ही एक दिन उनके सामने बरबाद होने लगे तो दुख तो होना ही था। दिल तो टूटना ही था। अपने मसीहा को वे अपनी ही आंखों के सामने बिकता हुआ देख रहे थे, मन की भावनाओं को ठेस तो लगनी ही थी। अपने ही हाथों के द्वारा बसाया हुआ घर, उजाड़ और मनहूस कामनाओं का कफ़न तैयार कर रहा था, तो ऐसे में क्यों नहीं फिर उनका दिल टूटता और दुखता ?

अपने परमेश्वर से भटके हुये लोग उनकी ही आशाओं और अभिलाषाओं का गला घोंट कर शैतान की मनोकामनाओं के चिराग रोशन कर रहे थे। दुख तो होना ही था। दर्द और सदमा भी उन्हीं को झेलना था। शायद यही शैतान है। शैतान के कार्य हैं कि वह परमेश्वर के कार्यों में हर पल बाधा बन कर खड़ा हो जाता है। मनुष्य की पल पल में परीक्षायें लेता रहता है। उसे हर क्षण भरमाने के प्रयास में लगा रहता है। और मनुष्य भी इन परीक्षाओं में गिर और फंस कर अपने परमेश्वर से दूर भटक जाता है। दूर होता चला जाता है। दूर हो जाता है तो फिर वह कहीं का भी नहीं रह पाता है। मगर फिर भी लोग परमेश्वर के भेदों को जान नहीं पाते हैं। और पता नहीं परमेश्वर की भी ऐसी कौन सी रीति है कि जो मनुष्य सोचता और विचारता है, वह कभी भी नहीं हो पाता है, और जिनको मनुष्य जोड़ना चाहता है वह कभी नहीं बंध पाता है। जिसकी कभी कल्पना भी नहीं करता है वही तस्वीरें उसके सामने ही आकर चकनाचूर हो जाया करती हैं। शायद यही विधाता है। सृष्टि का विधान है। मनुष्य के बनाये और संजोये हुये सपनों का सार है कि वे चटकते तब हैं जब कि मनुष्य अपनी उम्मीदों और अपने बल प्रयास पर गर्व करने लगता है।

नार्थ इंडिया सिनड में अब तक न जाने कितने ही यहूदा और उसके लालचखोर चेले पैदा हो गये थे। न जाने कितने ही हर पल पैदा होते जा रहे थे। ये ऐसे मसीह के कामों की आड़ में उसके भक्त थे कि जैसा भी उन्हें अवसर मिलता था वे बगैर कोई चूक किये हुये अपने मसीहा की नीलामी करने से बाज नहीं आते थे। अपने मसीहा, अपने परमेश्वर को बेच रहे थे। पल पल में_____हर रोज़ ही उसकी कहीं न कहीं नई नई बोलियां

लगाई जाती थीं। नये नये खरीदार आते थे। फरूखाबाद, मैनपुरी आगरा, इटावा, सीतापुर, लखीमपुर और शाहजहांपुर..... कौन सा उत्तर प्रदेश का ऐसा शहर और कस्बा बाकी था, कि जहां पर इस घिनौने और शर्म नाक काम के द्वारा मसीहियों के सम्मान पर कीचड़ न उछाली गई हो। उदाहरण के तौर पर यदि गौर करें तो जाकर देखें कि फतेहगढ़ का माना हुआ मिशन हस्पताल आज भी अपनी बरबादियों को देख देख कर अपनी बिगड़ी किस्मत पर आंसू बहाता है। पुवांया जिला शाहजहांपुर का वह चर्च कि जहां पर कभी परमेश्वर की आराधना में गीत गाये जाते थे, अब घोड़ों और खच्चरों का निवासस्थल बन चुका है। सो इस प्रकार मसीही सेवा की आड़ में पले हुये यहूदा अपने ही मसीहा को शायद सदा के लिये बेच देना चाहते थे। शायद अच्छे से अच्छे दामों में बेच कर वे अपने पाप का घड़ा अतिशीघ्र ही भर लेने की कोशिश कर रहे थे। इसीलिये शैतान की मिली सौगात ने भी उनको अपने पंजे में बुरी तरह से जकड़ रखा था। तब तक के लिये जब तक कि वे पूरी तरह से शैतान नहीं बन जाते और एक बार फिर से मसीह को बेच कर उसे दुबारा सलीब पर नहीं चढ़ा देते हैं।

€

अचानक ही चर्च की घंटियों ने तड़प तड़प कर अपना दर्दीला संगीत वातावरण में बिखेरना आरंभ किया तो उसके साथ ही सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती का माहौल भी जैसे सिसकने लगा। इस प्रकार कि उसके साथ ही हवायें भी रो पड़ीं। चर्च की घंटियां थम थम कर इस प्रकार बज रहीं थीं कि जैसे वे भी किसी अपार दुख के कारण अपना दम तोड़ देना चाहती हों। इस समय समस्त मसीही बस्ती में ख़ामोशी छाई हुई थी। हर जगह मौन था। हरेक चप्पा आज जैसे जी भर के रो देना चाहता था। रविवार का दिन था। संध्या के लगभग चार बज रहे थे। मगर मसीही बस्ती के सारे लोग आज चर्च की इबादत में न जाकर कहीं दूसरे स्थान में जाकर खड़े हो गये थे। चर्च इमारत के ठीक पीछे बने हुये अंग्रेजों के पुरातन कब्रिस्थान के सूने प्राचीर में सब ही जैसे उदासियों और नाकामियों का बुत बन गये थे। झुके झुके और मुंह लटकाये हुये चेहरे, अभी भी नीचे धरती की ही तरफ देखे जा रहे थे। सब ही के चेहरों पर दुख और विषाद की बनी हुई काली रेखायें इस बात की सूचक थीं कि आज फिर उनका कोई प्रियजन इस धरती के संसार से नाता तोड़ कर हमेशा के लिये उस अनन्त जीवन पथ की राहों पर कूच कर गया है कि जहां पर जाकर फिर कभी भी कोई वापस नहीं लौटा है। आज क्षितिज के बूढ़े पिता सांवतबाड़ी की सारी मसीही बस्ती के वासियों को दर्द का गीत देकर, उनसे सदा के लिये नाता तोड़ कर अपने दूसरे देश को चले गये थे। उस देश को कि जिसका ब्यान केवल धर्मशास्त्रों और कुछेक किताबों में ही मिला करता है, मगर देखा किसी ने भी नहीं होता है। और जो देखने जाते भी हैं वे उसका वर्णन करने कभी भी दुबारा इस धरती पर नहीं आया करते हैं।

खड़े हुये मसीही लोगों की हरेक आंखों में दुख और दर्द के आंसू ठहरे हुये थे। क्षितिज भी अपनी अकेली मां के साथ खड़ा हुआ अपने पिता के इस अंतिम नजारे को चुपचाप देख रहा था। वह आज ही फिरोजपुर से वापस आया था। नीलू भी एक ओर खड़ी हुई थी। बिल्कुल ही चुप और ख़ामोश। मनुष्यों के घेरे में खड़ी हुई हरेक दृष्टि उस काले ताबूत को देख रही थी जो कि अब थोड़ी ही देर में उनसे सदा के लिये विदा कर दिया जायेगा, तथा जिसके अन्दर उनका कोई प्रियजन आज अनन्त देश की यात्रा पर चला गया था। चला गया था, उन सबको रोता और बिलखता हुआ छोड़ कर। सदा के लिये अपनी उपस्थिति और वजूद से अकेला बना कर। क्षितिज के बूढ़े पिता दीनानाथ 'कलवरी' आज

सचमुच ही सारी मसीही बस्ती को अपना अंतिम नमस्कार कह कर सदा के लिये जा चुके थे।

रस्सियों की सहायता से जैसे ही ताबूत को कब्र में उतारा गया तो एक ओर खड़े हुये क्षितिज की आंखें फिर छलक आईं। वह अपनी मां से लिपट कर फूट फूट कर रो पड़ा। रोता ही रहा। बड़ी देर तक। मां ने भी उसको बहुत प्यार से अपने कलेजे से लगा लिया। क्षितिज रोता रहा। मां भी बड़े ही लाड़ और प्यार के साथ उसके सिर पर अपना हाथ रखे रही। वह खुद भी रोती रही। ऐसे दुख भरे समय को देख कर क्षितिज का तो दिल ही जैसे फट जाना चाहता था। स्वंय उसकी मां को भी अपार दुख था। परन्तु अपने से अधिक क्षितिज को तसल्ली की अधिक आवश्यकता थी। इसलिये अपने इकलौते बेटे के सामने वे अधिक शोक मना कर शायद उसके दुख को और भी अधिक नहीं बढ़ाना चाहती थीं। क्षितिज को उन्होंने अपनी छाती से लगा लिया था। वह उनका बेटा था। अपना ही रक्त। कलेजे का टुकड़ा। जाहिर था कि उसके हरेक दुख सुख में उनका भी बराबर से हिस्सा था। क्षितिज को चिपकाये हुये स्वंय उनकी भी आंखें भर आईं थीं। बड़ी देर तक दोनों मां और बेटा इस दुखद वातावरण में अपने आंसू बहाते रहे। एक अपने पति के बिछुड़ जाने और बेटे के दुख में तो दूसरा अपने पिता के चले जाने के गम और अकेली रह गई मां का दुख देख कर। शायद यही जीवन है। जीवन का खेल भी कि मनुष्य जब से जन्म लेता है, अपनी ज़िन्दगी के अधिकांश दिन वह रोने और दुख मनाने में ही व्यतीत कर देता है। वह बहुत कम हंसता है, और फिर रोता है। सृष्टि का भी नियम है कि, मनुष्य आता है। जाता है। और फिर कहीं खो जाता है। सदा के लिये। ये नियम तो सदियों पहले भी था। आज भी है, और शायद तब तक बना रहेगा, जब तक कि इस संसार का अंत नहीं हो जायेगा।

दफ़न की रस्म पूरी हो गई तो उदास और ख़ामोश चेहरे चुपचाप सिर झुकाये कब्रिस्थान के वीरान और सूने प्राचीर से धीरे धीरे वापस खिसकने लगे। सब ही की आंखों में दुख और क्षोभ के तरसते हुये आंसू थे। दिल में सदा को चले जाने वाले की रही बची स्मृतियां शेष थीं। सच भी है कि मनुष्य के इस संसार से हमेशा को कूच कर जाने के पश्चात जाने वाले की केवल यादें ही तो बच कर रह जाती हैं। ऐसी यादें कि जिन्हें लोग दोहराते हैं। दोहराते हैं, जब भी उनकी कोई बात छिड़ जाती है।

दुख और दर्द से भरे हुये लटके और उदास चेहरे धीरे धीरे कब्रिस्थान से वापस लौटे जाते थे। मगर कितना भी धीरे वे क्यों न चलते, ये फासला तो दूर होना ही था। हर दशा में। वे जाने वाले को पीछे छोड़ते जा रहे थे।

क्षितिज कई दिन घर पर ही रहा। सांवतबाड़ी में। जब तक कि उसके दिल से उसके पिता की मृत्यु का दुख सामान्य नहीं हुआ, वह कहीं भी नहीं जा सका। वह अपने घर में ही जैसे बंद रहा। इन दिनों नीलू उसे चुपचाप चोर नज़रों से देखती। कुछ सोचती। विचार करती, मगर उसका भी ये साहस नहीं हो सका कि वह खुद ऐसी दुखद बेला में क्षितिज को स्वंय जाकर थोड़ी बहुत तसल्ली दे आती। उसके दिल का दर्द बांटने का प्रयास भी करती। वह मौन और चुप ही बनी रही। शायद उसकी इस बदली हुई प्रवृत्ति का कारण यही था कि अब उसको क्षितिज से सरोकार भी क्या रहा था। जब समय था तब वह ऐसा कर नहीं सकी थी। और अब तो जैसे बहुत देर भी हो चुकी थी। यही सोच कर वह क्षितिज का अब कोई भी साथ नहीं दे सकती थी। ना तो उसकी खुशियों में, और ना ही उसके किसी भी दुख और दर्द में। एक दो बार उसकी सहेली वीनू ने उससे आग्रह भी किया कि जाकर एक बार वह क्षितिज का दर्द बांट ले। ये समय तो सब ही पर आता है। उससे वह भले ही ना कोई भी भूली बिसरी बात करे, मगर औपचारिकता के नाते उसे व्यक्तिगत तौर पर क्षितिज को सन्तोष भरे दो शब्द तो कह ही देने चाहिये। लेकिन नीलू पर वीनू की किसी भी बात का जैसे कोई असर भी नहीं हुआ। वह लापरवाही में उसकी बात को जैसे हवा में उड़ाती हुई बोली कि,

' अरे, छोड़ भी इन सबको। मरने वाले के साथ ना तो कोई मर जाता है, और ना ही प्यार में कोई अपना गला काट लेता है।'

तब नीलू की इस अप्रत्याशित बात को सुन कर वीनू को घोर आश्चर्य तो हुआ ही था, साथ ही दुख भी। आश्चर्य हुआ था, इसलिये कि नीलू उसकी बचपन की सहेली थी। वह उसे खूब अच्छी तरह से जानती थी। क्षितिज और उसके प्रेम सम्बन्धों से भी वह भली भांति परिचित थी। दोनों ही अपने प्रेम की डगर पर सपने देखते हुये आगे बढ़ रहे थे कि न जाने ऐसा दोनों के मध्य क्या हुआ था कि, अब नीलू क्षितिज के बारे में बात भी नहीं करना चाहती थी। दुख वीनू को था इसलिये कि, नीलू एक मसीही लड़के को प्यार का सब्ज़ बाग दिखा कर किसी गैर मसीही लड़के

के साथ घूमती फिर रही थी। उसकी अंतरंग सहेली भटक रही है, और वह चाहते हुये भी उसकी कोई मदद नहीं कर सकती थी।

फिर एक दिन जब अचानक से नीलू को ये देख कर आश्चर्य हुआ कि क्षितिज उसकी सहेली वीनू से बात कर रहा है तो वह और भी अधिक आश्चर्य और विस्मय से गड़ गई। वह तो सपने में भी नहीं सोच सकती थी कि क्षितिज वीनू से इस प्रकार बात भी कर सकता है, क्यों कि उसने आज तक क्षितिज को वीनू तो क्या बस्ती की किसी भी लड़की से कभी भी बात करते नहीं देखा था। खुद अपने बारे में भी वह स्वंय ही क्षितिज को प्यार की राहों पर खींच कर लाई थी। वह तो यूं भी पहले ही से बहुत ही अधिक चुप और मौन तबियत का लड़का था।

परन्तु नीलू को शायद नहीं मालुम था कि क्षितिज वीनू से बात करने के पश्चात उससे मिली जानकारी के कारण वह और भी अधिक टूट गया था। वह और भी अधिक निराश और ख़ामोश हो गया था। इतना अधिक कि दो एक दिनों में उसकी काया ही पलट गई। कई कई दिनों तक उसने शेव ही नहीं किया। चेहरे पर झाड़ियों समान दाढ़ी बढ़ आई। आंखों में दुनियां जहान की उदासी बसते देर भी नहीं लगी। उसका स्वास्थ्य भी गिरने लगा। गाल भी अन्दर की ओर धंसने लगे। आंखें जैसे सौग़ात में मिली निराश कामनाओं की अर्थी को सामने पाकर गड्ढों में जाने लगीं। तब नीलू को समझते देर नहीं लगी कि वीनू ने उसको उसकी और अश्वनी के प्रेम सम्बन्धों के बारे में भली भांति वाकिफ़ करा दिया है। सो बात भी यही थी। क्षितिज जब तक सांवतबाड़ी में रहा, तब तक नीलू की बेवफाई और पिता की मृत्यु के दुख का साया ही उसके ऊपर एक परछाई के समान छाया रहा। एक ओर पिता का ग़म और दूसरी तरफ नीलू का विछोह, दोनों ही उसको घुन के समान भीतर ही भीतर खाने लगे। वह पूरी तरह से दीवाना तो नहीं बना, बल्कि दीवानों समान अपने दुख को महसूस अवश्य ही करने लगा। कारण उसकी दिनचर्या ही बदल गई। समय असमय वह खाना खाता। कहीं भी यदि घूमने के उद्देश्य से निकल जाता तो फिर लौटने का उसका कोई समय ही नहीं होता। रात को वह अधिकतर बाहर बस्ती के मैदान में ही बैठा रहता। बैठा बैठा वातावरण की ख़ामोशियों से अपना दुखड़ा रोता रहता। मगर वह ये नहीं जानता था कि यहां पर अब उसका दर्द पूछने और सुनने वाला कोई नहीं था। यूं भी ये सांवतबाड़ी उसके लिये दर्दों का भंडार बन गया था। यहां की हरेक वस्तु में उसे

अलगाव की गंध आने लगी थी। यहां तक कि हरेक सड़क, प्रत्येक गली उसको किसी नरक के मार्ग की तरफ जाती प्रतीत होती थी। यहां की हवाओं में उसे अब किसी अजनबीपन का एहसास होने लगा था। अपनों में भी अब परायापन झलकने लगा था।

मां ने जब अपने इकलौते बेटे की इस प्रकार से बदलती दशा देखी तो उनको भी समझते देर नहीं लगी। नीलू और उनके लड़के की भूतपूर्व मित्रता व प्यार के उठते गीतों को वह खुद भी कभी गुज़रे दिनों में सुन चुकी थीं। सारी मसीही बस्ती में कभी उन दोनों के प्यार के चर्चे हुये थे। सो पिता की मृत्यु के साथ साथ प्रेमिका की निष्ठुर बेवफाई का सदमा भी अब उनके बेटे का चैन खाने लगा है; सोच कर ही वे चिन्तित होने और परेशान होने लगीं। एक ही लड़का है उनका। पति का भी अब कोई साथ नहीं रहा है। ये भी यदि हाथ से निकल गया तो फिर वे क्या करेंगी। उन्होंने ये भी सोचा कि क्षितिज जितना भी शीघ्र हो सके यहां से चला जाये तो यही उसके हित में होगा। यदि यहां रहा तो घुल घुल कर मर ही जायेगा। फिर जब वह चला जायेगा और वक्त जब धीरे धीरे सब कुछ सामान्य कर देगा तो फिर वे कोई भी अच्छी सी लड़की देख कर उसका विवाह कर देंगी। वे इतनी अच्छी और सुन्दर बहू अपने लड़के के लिये ढूंढ़ेंगी कि सारी मसीही बस्ती में उसका कोई मेल नहीं होगा। तब उनका क्षितिज ऐसी सुन्दर और सभ्य पत्नी पाकर फिर कभी नीलू के प्यार को याद भी नहीं कर सकेगा। लेकिन ये सब हो उससे पहले क्षितिज को यहां से किसी भी प्रकार वापस उसके काम पर भेजना है। हर दशा में; नहीं तो उनका बेटा हर पल मन ही मन घुलता रहेगा। प्रत्येक समय कम होता रहेगा। शायद प्रति पल ही। और इसी प्रकार घुलते घुलते वह किसी दिन अपने रहे बचे अस्तित्व को भी नष्ट कर लेगा।

क्षितिज की छुट्टियां तो पहले ही समाप्त हो चुकी थीं। मां के प्यार तथा उनके बहुत समझाने और आग्रह के उपरान्त वह फिर एक दिन फिरोजपुर जाने के लिये तैयार हो गया। वह साथ में अपनी मां को भी ले जाना चाहता था, परन्तु पुरातन विचारों और पीढ़ियों के समावेश में पली उसकी मां को अपने बेटे की सलाह गवारा न हो सकी। वे मिशन के पुराने और क्षीण घर को छोड़ना नहीं चाहती थीं। सांवतबाड़ी की इस मसीही बस्ती के इस पुराने लाल ईंट के घर में उनके जीवन का एक विशेष और महत्वपूर्ण हिस्सा व्यतीत हुआ था। सो अपने जीवन की अंतिम सांसों के

अन्तिम दिनों तक वे यहीं, इसी घर में गुज़ारना चाहती थीं। दूसरा कारण उनके पति की कब्र भी यहीं थीं, शायद मन के किसी कोने में बसी ये धारणा कि मरने के पश्चात वे भी अपने पति के साथ उनके ही पैरों में सदा के लिये सोना चाहती थीं। ये बात उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से क्षितिज तक पहुंचा भी दी थी। जीवन की सांसों का अब कोई भी भरोसा नहीं था। कभी भी बुलावा आ सकता था। सो सब कुछ यही सोचते और विचारते हुये उन्होंने क्षितिज से उसके साथ चलने को मना कर दिया था। तब क्षितिज हार मान कर, फिर एक बार फिरोजपुर को रवाना हो गया। अपने दिल से अपने पिता की मृत्यु का दर्द तथा नीलू की बेमुरव्वत प्यार के वादों का असर अपने साथ लेकर उसने सांवतबाड़ी को विदाई दे दी। मगर जाने से पहले वह नीलू के लिये एक पत्र अवश्य ही लिख कर, वीनू के हाथ में दे गया था। तब वीनू ने जिस दिन क्षितिज का पत्र लाकर नीलू को दिया तो उसे देख कर फिर एक बार उसका दिल धड़क गया। धड़कनों पर ज़ोर पड़ गया। इस प्रकार कि जैसे उसके मन में कोई चोर है, और कोई उसे बार बार इस बात के लिये आगाह कर रहा हो। ऐसा क्यों होता था। जब भी उसे क्षितिज का कोई भी सन्देश या पत्र मिलता था तो उसका दिल अनजाने में ही धड़कने लगता था। नीलू स्वंय भी इसका कारण नहीं समझ सकी थी। उसने क्षितिज के पत्र को खोल कर पढ़ना आरंभ किया ;

' नीलू,

सोचता हूं कि, अच्छी ही होगी। परमेश्वर तुमको सदैव ही खुश रखे, यही मेरी दुआ है। कल फिर तुम्हारे प्यार के दर्द को अपने सीने में चुपचाप छिपा कर फिरोजपुर चला जाऊंगा। सोचा तो यही था कि तुमको ये पत्र न लिखता, परन्तु दिल का न जाने कौन सा रिश्ता तुमसे जुड़ गया है, जो ऐसा चाहते हुये भी नहीं कर सका। तुम सोचती होगी कि मैं तुमसे कोई शिकायत करूंगा। मुझे तुमसे किसी बात का कोई शिकवा होगा। शायद इसीलिये मेरे पापा की मृत्यु के समय पर भी तुम मुझसे दो बातें भी करने नहीं आ सकीं ? मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ पता है। भला मैं तुमसे शिकायत करने वाला होता भी कौन हूं ? मुझे तुमसे तकाजा करने का क्या अधिकार है ? ये तो हृदय है। मन की पसंद है। किसी को भी, जब भी दिल चाहने लगे। मन की पसन्द का क्या भरोसा ? कभी भी बदल

जाती है। तुम पूरी तरह से स्वतन्त्र हो। हर आदमी अपने लिये अपने स्थान पर आजाद है। चाहे किसी को चाहो। किसी को भी प्यार करो। तुम्हारी मर्जी। तुम्हारा निर्णय। मैं रोक टोक करने वाला कौन हूं ? वैसे भी दिल की पसन्द का क्या ठिकाना ? किसी की भी निज़ी वसियत या जायदाद तो होती नहीं है। किसी को भी दिल, कभी भी चाहने लगे। फिर ऐसी दशा में, जब कि वीनू ने मुझको सब कुछ बता दिया है। मैं तुमसे और उम्मीद कर भी क्या सकता हूं। मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि उसे बदलते देर भी क्या लगती है। मुझे तुमसे कोई भी शिकायत नहीं है। दुख है तो केवल इसी बात का कि, तुम मुझे राह-ए-सफ़र में अचानक से बिना कारण बताये अजनबी बन गईं। जब कि साथ साथ चल कर अपनी मंजिल ढूंढ़ने की प्रेरणा तुम्हीं ने मुझको दी थी। मैं तो अछूता था। प्यार की इन कोमल भावनाओं से। तुम्हीं ने हसरतों और चाहतों की राग मेरे दिल की कोमल भावनाओं में छेड़ कर मुझे प्रेम की इन मधुर लालसाओं से अवगत कराया था। बगैर इस चेतावनी के कि जब भावुकता के आधार पर बने हुये सपने अचानक ही चकनाचूर होते हैं तो मनुष्य किस प्रकार प्यार के बिना जीवित रह सकता है। शायद तुम्हें तो इसका कोई अनुभव होगा नहीं। क्योंकि तुम तो केवल तोड़ना जानती हो। बनाने में कोई वस्तु के कितना समय और कभी कभी इंसान का पूरा जीवन तक लग जाता है, तुम तो इसका अनुमान भी नहीं कर सकती हो। काशः तुम मेरे जीवन में प्रेम की इस अनुभूति की दस्तक देने कभी भी नहीं आती। नहीं आती तो कितना भला होता।

कितना कड़वा और कठोर सत्य है कि, नदी के दो किनारे सदियों से साथ साथ सफ़र करते आये हैं, परन्तु कभी भी उनका मिलन नहीं हो सका है। मिलते भी हैं तो वे केवल एक पुल के द्वारा ही। और जब तक वह पुल बन कर तैयार हो पाता है, तब तक जीवन की सांझ हो चुकी होती है। फिर इस शाम के पश्चात, रात्रि का अंधकार। तुम तो साथ ही नहीं चलना चाहती हो। मिलन की बात तो बहुत पीछे रह जाती है। ख़ैर! अब मैं तुमको फिर कभी भी इस प्रकार से परेशान नहीं करूंगा। ना ही कोई पत्र लिखूंगा। मैं यहां से जा रहा हूं। मेरी कोशिश भी यही रहेगी कि किसी भी प्रकार से तुमको अति शीघ्र ही भूल जाऊं। हांलाकि ये इतना आसान नहीं है। मगर कोशिश तो मनुष्य करता ही है। बगैर इस बात को ध्यान किये हुये कि वह सफल होये या नहीं। वैसे भी अब मेरे पास होगा

भी क्या। केवल तुम्हारे अधूरे प्यार की बेवफाई के दर्द के सिवा। सो इसी दर्द के सहारे मैं अपनी उम्र पूरी करने का प्रयत्न करता रहूंगा। जिन्दगी गुज़ारने का तो कोई प्रश्न ही नहीं होता है।

तुम तो बहुत भाग्यशाली हो, जो तुमको पार लगाने वाला मांझी मिल गया है। चाहे कैसा भी और किसी भी समुदाय का क्यों न हो; तुम्हारी जीवन नैया तो पार लगा ही देगा। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि, मेरे बाद अश्वनी को इतना अधिक प्यार देना कि वह तुम्हारे प्रेम में डूब कर, तुम्हारे दिल से मेरी रही बची याद को भी समाप्त कर दे, और तुम कभी भी फिर मुझको याद करके उसके प्यार का अपमान मत करना। मेरी शुभकामनायें तुम्हारे साथ हैं।

'तुम्हारे बाद' मेरे जीवन की क्या रूपरेखा हो सकती है, इसका आभास तो तुम स्वंय भी कर सकती हो। यदि तपस्या करने वाले को वरदान की आशा में श्राप मिल जाये तो उससे बढ़ कर बदनसीब और कौन हो सकता है ? मैंने तुमको चाहा। एक प्रकार से प्यार की हसरतों को दिन रात सजा सजा कर तुम्हारी पूजा की। हर दिन तुम्हारी आरती उतारी। तुमको बगैर किसी भी स्वार्थ के प्यार किया। और मेरे इस प्यार का प्रतिफल.... ...? तुम्हारी बेवफाई....तुम्हारी निष्ठुरता.....यही तो मिला है मुझको सब ? यही तो नज़राना है मेरे प्यार का तुम्हारी ओर से। क्योंकि मैं बदनसीब और बुरा हूं। बुरा ही नहीं, बल्कि एक अभागा भी। तुम इस बात को खूब अच्छी तरह से जानती हो कि मेरा जीवन तुम्हारे हाथों में पड़ कर अब जैसे कहीं का भी नहीं रहा है। चाहो तो इसे फिर से बना भी सकती हो। नहीं तो 'तुम्हारे बाद' मैं प्रयत्न करूंगा कि अपनी ज़िन्दगी के मार्गों पर एक भला इंसान बन कर जी सकूं। मगर ऐसा लगता नहीं है, क्योंकि एक टूटा और हारा हुआ इंसान गिरता अधिक है और संभलता कम ही है। मैं भी तुम्हारे प्यार की ख़ोखली आशाओं को अपना सिर दर्द बना कर अब तक टूटता ही आया हूं। इसका कारण भी शायद यही हो सकता है कि, तुमने मुझ जैसों को तोड़ना ही सीखा है, बनाना नहीं। मेरा ख्याल है कि ये भी तुम्हारी आदत का ही एक अंश होगा।

क्षितिज।'

'क्षितिज'। नीलू पत्र पढ़ने के पश्चात मन ही मन दोहरा गई। पत्र को मोड़ कर उसने जैसे ही अपने कोट की जेब में रखा तो उसके दिल में एक चोट सी लग कर रह गई। आंखों में उदासी छा गई। तुरन्त ही मस्तिष्क

में कई तरह के प्रश्न तीर बन कर दिल को छेदने लगे। फिर जब उसकी बेचैनी और मन की पीड़ा अधिक बढ़ी तो वह अपने स्थान से हट कर पास ही के घने अमरूदों के बाग में आ गई। आकर एक वृक्ष के नीचे बैठ कर वह चुपचाप सारे आस पास के वातावरण से बेखबर होकर क्षितिज के लिये सोचने लगी।

'क्षितिज।' हां, क्षितिज ही। वह क्यों उसके पीछे पड़ा हुआ है। क्यों इतना अधिक उसको चाहता है। वह तो उसको अभी तक भूला भी नहीं है। शायद भूलेगा भी नहीं ? कहीं वह अपनी सारी उम्र इसी प्रकार से उससे अपने प्यार का तकाजा करता रहा तब..... ? तब क्या होगा ? तब वह क्या उसको कोई भी हिसाब दे सकेगी ? यदि वह उसके कारण बिगड़ गया। कहीं यदि बरबाद हो गया। तब क्या होगा ? उसके उजाड़ जीवन की सारी बरबादियों का दोष केवल उस पर ही लग जायेगा। शायद उसने तो बेकार ही इस लड़के के साथ प्यार का खेल खेला। खेल क्या, एक ऐसा व्यंग कि जो उसके जीवन का ज़हर ही बनता जा रहा है। कितना उदास था वह। किसकदर टूटा टूटा और थका हुआ नज़र आ रहा था वह। साथ में उसके पापा की मृत्यु का दुख भी। बेचारा....! कितना अधिक उदास और निराश होकर गया है वह यहां से। मैंने तो व्यर्थ ही उसके साथ ये प्यार का ढोंग रचा। ऐसा नाटक जो कि उसके लिये हकीकत ही बन गया। यदि मैं उसके साथ फिर से हो लूं। फिर उसका हाथ पकड़ लूं तो फिर अश्वनी.... ? उसका क्या होगा। वह भी तो मुझ पर अपनी जान दिये फिरता है। कितना अधिक चाहने लगा है अश्वनी मुझको। बहुत ही अधिक। इतना अधिक कि शायद क्षितिज भी उसको इतना नहीं चाहता होगा ?

नीलू ने इस प्रकार सोचते हुये अश्वनी का ख्याल किया तो क्षितिज का विचार और उसका चित्र अपने आप ही उसके मानस पटल से साफ हो गया। वह भूल गई कि अभी अभी कुछेक पल पहले ही उसने क्षितिज का उदासियों से भरा पत्र पढ़ा भी था। वह जिसे कभी उसने खुद अपने प्यार की राहों पर साथ साथ कदम बढ़ाने के लिये बाध्य किया था, आज केवल उसी के कारण खुद को गलाये दे रहा है ?

इस तरह से नीलू क्षितिज के लिये जैसे ही सोचती तो तुरन्त ही अश्वनी उसके नैनों की खिड़की खोल कर उसके दिल में प्रवेश करता तो

फिर क्षितिज का ख्याल स्वतः ही उसके मस्तिष्क से अतीत की भूली बिसरी याद के समान कहीं बाहर निकल कर फिर से खो जाता।

€

क्षितिज चला गया तो नीलू फिर एक बार उसकी तरफ से निश्चिंत हो गई। समय का चक्र चलता रहा। रोज़ाना सूर्य उदय होता। दिन भर की यात्रा को पूरा करता, फिर अन्त में संध्या को अग्नि का लाल अंगार बन कर बड़ी ही निराशा के साथ ढल कर अपना मुंह छिपा लेता। फिर शाम भी ढलती। चन्द्रमा भी उग आता। तारिकायें सारी सारी रात मुंह झुकाये धरती को टुकुर टुकुर ताकती रहतीं। यही प्रकृति का नियम था। विधाता का दस्तूर, जो कि समय के पहियों के साथ साथ सृष्टि के आरंभ से लगातार चलता आ रहा है।

दिन बीतते बीतते एक वर्ष फिर हो आया। क्षितिज जो फिरोजपुर गया तो फिर उसने सांवतबाड़ी झांकने का नाम भी नहीं लिया। इसके साथ ही इस एक वर्ष के अंतराल में नीलू भी क्षितिज को पूरी तरह से भूल कर अश्वनी की बनने का ख्वाब देख उठी। अब उसकी आखों में हर समय अश्वनी ही समाया रहता। चाहे कोई भी समय होता, कोई भी पल, वह सदा अश्वनी के ही बारे में सोचती रहती। नीलू की इसी आदत के कारण उसकी सहेली वीनू ने भी उससे बोलना बंद कर दिया था। क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि नीलू एक मसीही लड़की होकर किसी गैर मसीही युवक के साथ अपना इस प्रकार का सम्बंध रखे। उसके साथ अपने विवाह के सपने सजाती फिरे।

सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती का रूप और ढांचा बदल कर बिल्कुल किसी रेगिस्थान के समान उजाड़ और तबाहियों की कोई बिगड़ी हुई तस्वीर बन कर अपनी दुर्दशा के अलाप गाने लगा था। कहीं कोई भी हरियाली, बाग बगीचे, यहां तक कि किसी छाया में बैठने के लिये कोई भी दुर्भाग्य का मारा वृक्ष तक नहीं नज़र आता था। विदेशी मिश्नरियों के द्वारा बनवाये हुये मकानों की एक लम्बे अरसे से कोई भी मरम्मत तक नहीं हुई थी। जब कि सुनने में आता था कि इस कार्य के लिये अतिरिक्त धन राशि न जाने कितनी ही बार स्वीकृत हुई थी, और पैसा भी प्राप्त हो चुका था। गर्मी के दिन थे। दिन भर गर्म हवायें धूल भरे गुबारों के साथ मसीही बस्ती के जीर्ण होते हुये मकानों से अपना सिर टकरा टकरा कर तोड़ती रहती थीं। मिशन की अधिकांशतयः सम्पत्ति बेच दी गई थी। गिरजाघर की सम्पत्ति के नाम पर हरे भरे खेत, जो कभी मदमस्त हवा के झोंकों में लहलहाते थे, अब पराये हो गये थे। उनके सीने पर अब गैर मसीही लोगों के हल और फावड़े चलने लगे थे। कितने ही मकान तक हिन्दू लोगों को

किराये पर उठा दिये गये थे। जब कि स्थिति ये थी कि अन्य मसीही लोग शहर में किराये के मकानों में अपना निर्वाह कर रहे थे।

समस्त मसीही बस्ती को दूर से ही देखते प्रतीत होता था कि ये उस मसीही कलीसिया का बिगड़ा और उजाड़ रूप है कि जिसका अब कोई निगहबान और चरवाहा नहीं रहा था। स्वार्थी और बुरे आदमी के तौर पर विख्यात यहूदा दास ने मिशन के ही पैसे से अपनी आलीशान कोठी, अपने ही पैत्रिक गांव में बनवा ली थी। मिशन की बहुत सारी जमीन और सम्पत्ति अवैद्य रूप से अपने और अपने सम्बन्धियों के नाम करवा कर उन पर अधिकार जमा लिया था। सारी मसीही बस्ती में कहीं कोई भी शान्ति नहीं बची थी। लोगों के मध्य का आपसी प्यार, अपनत्व और सहानुभूति समाप्त हो चुकी थी। ज़रा ज़रा सी बात का बहाना पाने पर वे अक्सर ही झगड़ने लगते थे। मसीही बस्ती में जहां कभी चोरी आदि का नामो निशान तक नहीं था, वहीं अब आपसी फूट और मन मुटाव का लाभ पाकर चोरों को भी सेंध लगाने का अवसर मिलने लगा था। हर तरफ उजाड़ और सूना सूना नज़र आता था। कहीं, कोई भी किसी की दास्तां, दुखड़ा या दर्द का सुनने वाला नहीं था। गरीब मसीही लोग दरिद्रता और अभावों के पत्थरों से जैसे दब कर ही रह गये थे। मिशन के पादरी और पास्टर लोग जिन्हें अचानक से दो दो वर्ष का एक साथ वेतन देकर सेवा से मुक्त कर दिया गया था, अब जीविका चलाने के लिये मेहनत, मजदूरी पर विवश हो चुके थे। मसीहियों में आपसी मत भेद का पूरी तरह से साम्राज्य स्थापित हो गया था। एक दूसरे के प्रति द्वेष की भावनायें और अलगाव की दीवारें इतनी प्रबल हो चुकी थीं कि जिनको तोड़ना अब कोई भी सरल कार्य नहीं था। किसी को, किसी से भी कोई रूचि और सरोकार नहीं रहा था। सब ही स्वार्थी और बुजदिल बने हुये जैसे अपनी अपनी नाकामियों का रोना रोने लगे थे। जब कि प्रभु यीशु ने सब ही को प्रेम से जीने की शिक्षा दी थी। आपस में मिल बैठ कर, प्रेम से रहने का उपदेश सुनाया था। अपने पड़ोसियों से अपने ही समान प्रेम करना सिखाया था। मगर अब ऐसा कुछ भी नहीं बचा था। सारी मसीही बस्ती का जैसे चप्पा चप्पा हर समय आंसुओं को जन्म देता हुआ उदासियों का भंडार बन कर रह गया था। आरजुओं और आस भरे दिल अपनी झोली फैलाये हुये भीख की तलाश में न जाने कहां जाकर खो गये थे। रोते और बिलखते हुये बचपन चीत्कार करने लगे थे। लापरवाह और नाफरमानियों से भरपूर युक्त

जवानियां भटक रही थीं। सिसकता और हर दम खांसता हुआ बुढ़ापा मसीहियों के जीर्ण और टूटे फूटे मकानों के सीलन भरे कमरों में बेबस कैद होकर जैसे अपनी मौत के दिन पूरे कर रहा था। छोटे और मासूमों को शिक्षा देने वाला अब कोई रूचि नहीं ले पा रहा था। सन्डे स्कूल, मसीही युवतियों की साप्ताहिक होने वाली सभायें तथा नियमित होने वाली प्रार्थ नाओं के बारे में कोई अब बात भी नहीं करना चाहता था। युवक और युवतियां अपने उत्तरदायित्वों को भूल कर जवानी के अंधें मार्गो पर भटकने की हर पल कोशिश करते प्रतीत होते थे। बस एक घर की गली पार करने की आवश्यकता थी, और विवाह सम्बंध या तो मर्जी से अन्यथा बेमर्जी से हो जाते थे। ऐसा न देख सकने वाला हश्र था कि बूढ़े और जर्जर शरीर भी जैसे समय से पहले ही परमेश्वर के पास जाने के लिये दुआओं में अपने हाथ हर समय उठाये रहते थे। कहीं भी, किसी की, कुछ भी सुनने वाला कोई भी नहीं था। सब ही भावनायें, आदर्श और सहानुभूतियां शैतानी पंजों के नीचे दब कर अपनी बरबादियों का रोना रोने लगीं थीं। सारी मसीही बस्ती तथा मिशन की रही बची अवशेष जैसी सम्पत्ति को देखते ही प्रतीत होता था कि जैसे मानव जीवन नाम की कोई भी ज़िन्दगी अब कहीं भी नहीं बची थी ; अब तो केवल जैसे हरेक को अपनी अपनी उम्र ही पूरी करना बाकी थी। और वह भी मजबूरियों के घूंट भरते हुये ही।

नीलू का जीवन भी प्यार की अंधी राहों पर भटकते हुये अब अश्वनी की बाहों में व्यतीत होने लगा था। उसने अश्वनी के प्यार पर विश्वास रखते हुये अपने भविष्य का निर्णय उसी पर छोड़ दिया था। और अब तक उसके दिल से क्षितिज की शेष बची हुई स्मृतियां भी बरसाती जल के समान आकर चली गईं थीं। क्षितिज को सांवतवाड़ी से गये हुये एक वर्ष से अधिक हो चुका था, और नीलू.....! उसके नैनों में दिन रात का बसने वाला उसका राजकुमार अश्वनी अब तक उसका सारा कुछ जीत चुका था। उसका दिल, दिमाग और दिल के कोने कोने में बसी हुई उसके प्यार की समस्त भावनाओं तक पर वह अपना अधिकार जमा चुका था। वही नीलू कि जिसने एक दिन अपनी मां के कहने भर से क्षितिज से बोलना छोड़ कर उससे अपने प्यार की बंधी हुई डोर शीघ्र ही तोड़ ली थी, आज एक गैर मसीही युवक अश्वनी के लिये अपने सारे परिवार से बगावत तक करने का ख्वाब रचा चुकी थी। प्रायः ही अब वह कालेज में

अश्वनी के साथ साथ ही रहा करती। उसके साथ बिना किसी भी भय और चिन्ता किये हुये लापरवाही से घूमा करती। उसके साथ रेस्तरां में चाय की चुस्कियां लिया करती। साथ ही बैठती और साथ ही अवसर मिलने पर खाना भी खाया करती। वह अक्सर ही कालेज समाप्त होने के पश्चात अश्वनी के साथ कहीं भी घूमने को निकल जाती। देर तक शाम ढले तक घूमती रहती। फिर बड़ी देर बाद वह घर को पहुंचती थी। इसका कारण था कि दोनों ही ने सालाना परीक्षाओं के पश्चात कोर्ट में जाकर विवाह करने का निर्णय भी कर लिया था। धार्मिक रीति से तो दोनों का विवाह किसी भी तरफ से नहीं होने का था। ये बात वे दोनों भली भांति समझते थे। अश्वनी ने भी उसके भोलेपन पर अपनी सच्चाई और विश्वास का लिवास ओढ़ा दिया था। सो इन दिनों नीलू को क्षितिज की एक बार भी याद नहीं आ सकी। पल भर के लिये वह उसके लिये नहीं सोच सकी। उसकी आंखों में अश्वनी था। दिल की गहराइयों तक अश्वनी की छाप पड़ चुकी थी। उसकी सांसों तक में अश्वनी की मुहब्बतों के गीत बसे हुये थे। सपनों में अश्वनी उसके पास हर रात्रि को आता ही था। फिर ऐसी दशा में भूली बिसरी स्मृतियों के झमेलों में अटका हुआ क्षितिज उसे क्योंकर याद आ सकता था। किस प्रकार से क्षितिज को उसके दिल में कोई स्थान भी प्राप्त हो सकता था। क्यों वह नाहक ही उसके बारे में सोच कर अपने आपको परेशान करती ?

नीलू की परीक्षायें समाप्त हों उससे पहले ही अश्वनी उसके दिल पर अपनी झूठी मुहब्बत की मुहर लगा कर, उसका सारा कुछ लूट लाटकर गुमनामी के अंधेरों में विलीन हो गया। नीलू किसी हारे और छले हुये पथिक के समान उसके वापस आने की राह ही देखती रही। वह प्रति दिन उदास मन और थके हुये पांवों से कालेज जाती। एक आस मन में रखे हुये कि शायद आज अश्वनी मिल जाये, मगर उधर से निराशाओं के बादलों का लिहाफ अपने सिर पर रखे हुये चुपचाप लौट आती। धीरे धीरे परीक्षायें पास आती जा रहीं थीं, और नीलू अश्वनी की प्रतीक्षा में प्रति दिन अपनी प्यासी पलकें ही बिछाई रहती। मगर अश्वनी एक बार भी नहीं आया। एक पल के लिये भी वह कालेज में नहीं झांका। वह नीलू को अपने प्यार और विश्वास का वास्ता देकर उसका सारा कुछ छीन कर शायद सदा के लिये कहीं दूर जाकर छिप गया था। सब कुछ तो वह नीलू का लूट ही चुका था, सो यूं भी एक स्वार्थी प्रवृत्ति की भावनाओं के मनुष्य को अब वापस आने

की आवश्यकता भी क्या रही थी।

अश्वनी नहीं आया तो नीलू उदास हो गई। ऐसा बहुत स्वभाविक ही था। उसका जीवन उदास ही नहीं बल्कि मौन भी हो गया। उसके प्यार के पिछले बहके हुये कदमों के निशान उसके जीवन में आने वाले अंधेरों का ज्ञान दे उठे। अश्वनी के साथ प्यार के वायदे और कसमें उसके लिये उसकी ज़िन्दगी का एक कड़वा और कसैला मज़ाक बन कर उसे हर रोज़ ही सताने लगे। ऐसे में जब भी वह अपने जीवन के पिछले अल्हड़ और लापरवाह दिनों के बारे में सोचती तो यादों का हरेक पल जैसे उसको मुंह चिढ़ा कर एक तरफ चुपचाप खिसक कर चला जाता था।

फिर ऐसा जब हर दिन ही होने लगा तो वह अन्दर ही अन्दर टूट गई। घुल उठी। हर समय उसकी बड़ी बड़ी गहरी झील सी आंखों में जैसे कभी भी न समाप्त होने वाला सूनापन समाया रहने लगा। चेहरा समय से पहले ही किसी मुरझाये हुये फूल का प्रतिरूप बन कर अपनी तकदीर का रोना रोने लगा। किसी समय के सदा मुस्कराते और चंचल होठ ख़ामोश हो गये। उसके दिल की सारी खुशियां और रौनकें मनहूस ख़ामोशियों का खंडर बन कर अपनी लुटी हुई बाज़ी का तमाशा देख देखकर आंसू बहाने लगीं। दिल के किसी भीतरी हिस्से में वह अपने आपको लुटा लुटा और ख़ाली महसूस करने लगी। तब इसके साथ ही अश्वनी का प्यार और विश्वास, उसकी ज़िन्दगी का एक खुबसूरत धोखा बन कर उसके दिल में दर्द बन कर जाहिर होने लगा। वह टूट गई। टूट गई तो उसका जीवन ही जैसे टूट गया। वह जानती थी कि उसका प्यार एक मज़ाक बन चुका है। कैसी बिडम्बना थी कि अपने इससे पहले के प्यार को उसने खुद एक मज़ाक बना कर टाल दिया था, और ये दूसरा अश्वनी बना कर चला गया था। वही प्यार और सपना कि जिस पर एक दिन विश्वास करके उसने क्षितिज से अपना रिश्ता सदा के लिये तोड़ लिया था, आज उसके प्यार की कसमों की एक झूठी चाल बन कर उसके मुंह पर तावड़तोड़ तमाचे जड़ने से बाज नहीं आ रहा था।

फिर जब अश्वनी नहीं आया और परीक्षायें भी बिल्कुल ही सिर पर आ गईं तो नीलू को ये विश्वास हो गया कि अश्वनी ने सचमुच उसके साथ छल किया है। वह उस पर विश्वास करके एक खुबसूरत धोखा खा चुकी है। उसका प्यार एक बेवफा नाटक का बदसूरत अंग बन कर उसका

सारा कुछ छीन कर ले जा चुका है। वही प्यार, कि जिसके बारे में कभी सोच सोच कर वह फूली नहीं समाती थी, आज उसकी बहुतेरी उदासियों का दायरा बन कर उसके चारों ओर छा गया था। उसके जीवन का ऐसा घिनौना अनुभव कि जिसके बारे में अब सोचने ही मात्र से उसे शर्म आती है। उसकी आंखें भर भर आती हैं।

ये था, उसका प्यार। उसका विश्वास। उसका भरोसा और एक समझदार मसीही युवती का स्वयं का बनाया हुआ वह पथ कि जिस पर चल कर आज वह भटकी ही नहीं थी बल्कि टूट भी चुकी थी। उसके जीवन का लिया गया एक गलत निर्णय, एक ऐसा फैसला जो कि हवा में बने हुये किसी तख्ते पर एक अटूट विश्वास बन कर उदय हुआ था और आखिर में उसकी निराश कामनाओं का एक झूठा ईमान बन कर अस्त भी हो चुका था।

फिर जैसे तैसे नीलू ने अपने सिर पर से परीक्षाओं का बोझ उतारा और साथ ही वह अपने जीवन के प्रति गंभीर भी हो गई। कहते हैं कि, मनुष्य की ठोकर के द्वारा कदम कदम पर लगी हुई उसकी हरेक चोट का घाव, उसकी सफलताओं की एक नई सीढ़ी हुआ करता है। यही हाल नीलू का भी हुआ था। अश्वनी का प्यार और उसके द्वारा किये गये वादे उसके लिये जीवन का कड़वा ज़हर बने तो वह अपने बाकी के जीवन के प्रति सचेत हो गई। सचेत तो हुई ही, साथ ही पूरी तौर पर गंभीर भी हो गई। तब ऐसे में उसने एक दिन सोचा। गहराई से अपनी सारी परिस्थितियों पर विचार किया। सोचा कि, उसने अपने पिछले जीवन और गुज़रे हुये दिनों में जो कुछ भी किया और जो कुछ उसके साथ हुआ, उसे उसका मलाल तो है मगर फिर भी उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। कोई भी ठोस कदम उठाने से पूर्व भावनाओं और भावुकता में नहीं बल्कि अन्य दूसरे लोगों की भी सलाह मश्वरा ले लेना चाहिये था। उसको तो उन रास्तों पर अपने कदम रखने ही नहीं चाहिये थे, कि जिनकी मंजिल उसके लिये महज एक सपना बन कर उदय हुई थी। अपना घर द्वार छोड़ कर उसे महलों का ख्वाब देखने की क्या आवश्यकता थी ? फिर एक मसीही लड़के का सहारा और साथ छोड़ कर उसने एक हिन्दू लड़के के प्यार और आसरे का निर्णय क्यों ले लिया था। हमेशा से दूसरों के साथ अपने प्यार का नाटक और खेल करने वाली नीलू के साथ भी कोई अन्य नाटक और मज़ाक कर सकता है, मानव ज़िन्दगी के इस कड़वे और कठोर सत्य का तो एहसास

उसे कर लेना चाहिये था ?

ऐसा जब नीलू ने विचारा तो उसे संसार के चलन की वास्तविकता का ज्ञान अपने आप हो गया। ज्ञान हुआ तो वह अपने आप में पछताने लगी। परन्तु अब हो भी क्या सकता था। सब कुछ तो हो चुका था। सब ही कुछ खो गया था। खो गया था, उसका अपना मन, दिल का सपना, सपनों के सहारे देखे गये किसी के प्यार के झूठे वायदे और उसका वह सच्चा प्यार कि जिसकी उसने खुद कभी कोई कद्र नहीं की थी। क्षितिज.....! एक ऐसा साथ कि जिसके साथ चल कर वह कभी पीछे भाग आई थी। एक ऐसा युवक जो उसको प्यार नहीं करता था, बल्कि उसके प्यार की आरती उतारा करता था। एक ऐसा विश्वास कि जिसके विश्वास को बड़ी ही हिकारत के साथ वह ठोकर मार कर एक अविश्वासी की दासी बनने का सपना देख बैठी थी। सोचते सोचते नीलू को ऐसे में क्षितिज बहुत ही याद आया। इतना याद आया कि सोचते सोचते वह खुद ही रोने लगी। इस प्रकार कि आंसू उसके गालों से फिसलते हुये उसके आंचल में भरने लगे। वह जानती थी कि उसके इन आंसुओं में उसके जीवन का वह सबक था कि जिसको वह बार बार दोहरायेगी और पछतायेगी। इन आंसुओं की एक एक बूंदों में उसके लिये क्षितिज के असीम प्यार की वह कहानी लिखी हुई थी कि जिसको वह खुद एक दिन बड़ी लापरवाही के साथ अधूरा छोड़ आई थी। उसका वह अतीत था कि जिस पर एक दिन बड़े ही विश्वास के साथ क्षितिज ने अपने प्यार के फूल उपजाये थे, मगर जिसको उसने परवाह न किये हुये बगैर किसी भी अफसोस के सुखा भी दिये थे।

समय बीत गया था। अश्वनी उसको अपने खोखले प्यार का वास्ता देकर उसका सारा कुछ ले जा चुका था। ले गया था.....उसका मन, धन, तन और उसके विश्वास का वह धरातल कि जिस पर खड़ी होकर एक दिन उसने क्षितिज के असीम प्यार की आरजुओं और आस्थाओं में लात मार दी थी। वह जानती थी कि वह अब कर भी क्या सकती थी। बीते हुये वक्त का एक छोटा सा टुकड़ा भी आज तक मनुष्य को कभी भी दुबारा नहीं मिला है। ठीक उसी प्रकार से कि विधाता भी कलियों से पुष्पों को जन्म दिया करता है, फूल से फिर कली बनाने का रिवाज़ उसके यहां भी नहीं है। यदि ऐसा नहीं हुआ करता तो मनुष्य भूल करने के पश्चात कभी भी प्रायश्चित नहीं किया करता।

सो इस प्रकार की सोचों और विचारों के पश्चात नीलू ने अपनी छाती पर पत्थर रख लिया। उसने किसी प्रकार सब्र किया, और अपने आपको समय की मजबूत धाराओं के हवाले कर दिया। यही सोच कर कि यदि उसके नसीब में कहीं जीवन का किनारा होगा तो उसकी भी जीवन नैया पार लग ही जायेगी, अन्यथा कहीं भी मझधार में जाकर लोप हो जायेगी। भूल करने के बाद वह सीख तो गई थी, मगर फिर भी प्रायश्चित का दर्द और दुख तो उसे झेलना ही था।

समय मनुष्य के किसी भी दर्द का सबसे बड़ा और बेतोड़ इन्जेक्शन होता है। समय के साथ मनुष्य सब कुछ बर्दाश्त कर लिया करता है। समय ही इंसान के गहरे से गहरे ज़ख्मों को भर दिया करता है। समय बढ़ा तो उसने नीलू के दुख और दर्द को बहुत कुछ कम भी कर दिया। ये सच था कि उसकी आंखों में भरे हुये आंसू बंद तो नहीं हुये थे, मगर रोज़मर्रा की मौसमी हवाओं ने सुखा अवश्य ही दिये थे। वह अब रोती नहीं थी। मन ही मन, जब भी बीते समय का कोई कतरा उसकी स्मृतियों से टकरा जाता था तो सोच कर अपने किये पर एक मलाल अवश्य ही कर लिया करती थी। उसने अपने किये पर प्रायश्चित किया। जी भर के रोई और एक दिन उसने स्वंय को परमेश्वर के आगे नतमस्तक कर दिया। कर दिया तो उसको परमेश्वर की याद आई। जीवन में पहली बार उसने परमेश्वर के वचन बाइबल को याद किया। खुद को बेसहारा और अकेला महसूस कर उठी। तब एक दिन हृदय से कायल होकर उसने अपने परमेश्वर यीशु ख्रीष्ट से ये प्रार्थना की ;

' मेरे प्रभु, मेरे सर्वशक्तिमान जीवते परमेश्वर। सारी दुनियां के पालक। दुखियों और बेसहारों के मांझी, आपसे मेरे बारे की कोई भी बात छिपी तो है नहीं। इससे पहले मैं कुछ विनती करूं, मैं कुछ कहूं, मैं आपसे अपने गलत और बुरे कार्यों की हृदय से क्षमा मांगती हूं। मैं पूरी आशा और विश्वास करती हूं कि आप मुझको सचमुच अपने प्यार के दामन में ढांकते हुये मुझे क्षमादान देंगे। मैं ये भी जानती हूं कि यदि आज तक मैं इस संसार में जीवित हूं तो केवल आपकी दया, अनुग्रह और प्रेम के फलस्वरूप ही। अब से कुछ समय पहले तक मैं आपसे विमुख हो चुकी थी। अपने जीवन के गलत और पापमय मार्गों की तरफ जा पहुंची थी, परन्तु मुझे मालुम है कि आपने मुझको एक अवसर और प्रदान किया है। मेरा जीवन नष्ट होने से बचा लिया है। सो मैं हृदय से आपका बार बार धन्यवाद करती हूं। साथ ही ये विनती भी करती हूं कि अब आगे से मुझको जीवन की उन तमाम खुशियों के लिये सुरक्षित रखें जो कि आप मुझको देना चाहते हैं। भविष्य की उन सेवाओं और अच्छे कामों के लिये मुझे बल और साहस दीजिये जो कि आप मेरे द्वारा करवाना चाहते हैं। मैं आज से अपना बचा हुआ जीवन आपके चरणों में सौंपती हूं और ये वायदा करती हूं कि आज से मेरा रहा बचा जीवन केवल आपके प्यार और सेवा में ही अर्पण करूंगी।

जो कुछ मेरे साथ घटित हुआ है, वह आपको सब ही ज्ञात है। लेकिन आपका धन्यवाद हो कि आपने मुझे फिर भी अकेला नहीं छोड़ा है, बल्कि मुझे अपना लिया है। मैं जानती हूं कि मैं पापिनी होकर भी आपके प्रेम और आशीषों से वंचित नहीं रही हूं। आज से मेरे दिल में आपने जीवन की वह शान्ति और खुशी भर दी है, जो कि एक मृत्यु की शैया से वापस आये हुये मनुष्य को होती है। मैं तो सचमुच पाप में मर गई थी, परन्तु अब मसीह में दुबारा जीवित हो चुकी हूं। आपकी भटकी हुई नीलू आज फिर से आपके बनाये हुये पथ पर वापस आ गई है। आपने मुझे फिर से नया जीवन दिया है, तो अब मैं इस नवीन जीवन को दीन, दुखी और बेसहारों तथा बीमार और दर्दों के मारों की सेवा में व्यतीत करूंगीं।

प्रभु यीशु मसीह, मेरा दुनियावी प्यार सचमुच में एक छल और फरेब था। अश्वनी मेरा सारा कुछ छीन कर चलता बना। मुझसे अपना मतलब पूरा करके अपना मुंह फेर गया। काशः मैंने उसके स्थान पर केवल आपका ही विश्वास किया होता। जितना अधिक प्रेम मैंने अश्वनी से किया था, उतना ही यदि आप और आपकी शिक्षाओं से किया होता तो मैं जानती हूं कि मेरा उद्धार हो चुका होता। मगर सब कुछ जानते हुये और एक मसीही होते हुये भी मैं ऐसा नहीं कर सकी। मैं पाप के गर्त में गिर गई थी। एक अपराधिनी हो गई। मुझे क्षमा कर दीजिये। मैंने आपके प्रदान किये हुये जीवन का कोई भी मूल्य न जाना। अपने जीवन को एक उपहास बना डाला। उपहास ही नहीं बल्कि उसमें एक कभी न मिटने वाला दाग लगा लिया। आग से खेल कर उसे जलाती रही, और इस प्रकार आपकी दी हुई इस खुबसूरत ज़िन्दगी की अमानत को सारे लोगों के लिये एक तमाशा बना डाला।

अब अंत में आपसे यही मांगती हूं कि आगे आने वाले दिनों में आप मुझको अपना प्यार और अपनत्व दीजिये ताकि मैं किसी अन्य प्यार की तलाश में फिर न भटक सकूं। अपना मजबूत सहारा दें जिससे कि मैं फिर न गिर पाऊं। मेरी निगरानी रखें ताकि शैतान और उसके भरमाने वाले काम मुझको दुबारा न छल सकें। अपना आत्मिक बल प्रदान करें ताकि मैं जीवन के हर आने वाले तूफानों से संघर्ष कर सकूं। इसके साथ साथ मुझको इतना बल, साहस तथा दिलेरी दें ताकि मैं एक लम्बी ज़िन्दगी के सहारे काफी वर्षों तक टूटे और थके मांदों तथा दीन दुखी और बीमारों की

सेवा करने में सफल हो सकूं। मैं खो गई थी, आपने एक खोई हुई भेड़ समान मुझे ढूंढ़ लिया है। भटक गई थी, आपने मुझे जीवन का सच्चा नया प्रकाश दिया है। मर गई थी, पुनः आपके नाम में जीवित हो गई हूं। आपके प्यारे और नेक नाम में लेकर मैं भविष्य की बहुत सारी आशाओं के साथ इस प्रार्थना को अब समाप्त करती हूं। आमीन।'

प्रार्थना समाप्त करके नीलू ने आंखें खोलीं तो पलकों के पीछे छिपे पश्चाताप के आंसू टूटते हुये उसकी गोद में रखी हुई बाइबल के ऊपर गिर पड़े। आंखें छलक आई थीं। उसके चेहरे पर भरपूर उदासी और पश्चाताप की भावना थी। मगर इसके साथ साथ उसके दिल में एक अजीब ही शान्ति और खुशियों के दीप मुस्करा उठे थे। वह जब प्रार्थना के बाद उठी तो उसको ये एहसास हुआ कि जैसे कोई अन्य भी उसके पास बड़ी देर से खड़ा हुआ था। कौन हो सकता है ये न दिखने वाला साया या आकृति ? सोचा नीलू ने। हो न हो, सचमुच प्रभु यीशु मसीह की ही उपस्थिति इस वक्त हो सकती है, क्योंकि उसने ये वायदा किया है कि वह कभी भी अपने ढूंढ़ने वालों को अनाथ नहीं छोड़ेगा। आज नीलू को ये महसूस हो रहा था कि सचमुच उसके अन्दर किसी नई नीलू ने जन्म लिया है। परमेश्वर ने आज सचमुच उसके पापों को धोकर उसे एक नया जीवन दान में दिया है। क्योंकि वह तो सदा से स्वंय कहता रहा है कि, ' ऐ थके मांदे और बोझ से दबे हुये लोगो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'

परमेश्वर ने नीलू को सहारा दिया और उसका हाथ पकड़ा तो उसके साथ ही उसका जीवन संसार के अंधेरों में से निकल कर नई ज़िन्दगी की रोशनी की राहों पर चल पड़ा। वह टूट चुकी थी, परन्तु उसके परमेश्वर ने दूसरा जीवन देकर उसे फिर से खड़ा किया था। एक नया जीवन देकर, ताकि वह दुनियां के दूसरे बहुत से भटके हुये जीवनों को बचा सके। क्योंकि ये तथ्य है कि जीवन ही जीवन को बचा सकता है। यही परमेश्वर की रीति है। उसका दस्तूर है। सृष्टि के आरंभ से ही ऐसा ही चला आ रहा है। उसने खुद भी तो अपना जीवन बलिदान करके दूसरे पापियों को बचाने के लिये एक मार्ग खोला हुआ है। स्वंय अपने प्राणों की आहुति दी थी। 'कलवरी' की सलीब पर अपनी जान देकर, अपना पवित्र रक्त बहा कर, वह बलिदान हुआ था, ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास लाये, वह नाश न हो बल्कि अनन्त जीवन का भागीदार बन सके। यही मसीहियों के परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह का मनुष्यों के लिये असीम प्रेम का

उदाहरण है। सब जानते हैं कि इस प्रकार के प्रेम और बलिदान का दूसरा नमूना अन्य किसी भी धार्मिक विश्वासों में नहीं मिल सकता है। नाज़रत के मसीह यीशु ने पापियों को अपने गले से लगाया, उनके बचाव के लिये अपने प्राणों का बलिदान किया, सलीब की कठोर और सबसे सख्त मृत्यु को सहा, जब कि दूसरे अन्य धार्मिक विश्वासों के ईश्वरों ने मनुष्यों को मारा, उनका खून बहाया, अपने शादी ब्याह किये, सन्तानें उत्पन्न कीं, और बाद में अन्य मनुष्यों के समान वे भी मर गये। प्रभु यीशु मसीह ही एक ऐसा नाम है कि जो कि मरने के पश्चात फिर से जीवित हुआ, और जिसकी कब्र आज तक खाली पड़ी है।

कितने ही दिन और गुज़र जाते हैं। कितने ही माह। नीलू अपनी द्वितीय वर्ष की परीक्षा पास कर लेती है। परीक्षा का परिणाम घोषित हो चुका है और अब नीलू अपनी आगे की शिक्षा रोक कर नर्सिगं के प्रशिक्षण में जाने के लिये तैयारियां करने लगी है। अगस्त के माह में उसको फतेहगढ़ के मिशन हस्पताल में अपने प्रशिक्षण के लिये चले जाना है। अब तक समय का एक लम्बा अरसा एक युग के समान व्यतीत हो गया है। सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती का तो जैसे नक्शा ही बदल गया है। केवल टूटे फूटे मकानों, जीर्ण शीर्ण जर्जर होती एक मिशन की कोठी और केवल एक चर्च की इमारत को छोड़ कर लगता है कि जैसे अन्य हरेक वस्तु बेच कर पराई कर दी गई है।

इस समय क्षितिज फिर एक बार अपने घर पर आया हुआ है। उदासियों और निराश कामनाओं का भंडार बना हुआ। नीलू ने जब इस बार क्षितिज को देखा तो केवल एक अफसोस ही कर के रह गई। उसे स्वंय भी दुख था। दुख का कारण था कि क्षितिज का अब इस भरे संसार में कोई भी नहीं रहा है। उसकी प्यारी मां भी इस संसार को छोड़ कर जा चुकी है। सो उसी के अंतिम संस्कार की बजह से क्षितिज को फिर सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती में आना पड़ गया था।

नीलू बस्ती की बाहरी दीवार से अपनी पीठ की टेक लगाये हुये इन्हीं सारी बातों के बारे में सोच रही है। खड़े खड़े, चुपचाप, बहुत ही उदासी के साथ। वह सोच रही है कि क्षितिज अब अपनी मां को कहां जाकर अंतिम मिट्टी देगा। कहां पर जाकर वह उनकी अंतिम रस्म को पूरा करेगा, क्योंकि मसीही बस्ती का कब्रिस्थान भी मिशन के खाऊ और धोखेबाज़ यहूदा इस्किरियोतियों के द्वारा बेच दिया गया है। बेच कर उस स्थान पर नया आधुनिक बाजार मसीह में सोये हुये लोगों के जिस्मों पर बनाने का कार्यक्रम खरीदने वालों के द्वारा बनाया जा रहा था। बगैर इस बात और कानून के भय के कि किसी भी कब्रिस्थान में तभी कुछ दूसरा किया जा सकता है जब कि उसके अन्दर बनी हुई अंतिम कब्र की आयु भी निन्यानवे वर्ष की हो जाये। लेकिन हमारे देश में पग पग पर व्याप्त भ्रष्टाचार को देखते हुये ये बात भी नामुमकिन लगती है। आज नैतिकता के पतन के कारण कुछ भी हो जाना असंभव नहीं है।

सो क्षितिज के लिये अब ये घोर समस्या आ चुकी है कि वह अब अपनी मां को आखिरी मिट्टी कहां पर दे ? ना ही उसके पास इतना

पैसा है कि वह जाकर कोई भी कुम्हार का खेत मोल ले और अपनी मां के पार्थिव शरीर को दफन करे। वह कल ही फिरोजपुर से यहां सांवतबाड़ी आया हुआ है। साथ में उसके कुछेक गैर मसीही हिन्दू मित्र भी हैं, जो कि ऐसे दुख के समय में उसकी मां को श्रृद्धांजलि तथा खुद उसको सान्त्वना देने के लिये आये हुये हैं। सारी मसीही बस्ती में क्षितिज की मां को दफनाने के बारे में ही चर्चा चल रही है। यहूदा दास भी मिशन का सारा कुछ बेच कर अपने पैत्रिक गांव में जा बसा है। वहां पर उसने अपनी निजी आलीशान कोठी बनवा ली है।

खड़े खड़े नीलू को इतनी अधिक देर हो गई कि सूर्य की अंतिम लालिमा ने भी आकाश के किनारे जाकर निराश होकर अपना मुंह फेर लिया। शाम हो चुकी थी। आकाश में पक्षी दिन भर के थके थकाये, भागते हुये अपने नीड़ों की ओर उड़े चले जाते थे। इसके साथ ही संध्या का बढ़ता हुआ धुंधलका शीघ्र ही आने वाली रात्रि की कालिमा का सन्देश देने लगा था। सारी मसीही बस्ती में एक भयानक किस्म की ख़ामोशी छाई हुई थी। क्षितिज की मां का पार्थिव शरीर दो दिनों से उसके घर के आंगन में रखा हुआ जैसे समस्त मसीहियों के लिये उनके भविष्य की आने वाली परेशानियों के बारे में पूर्व चेतावनी दे रहा था।

यूं तो क्षितिज की मां की मृत्यु का ग़म सब ही को था। सारी मसीही बस्ती में उसका शोक मनाया जा रहा था। बस्ती के चप्पे चप्पे में उसके ही चर्चे थे। हवायें चुप और शान्त थीं। बहारों का हरेक नज़ारा किसी गमगीन ज़िन्दगी का जानलेवा दर्द बन कर अपना मुंह झुकाये हुये सारी परिस्थिति को चुपचाप निहार रहा था। बस्ती में खड़े हुये इक्का दुक्का वृक्ष मनहूस बुतों समान अपना सिर झुकाये हुये जैसे उदासियों का धीरे धीरे राग अलाप रहे थे। सब ही उदास थे। सब ही की आंखों में जाने वाले के प्रति दर्द और विषाद के भरपूर आंसू थे। सारा वातावरण उदास था। फिर होता भी क्यों नहीं ? आख़िरकार क्षितिज की मां का इस मसीही बस्ती से गहरा सम्बंध रहा था। अपनी सारी उम्र उन्होंने यहीं सांवतबाड़ी की इस मसीही बस्ती में खुदा की सेवा में गुज़ार दी थी। यहां की हवाओं और यहां की हरेक वस्तु में आज भी उनकी मुहब्बतों का गीत बसा हुआ था। यहां का हरेक टुकड़ा तक उनका वही पुराना गीत दोहरा जाता है, कि जिसे वे अक्सर ही चर्च की आराधना में गाया करती थीं। कितना अधिक प्यार था उनको इस मसीही बस्ती से। यहां की एक एक ईंट से। सब जानते हैं कि

अपनी सारी उम्र उन्होंने अपने परमेश्वर की सेवा में व्यतीत कर दी थी। न जाने वे कितने ही सुन्दर और अच्छे अच्छे गीत लिख कर दे गई थीं। कितना अधिक उन्होंने प्यार किया था। कितना अधिक उनको यहां से लगाव था। कितना अधिक, किसकदर वह इस मसीही बस्ती को चाहती थीं। मगर ये कैसी उनकी किस्मत थी। कैसी उनकी बिडम्बना थी कि जब वे इस संसार से जुदा हुई तो दो गज जमीन भी उनके लिये मुनासिब न हो सकी। मरने के पश्चात भी उनको यहां स्थान नहीं मिल रहा था। जब कि उनके चले जाने के बाद भी यहां की हवाओं में उनका यही प्यारा गीत सदा तक गूंजता रहेगा। हमेशा तक। तब तक, जब तक कि उनकी यादों का इस स्थान पर एक कतरा भी बाकी रहेगा।

नीलू को महसूस हुआ कि जैसे आज भी क्षितिज की मां अपना वही प्यारा गीत गा रही हैं। वही प्यारा और अनोखा गीत..... ..परमेश्वर की स्तुति में.....अपनी वही पुरानी और प्यारी आवाज़ में। कुछ इस तरह से ;

' तू हे यीशु स्वर्ग नरेश।
संसार बचाने आया था
तू रख मानव का भेष।
तू है यीशु स्वर्ग नरेश.....
दुनियां जब जब पाप में खेली
तूने अपनी ज्योति खोली
गूंगों को बोली दे दी
अंधों की दृष्टि खोली
संसार में जब जब क्रान्ति आई
तूने दिये निर्देश।
तू है यीशु स्वर्ग नरेश.....
मुखमंडल पर तेज है तेरे
आंखों में है शान्ति तेरे
जीवन देता तेरा चोला
मन भी तेरा उजला उजला
धरती पर छाया करें
तेरे प्यारे काले केश
तू है यीशु स्वर्ग नरेश.....

संसार में तेरी कीर्ति महान
तूने दिया है मुक्ति ज्ञान
कोई न तुझसे रूठा होता
बिन मांगे तू सबको देता
उठाये तूने सारे जग के पाप
मन में रखा कोई न द्वेष
तू है यीशु स्वर्ग नरेश.....

सोचते सोचते नीलू की आंखें उदास चांदनी में शबनम से भीगी हुई धरती की तरह भीग आईं। चेहरे पर भरपूर उदासी छा गई। दिल में केवल एक याद ही शेष रह गई थी। याद के सिवा और कुछ भी बाकी नहीं था। ऐसी यादें कि जिन्हें सिर्फ दोहराना ही रह जाता है। केवल समय समय पर दोहराना ही। जब भी मनुष्य किसी जाने वाले को याद कर लेता है तो अतीत की स्मृतियों का एक गुबार सा उसके दिल के झरोखे में प्रवेश करता है, और वह भी मात्र कुछेक पलों के लिये गुजरे दिनों को ताजा करके समाप्त हो जाता है।

संध्या डूब गई थी और रात पड़ने लगी तो नीलू बहुत ही उदास मन से अपने घर पर वापस आ गई। घर पर आने पर उसको पता चला कि बिके हुये कब्रिस्थान में क्षितिज की मां को दफनाने के लिये कोई भी स्थान मिलना ना मुमकिन था, तो वह उनके पार्थिव शरीर को पास ही के एक दूसरे शहर नीलगणि के मिशन कम्पाउंड में ले गया है। इस आशा पर कि शायद कोई दया और उसकी परिस्थिति पर तरस खाकर उसकी मां को दफनाने के लिये दो गज जमीन दे दे। नीलू ने सुना तो उसका दिल पहले से भी अधिक टूट गया। तुरन्त ही उसने सोचा कि, ये दशा ? ये हाल ? इतनी नौबत.....! आज मसीही कलीसियाओं की दशा इसकदर बुरी और तबाह हो चुकी है। इसकदर कमजोर हो चुकी हैं कि आज जरूरत पड़ने पर किसी को अंतिम मिट्टी के लिये दो गज भूमि भी मिलना कठिन हो गई है। ये सोचते सोचते नीलू का दिल ही दुखने लगा। इस प्रकार कि जीवन में आज वह पहली बार क्षितिज के लिये उदास हो सकी थी। दिल में पहली बार उसके प्रति कोई दर्द उत्पन्न हुआ था।

तब ऐसे में नीलू को क्षितिज की याद आई। बार बार उसका ख्याल आने लगा। मगर अब उसका ख्याल और उसकी स्मृतियों में यूं डूबने

से क्या हो जाना था। वह तो उसकी ज़िन्दगी में पहले ही एक विष का कटोरा उंडेल कर भाग आई थी। इतनी दूर कि अब जैसे उसके पास वापस लौटने का ना तो कोई उद्देश्य ही बाकी रहा था, और ना ही कोई मार्ग ही। दोनों ही को उसने खो दिया था। एक को लापरवाहियों में और दूसरे की कोई कद्र न जानते हुये।

क्षितिज चार दिनों तक नीलगणि से जब नहीं लौटा तो नीलू उसके वापस आने की प्रतीक्षा करने लगी। सांवतबाड़ी की सारी मसीही बस्ती ही उसकी वापसी की राह ताक रही थी। शायद सब ही ये जानना चाहते थे कि वास्तव में उसकी मां के दफन का क्या हुआ ? यदि उनको कहीं भी दफनाने के लिये स्थान नहीं मिल सका होगा तो फिर क्या हुआ होगा ? इसी प्रकार की सोचा विचारी में तीन दिन और सरक गये। नीलू के साथ साथ समस्त मसीही बस्ती के लिये ये प्रश्न केवल एक प्रश्न बन कर ही समाप्त होने लगा। ना तो क्षितिज वापस आया और ना ही उसकी मां के दफन की कोई सूचना ही। नीलू सोचती रही। केवल विचारों के ताने बानों में ही उलझी रही। बहुत दिनों तक।

फिर एक रात।

क्षितिज को नीलगणि गये हुये तीन सप्ताह से अधिक हो चुके थे। नीलू अपने दिल की उदासियों के साथ बाहर घर के दरवाजे पर खड़ी थी। रात्रि के लगभग नौ बज रहे होंगे। मसीही बस्ती के अधिकांश लोग सोने की तैयारी करने लगे थे। सर्दी आने के दिन आरंभ हो चुके थे। आकाश से चन्द्रमा भी शायद मसीहियों की इस बस्ती में छाई मनहूस चुप्पी और उदासी को देख देख कर कई दिनों के लिये अपना मुंह छिपा कर न जाने कहां चला गया था। अमावस्या की काली रात जैसे सब ही को खा जाने वाली निगाहों से घूरे जाती थी। आकाश में केवल कुछेक नादान तारिकायें ही रात के इस भयानक अंधकार को मिटाने का एक असफल प्रयास कर रही थीं।

नीलू अभी भी खड़ी हुई थी। अपनी पूर्व मुद्रा में। चुप। बिल्कुल शान्त। खामोश। किसी पत्थर की बेजान मूर्ति के समान। अनायास ही उसकी आंखें बस्ती के बाहर निकलने वाली सड़क की ओर अपने आप उठ जाती थीं। शायद इस उम्मीद पर कि कोई आता हो।

अभी वह देख ही रही थी कि तभी अचानक से चौंक गई। देख कर दिल उसका एक बार धड़क कर ही रह गया। बस्ती के बाहर जाती हुई सड़क पर सचमुच कोई मानव छाया बस्ती की ओर ही चली आती

थी। नीलू ने उस छाया को देख कर तुरन्त ही पहचान लिया। उस छाया की चाल देख कर ही वह समझ गई। आने वाला क्षितिज था। केवल क्षितिज ही। नितान्त अकेला और बिल्कुल अकेला। फिर नीलू उसको देख कर तब और भी आश्चर्य से गड़ गई कि आज क्षितिज अपने घर की तरफ न जाकर उसी के घर की ओर चला आता है। न जाने अपने दिल में कौन सा विचार, कौन सी धारणा और न जाने कैसा ध्येय लेकर ? वह देखती रही। सोचती रही। क्षितिज आया। उसके पास ही आता गया। नीलू की धड़कनें भी बढ़ती गईं। तब क्षितिज उसके दरवाजे के पास ही आकर खड़ा हो गया। बिल्कुल चुप। गंभीर और सूना सूना सा।

" नीलू....तुम..... ! "

" हां.... मैं ही। " नीलू ने दबी दबी आवाज में कहा।

" चलो, अच्छा ही हुआ। मैं तुमसे ही मिलने आया था। "

" मुझसे.....? " एक अविश्वास के साथ नीलू ने आश्चर्य से कहा तो क्षितिज बोला कि,

" हां, तुम से ही। "

" चलो। घर में अन्दर नहीं चलोगे। अब तो सबकी विचार धारायें तुम्हारी ओर से काफी कुछ बदल चुकी हैं। " नीलू ने कहा तो क्षितिज ने तुरन्त ही मना कर दिया। वह तपाक से बोला कि,

" नहीं। "

" क्यों.... ? "

" जिस घर के दरवाजे मेरे लिये बहुत पहले ही बंद हो चुके हों वहां मुझे जाने की आवश्यकता भी क्या हो सकती है। "

" क्षितिज..... ! " नीलू जैसे तड़प कर ही रह गई। क्षितिज ने लगने वाली बात कह कर सीधे उसकी नर्म भावनाओं पर चोट कर दी थी। वह फिर जैसे अपनी तड़प को छिपाते हुये उससे बोली कि,

" तो फिर यहां क्या लेने आये हो ? "

" बंद दरवाजों के अन्दर अंतिम बार झांकने के लिये। "

" इसकी भी क्या आवश्यकता थी। मैं तो जी ही रही थी। " नीलू ने गंभीर होते हुये निर्लिप्त भाव से कहा तो क्षितिज गंभीर होकर बोला कि,

" अपने रूप की वह आखिरी झलक दिखाने के लिये कि जिसको तुम अब फिर कभी भी जीवन में शायद दोबारा नहीं देख पाओगी। "

" क्या मतलब.....? " नीलू अचानक ही चौंक गई। रात्रि के अंधेरे में भी उसने क्षितिज के चेहरे के भाव पढ़ने की चेष्टा की।
" कल तक तुमने केवल मेरी शराफत देखी थी। परन्तु अब....." क्षितिज कहते हुये अचानक ही थमा तो नीलू घबराते हुये आश्चर्य से बोली कि,
" अब.....अब क्या....? "
" मेरी नफरत और घृणा भी देख लेना। "
" क्षितिज...? जानते हो कि तुम एक मसीही और पादरी के लड़के हो ?"
" जानता हूं। "
" तो फिर ये गंदी भावनायें तुम्हारे दिल में कैसे आने लगीं ? किस प्रकार तुम्हारे दिल में ये शैतानी कार्य और उसकी युक्तियां आ गईं ? "
" इंसान की पवित्र भावनाओं पर जब बेईमानी, नफरत और जलस का कुठाराघात बिना कारण ही चलने लगे तो फिर वहां पर घृणा, क्रोध और इंतकाम की चिंगारियां अपने आप ही जन्म ले लेती हैं। "
" कलवरी.....? "
" मत लो इस नाम को अपनी जुबान से। "
" तुम्हारा नाम क्षितिज कुमार 'कलवरी' है। "
" 'कलवरी' की पवित्र सलीब पर बेगुनाहों का कत्ल करने वालों को मेरी बन्दूक कब्रिस्थान की तन्हाइयों में हमेशा के लिये दफन कर देती है। शर्म आनी चाहिये मरे हुये लोगों के बसेरों का सौदा करने वालों को। इसीलिये मैंने उनको कब्रिस्थान पहुंचाने की कसम खाई है। "
"!! " ख़ामोशी। गहरी ख़ामोशी। नीलू जैसे भय के कारण अन्दर ही अन्दर कांप गई थी। जीवन में पहली बार उसने क्षितिज का इस प्रकार से तमतमाता हुआ चेहरा देखा था। वह चुप हो गई। उससे कुछ भी नहीं कहा जा सका।
" नीलू। " थोड़ी देर के मौन के पश्चात ही क्षितिज ने आगे कहा तो नीलू ने कहा तो कुछ नहीं बल्कि वह चुपचाप उसकी ओर देखने लगी। तब क्षितिज ने अपनी बात आगे बढ़ाई। वह बोला,
" तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा जो इस समय हूं। 'क्षितिज' के जब सारे अरमान टूट जाते हैं तो वह फिर अपना सिर उठाना भूल जाता है। और जब वह धरती की नीचाइयों में आकर शरण लेता है तो उसका रूप और वह स्वंय किस सीमा तक गिर भी सकता है, शायद तुमने कभी इस बात

की कल्पना भी नहीं की होगी। सहन करने की भी एक हद होती है। मैंने बहुत कुछ सहन करके देख लिया है। अब और अधिक सहन करना मेरी बर्दाश्त की सीमा के बाहर है।"

" क्षितिज.....! ये तुम क्या कह रहे हो। मैंने तुमसे ऐसी उम्मीद तो कभी भी नहीं की थी।" नीलू जैसे तड़प गई।

" मैं वही कह रहा हूं, कि जिसे तुमको सुनना है। मैं तुमसे यही सब कहने आया था, और अब जाता हूं।"

" जाते हो, लेकिन कहां ?"

" मैंने अपनी मां के जिस्म को यमुना के किनारे शोलों में फूंका है। अब जा रहा हूं उस स्थान की शरण में, जहां पर कि लोग अन्याय पर अन्याय सहने के पश्चात एक दिन बेबस होकर कानून को अपने हाथ में लेकर चले जाते हैं। चम्बल में एक बागी की हैसियत से।"

" नहीं... नहीं.....हीं....हीं.....' नीलू की चीख ने अचानक ही सांवतबाड़ी की सारी मसीही बस्ती की दीवारों का कलेजा हिला कर रख दिया। इस प्रकार कि आस पास के घरों में से लोग अचानक ही बाहर निकल कर देखने लगे .....'

.....अचानक ही सांवतबाड़ी के हस्पताल में नर्सिस हॉस्टल के रोज़ गार्डन में खड़ी हुई कई एक नर्सों ने जो नीलू की चीख सुनी तो सब की सब घबराते हुये उसके पास आ पहुंची। सबने आश्चर्य से उसे झकझोरते हुये पूछा,

" क्यों क्या हुआ तुझे अचानक से। तू ठीक तो है न ?"

" !! " नीलू ने कहा तो कुछ नहीं। वह केवल अपनी उदास और आंसुओं भरी आंखों से अपनी सखी नर्सों को निहारने लगी। एक विस्मय के साथ। बड़ी ही हैरत के साथ।

" अरे, तेरी आंखों में तो आंसू हैं।" एक ने कहा तो नीलू चुपचाप अपने स्थान पर खड़ी हो गई। फिर जेब से रूमाल निकाला और अपना चेहरा पोंछने लगी। उसके चारों तरफ खड़ी हुई नर्सों ने उसको एक बार फिर आश्चर्य और विस्मय के साथ देखा। उसके रोने का कारण जान लेना चाहा और फिर उससे दोहराया,

" क्यों नीलू, तू बताती क्यों नहीं है ? क्या हुआ तुझे अचानक से ? रोती क्यों है ?"

'' कुछ नहीं। ऐसे ही कुछ याद आ गया था।'' नीलू ने अपने भरे भरे गले से कहा तो क्षण भर को सब फिर मौन हो गईं। ख़ामोशी के साथ वे सब उसका मुखड़ा देखने लगीं। मगर फिर भी कोई उसकी आंखों में आये हुये आंसुओं का कारण नहीं जान सका। सब ही उसके दिल के दर्द से अनभिज्ञ थीं। अनजान और बेख़बर। किसी ने भी उसके दिल में बसी ढेरों ढेर उदासी को महसूस नहीं किया था। लेकिन उसके दिल की गहराइयों में कितना दर्द था। किसकदर वह मायूस और उदास थी ? ये वह जानती थी और उसका दर्दभरा दिल।

कुछेक क्षण यूं ही प्रश्नों और विस्मय में डूबते हुये व्यतीत हो गये। नीलू की उदासी और उसके अनायास रोने का सबब उसके पास आई हुई नर्सों में से कोई भी नहीं जान सका। साथ ही जैसे किसी ने भी इस बात पर अधिक विचार विमर्श भी नहीं किया। सब ही ने उसके दिल की कोई क्षणिक आकस्मिक घटना समझते हुये अपने अपने मस्तिष्कों में से बाहर निकाल दिया। निकाल दिया तो वे सब ही नीलू को उसी के हाल पर अकेला छोड़ कर हॉस्टल की ओर खिसक गईं। कोई भी उसके दुख और उसके मन के कोने से कहीं बाहर आने को उत्सुक उसकी पीड़ा को नहीं जान और समझ सका था।

सांवतबाड़ी के इस मशहूर हस्पताल में मनुष्यों की भीड़ का तांता लगातार बढ़ता जा रहा था। पुलिस के सिपाही बड़े ही चौकन्ने और सतर्क होकर हस्पताल के चारों ओर घूम रहे थे। मनुष्यों की जमा भीड़ के हरेक रेले में, हर चेहरे पर एक विशेष चमक और कौतुहल था। हर किसी के मुख पर उत्साह, उमंग और एक बेमतलब के बसे हुये मनोरंजन के लक्षण दिखाई देते थे। मगर नीलू..? उसका तो जैसे सारा चैन ही न जाने कहां जाकर खो चुका था। कोई भी उसके मन की उदासी का कारण नहीं जानता था। वह रोज़गार्डन में अभी भी अकेली खड़ी हुई थी। बिल्कुल तन्हा। अपने विचारों और सोचों में फिर से लीन और गंभीर होती हुई। अपने दिल में अपने अतीत का वह दर्दभरी यादों का टुकड़ा संभाले हुये कि जिसे उसने एक दिन कोई भी परवाह न करते हुये राह चलते हुये कोई भी आवश्यकता की वस्तु न सोचते हुये बाहर फेंक दिया था।

अपने दिल की उदासी के साथ साथ नीलू को गार्डन का हरेक फूल तक उदास और फीका फीका नज़र आने लगा था। उसके दुख और पीड़ा को महसूस करते हुये पेड़ों के साये तक ख़ामोशी से अपना मुंह

लटकाये हुये चुपचाप खड़े थे। हवाओं में भी कोई चंचलता नहीं दिखाई देती थी। केवल आकाश में आवारा बादलों के काफिले, बेजान हवाओं के सहारे न जाने कौन से देश की यात्रा की होड़ में धीरे धीरे सरकते चले जाते थे। तौभी बादलों के इसी काफिलों के कारवां में, उनसे दूर और भटका हुआ सा एक अलग बादल का टुकड़ा ऐसा भी था जो कि अपने साथियों से बिल्कुल अलग थलग किनारे होकर चुपचाप चला जा रहा था।

नीलू को याद आया कि, एक दिन था जब कि वह भी सांवतबाड़ी से अपने सम्बन्धियों और क्षितिज को कहीं दूर छोड़ कर यहां नर्सिंग के प्रशिक्षण में आ गई थी। प्रशिक्षण समाप्त करने के पश्चात अब वह इसी हस्पताल में पिछले सात वर्षों से मरीजों की सेवा कर रही थी। तब से न जाने कितने ही दिन और क्षण बीत चुके थे। उसकी उम्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मरीजों की सेवा में व्यतीत हो चुका है, उसे तो अनुमान भी नहीं था।

हस्पताल का वातावरण मनुष्यों की भीड़ से अब तक खचाखच भर चुका था। वातावरण के हरेक कोने में बातों का हुजूम जैसे कोई आवारा और लापरवाह व्यक्ति बन कर टहलने लगा था। मनुष्यों के चेहरों पर कोई खुशी नहीं थी, तो दुख भी नहीं था। मगर इस अचानक से हुई घटना के प्रति सचेत और उत्सुक अवश्य ही थे। सब ही के होठों पर कुख्यात डाकू 'कलवरी' के जीवन के सच्चे झूठे, हर तरह के अफसाने थे। सब ही उसी के बारे में बातें कर रहे थे।

नीलू ने रोज़गार्डन की ख़ामोशियों के सहारे दूर हस्पताल के उस विशेष बार्ड के विशेष कमरे की ओर देखा जिसमें उसके अतीत का बिछुड़ा भटका उसका क्षितिज कल रात ही पुलिस की रायफल की गोली से घायल होकर एक कुख्यात डाकू की हैसियत से बन्दी बनाकर यहां लाया गया था। पुलिस अभी भी उस क्षेत्र से भीड़ को दूर हटाने में व्यस्त थी। और भीड़ का हरेक उत्सुक व्यक्ति भी शायद इस मशहूर डाकू क्षितिज कुमार 'कलवरी' के चेहरे की एक झलक देख लेना चाहता था। मगर अपने अफसोस और भाग्य की मारी नीलू..... ? वह तो चाहते हुये भी उसे देख नहीं सकती थी। बहुत चाहते हुये भी वह उसके सामने भी नहीं जा सकती थी। वह जानती थी कि यदि वह जाती भी तो अपने किस मुंह और अधिकार से ? ये अधिकार तो वह वर्षों पूर्व ही समाप्त कर आई थी। उसी ने तो एक दिन क्षितिज को बीच मार्ग में अकेला और तन्हा छोड़ कर

बेगाना बना दिया था। वही तो उसे दर दर भटकने के लिये दूर छोड़ आई थी। छोड़ आई थी_____शायद इस लिये कि एक दिन वह उसकी बरबादियों की अर्थी पर अपनी असफल मुहब्बतों के दीप सुलगा सके। इसीलिये उसने वह सब किया था, कि जिसे उसे कभी भी नहीं करना चाहिये था। वह नहीं जानती थी कि ऐसा हो भी चुका है। जिस बात को वह कभी सपने में भी नहीं सोचती थी, आज वही उसकी ज़िन्दगी की एक कड़वी हकीकत बन कर उसका जैसे दम घोंटने चली आई थी। आज उसकी आंखों ने क्षितिज की बरबाद मुहब्बत का अंतिम अंजाम भी देख लिया है। कल का उसकी यादों में भटकने वाला_____उसके प्यार की पूजा करने वाला_____उसको दिल से चाहने वाला..... उसका पुजारी, उसका क्षितिज.....! आज एक कुख्यात डाकू भी बन सकता है .... .? ..... सोचते सोचते नीलू के दिल का दर्द पहले से भी अधिक बढ़ गया। इतना अधिक कि कलेजे में जैसे एक टीस सी उठ कर रह गई। वह जानती है कि कल और आज में कितना बड़ा अन्तर था। कितना अधिक वह कल के अतीत से दूर आ गई थी। कल का क्षितिज..... । सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती का एक मसीही सभ्य युवक क्षितिज.....? और आज का क्षितिज.....? आज की एक कड़वी कसैली वास्तविकता....!! सोचते सोचते नीलू की आंखों से स्वतः ही आंसू किसी माला की बिखरती हुई कड़ियों के समान टूट टूट कर बिखरने लगे। गला भर आया। इसकदर कि वह फिर से फूट फूट कर रो पड़ी। रोते रोते उसके दिल में आया कि वह अपना गला ही दबा डाले। यहीं अपना सिर पटक दे। पटक पटक कर अपनी जान ही दे दे। क्षितिज को एक डाकू के रूप में देखने से पहले वह मर क्यों नहीं गई थी। ये क्यों हुआ। क्यों उसके सामने ही हुआ। क्यों.? क्षितिज क्यों एक डाकू बना ? क्यों वह अपना बिगड़ा हुआ रूप लेकर इसी हस्पताल में आया ? क्यों ....? आख़िर क्यों.. ... ?

नीलू से जब नहीं सहन हो सका तो वह फिर से फफक फफक कर रो पड़ी। रोज़गार्डन के एक कोने में बैठ कर वह बड़ी देर तक रोती ही रही। इस प्रकार कि गार्डन का हरेक फूल तक जैसे उसके साथ साथ सिसकने लगा था। मानो नीलू के दर्द के साथ ही गार्डन के फूलों का दर्द भी उसका हमदम बन कर साथ देने का प्रयास करने लगा था।

आकाश के दूर कहीं बहूत दूर सफर में बादलों की टोलियां न

जाने कहां से चली आती थीं और न जाने कहां भटक जाना चाहती थीं। हवाओं के सहारे, बादल का हरेक टुकड़ा नीलू के दिल के दर्द का हाल पूछे बगैर अपनी ही यात्रा पर चला जाता था। सांवतवाड़ी के इस हस्पताल का हरेक कोना तक आज नीलू के लिये उसकी ज़िन्दगी की भरपूर उदासियों का भंडार बन कर रह गया था। एक ऐसा भंडार कि जिसे अब हर समय दुख के लबादों से भरना ही था, कम नहीं होना था। हर स्थान उदास था। हरेक वस्तु नम और भीगी दिखाई देती थी। और इसी उदास वातावरण की सिसकियों तथा ख़ामोश वृक्षों की मूकता के सहारे नीलू अपने कटु अतीत की हर याद.....यादों की एक एक बात तथा बीते हुये दिनों की हरेक स्मृति को यहां नर्सिस हॉस्टल के बने हुये खुबसूरत रोज़गार्डन में बैठे बैठे फिर से दोहरा गई थी। उसके जिये हुये दिन उसकी यादों की एक हल्की सी रेखा बन कर आये थे और यादों के ज़ख्मों की एक मोटी लकीर बन कर चले भी गये थे।

उसका बीता हुआ पल। जिये हुये दिनों की वे यादें कि जिन्हें यदि वह चाहती तो सारे जीवन की खुशियों का कभी भी न बुझने वाला चिराग बना सकती थी, मगर उसकी लापरवाही और स्वछन्द विचारों की आवारापरस्त ज़िन्दगी के कारण उसके ग़मों का एक ऐसा हर समय सुलगता हुआ अंगार बन गई थीं कि, जिन्हें अब वह जब भी याद करेगी तो रोयेगी और केवल रोयेगी। अपने जीवन के रोशन चिरागों को तारीकी में बदलने और अंधकार में धकेलने का दोष वह दे भी किसे सकती थी ?

मानव जीवन और प्यार की कोमल और नाजुक भावनाओं को सदैव ही एक खेल समझने वाली नीलू के लिये आज का वह दिन था कि जिसको अपने सामने देख कर वह आज सचमुच में इंसान और उसकी भावनाओं का मूल्य जान चुकी थी। मनुष्य के साथ उसके जीवन से खिलवाड़ करने का सबक भी उसको मिल चुका था। ये और बात थी कि मुसीबतें और परेशानियां तो किसी दूसरे ने ही उठाई थीं, और भविष्य में उठायेगा भी ; मगर थोड़ा थोड़ा करके रोज़ ही मरने की सजा तो वह खुद ही पूरी करेगी।

# कलवरी के आंसू

## द्वितीय परिच्छेद

रात्रि के लगभग आठ बजे, जब कि वृक्षों के पीछे से चन्द्रमा ने उचक कर नीचे धरती को देखा तो सारी मानव धरती उसके हल्के हल्के दूधिया प्रकाश में सर-ब-तर हो गई। फिर कुछेक क्षणों के बाद ही उसकी कमसिन और नाजुक रश्मियों ने वृक्षों के पीछे से उनकी पत्तियों व डालियों पर अपनी कमजोर चांदनी का जाल बुनना आरंभ कर दिया तो धीरे धीरे प्रकृति का सारा वातावरण दूधिया प्रकाश में नहाने के लिये अपने आपको जैसे तैयार करने लगा।

रात का माहौल ख़ामोशी और चुप्पी में डूबने लगा था, तथा इसके साथ ही विशाल यमुना नदी का उसके किनारों तक लबालब भरा हुआ जल मानों इस दूधिया चांदनी का सहारा पाकर अपने स्थान पर धीरे धीरे थिरकने सा लगा था। अपने भरपूर यौवन से लदी हुई पूरे चन्द्रमा की किरणें यमुना की मजबूत लहरों में टूट टूट कर गिर रही थीं। इसी बीच वायु के प्रभाव ने अपने बदन को और भी अधिक तोड़ा तो यमुना की लहरें पहले से भी अधिक कांपने लगीं। हर पल बढ़ती हुई रात की हवाओं में तेजी के आसार थे। यमुना नदी के आस पास का सारा बीहड़ी इलाका निहायत ही वीरान और सूनसान नज़र आता था। दूर दूर तक उसके किनारे दो एक जलती हुई चिताओं के कारण उनके दहकते हुये शोलों से गर्मी के कारण भभक रहे थे। इन चिताओं के गर्म शोलों में उन लोगों की कहानी थी, जो ये बताना चाहती थी कि इंसान का बदन उसके जीवन का वह हश्र है जो अपने तरह तरह के विभिन्न रूपों से गुज़रता हुआ किस प्रकार से राख़ और धुंआ बन कर सदा के लिये लोप हो जाता है। हर तरफ मृत्यु का भयानक और भयावह सन्नाटा भरा हुआ था। सारे वातावरण में चारों ओर बिखरी हुई मनहूस ख़ामोशी ने हर आवाज को जैसे अपने प्रबल पंजों के नाखूनों से दबा रखा था।

हवाओं के सहारे, हाथों में बहुत संभाल कर थामे हुये बेला के

सफेद फूलों की सुगन्ध ने जब यमुना के किनारे बैठे हुये क्षितिज के नथुनों में प्रवेश किया तो उसको अपनी दशा का बोध हुआ। वह अभी तक यमुना के जल के किनारे बैठा हुआ था। आगरा शहर की बस्ती से बहुत दूर और अकेला____ख़ामोश____अपने में गुमसुम, बहुत ही गंभीर, निराश और अपनी उदास कामनाओं की लाश को अपनी ही पीठ से बांधे हुये वह अपनी प्यारी मां की चिता की लपटों के सामने जैसे अपने सारे बेवफा मुकद्दर का तमाशा लगाये हुये था। दिल के अन्दर उसके दर्दभरी उदासियों के गमज़दा आग के शोले सुलग रहे थे। उसके होठों पर अपना दुख ब्यान न कर सकने वाली आहें थीं। गले में दुखभरी आवाज़ और आंखों के सामने उसके अचानक से बदले हुये समय के रूख़ तथा बिगड़ी हुई किस्मत की हाथ की रेखाओं की उजाड़ हालत थी। अपने सामने ही वह अपने अरमानों की दहकती हुई चिता को लगातार देख रहा था। अपनी प्यारी मसीही मां का ऐसा अनहोना अंतिम संस्कार कि जिसे मरने के पश्चात केवल दो गज जमीन भी न मिल सकी थी। एक ऐसी अंतिम यात्रा का दृश्य कि जो भी सच्चा मसीही यदि एक बार देख ले तो उसका भी कलेजा फट जाये। कितना भी पत्थर वह क्यों न हो; धार्मिक मसीहियत से भरी आस्थाओं का ऐसा हश्र देख कर वह भी पिघल जायेगा। सो ऐसी थी, क्षितिज की मां की आख़िरी यात्रा की तस्वीर। उसका अंतिम रूप और आख़िरी दर्शन कि, जिसने उसे पल भर में ही बहुत कुछ सोचने और करने को बाध्य कर दिया था।

सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती का कब्रिस्थान बिक जाने के कारण जब क्षितिज को कोई अन्य स्थान तथा उपाय नहीं मिल सका था तो वह अपने मित्रों के कहने पर अपनी मां के शव को आगरा इस आशा पर ले आया था कि यहां उसे अवश्य ही किसी कब्रिस्थान में कोई न कोई स्थान जरूर मिल जायेगा। मगर जब वहां भी कोई बंदोबस्त न हो सका तो वह अपनी मां के दफन के लिये चिन्तित हो गया। यहां उसकी कोई विशेष जान पहचान भी नहीं थी। मिशन की अधिकांश भूमि और संपत्ति उसके यहूदाओं ने बेच कर पराई कर दी थी। कहीं भी उसको कोई भी अपना नज़र नहीं आ रहा था। ऐसे कठिन और जटिल समय में जैसे उसके अपने भी पराये हो चुके थे। वह सोचने पर विवश था कि, आज सचमुच में मसीह की वह कलीसिया कि जिसे उसकी दुल्हन का ख़िताब दिया हुआ है, उसकी दशा इतनी अधिक नीचे गिर गई थी कि आज उसके पास ज़िन्दगी के

पश्चात मत्यु की गोद में सोने के लिये आख़िरी घर भी बाकी नहीं बचा था। मसीहियत के नाम पर बैठे हुये लालची और स्वार्थी तबकों ने कब्रिस्थान तक बेच डाले थे। सो ये था, उस मसीही कलीसिया का वास्तविक रूप कि जिसको हमारे मसीह यीशु ने अपने पाक लहू से सींचा और ख़रीदा था। ये उस मसीही समाज की बिगड़ी हुई ख़राब तस्वीर थी कि जिसको बनाने और सजाने के लिये परमेश्वर के भक्तों ने अपने जीवन तक लुटा दिये थे। अपना सारा कुछ दे दिया था, केवल इस आस पर कि एक दिन जब भी मसीहा आयेगा तो अपनी दुल्हन को देख कर ख़ूब ही प्रसन्न होगा।

तब इस प्रकार हर तरह की आस और उम्मीद में जब समय अधिक बीतने लगा तथा क्षितिज की मां के लिये दफन का कोई उपाय नहीं हो सका तो फिर अपनी बिगड़ी हुई किस्मत का बिगड़ा हाल देख कर क्षितिज की आंखों में स्वतः ही आंसू आ गये। वह अपने मुकद्दर और मजबूर हालात को बेबस पाकर फूट फूट कर रो पड़ा। रो पड़ा इसलिये कि आज वह बहुत कुछ चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता था। मजबूर था इसलिये कि हर तरह से प्रबन्ध करने के बाद भी वह अपनी मां के अंतिम संस्कार के लिये दो गज जमीन नहीं मोल ले सकता था। अपनी मां के अंतिम संस्कार के लिये वह आज कितना अधिक बेबस था, ये वह जानता था और उसका मजबूरियों का मारा दिल। कितना अधिक बेबस था वह। किसकदर वह कमजोर हो गया था, अपने ही आप में। आज का दिन उसके लिये इतना अधिक ख़राब निकला था कि वह आज अपनी मां की मृत्यु के पश्चात भी उनके लिये कुछ भी करने को मोहताज हो गया था। जब कि उसे याद था कि अपने जीवन में ही उसकी मां ने कितने प्यार से उससे ये वादा ले लिया था कि उनके मरने के बाद वह उनकी कब्र अपने पिता की कब्र के बगल में ही बनवायेगा। वह जानता था कि ये उसकी मां की हार्दिक इच्छा थी। मगर आज हर तरह से बिगड़े हुये समय की धाराओं ने उसके अरमानों की हरेक उम्मीद को डुबो दिया था। बड़ी निर्दयता से उसकी समस्त इच्छाओं का गला घोंट डाला था। उसको कदम कदम पर मारा ही नहीं बल्कि उसको जगह जगह से तोड़ कर रख दिया था। इतना अधिक निर्बल कर दिया था कि वह अपनी मां की इस अंतिम इच्छा को भी पूरा नहीं कर सकता था। वह जानता था कि ये उसके जीवन की कोई भी हार न होकर उस मसीही कलीसिया के पतन की वह काली

तस्वीर थी कि जिसको पालने और संवारने के लिये उसके पिता के ही समान न जाने कितने पादरियों, प्रचारकों और ख़ुदा के भक्तों ने अपने जीवनों की परवाह नहीं की थी। क्षितिज की आंखों में ठहरे हुये बेबसी और निराशा के आंसू उसके अपने न होकर उत्तरी भारत के बहुतेरे वीरान गिरजाघरों के वे काले आंसू थे कि जिनकी एक एक बूंद में परमेश्वर के दगाबाज ढोंगी अनुयायियों के काले कारनामें लिखे हुये थे। ऐसे आंसू, ऐसी बेबसी कि जिसके कारण एक मसीही युवक के दिल की सारी आशायें निराश लालसाओं के बुझते हुये दीप बन कर रह गई थीं। आज उसके हाथों में कुछ भी तो नहीं रह गया था। सारा का सारा छिन गया था। छिन गया था, उसका प्यार, उसकी ममता, और उसका वह भरोसा और अपनत्व कि जिसके कारण वह मिशन में रह कर कभी फूला नहीं समाता था। बिगड़े हुये वक्त की बदमिजाज तस्वीरों ने उसको अपना वह रूप दिखाया था कि जिसके कारण वह आज कहीं भी शर्म के कारण अपना मुंह भी नहीं छिपा पा रहा था। उसे लगता था कि आज वह जी भर के लुटा ही नहीं है बल्कि ख़ुद में समाप्त हो चुका है। उसका सहारा, मां का अंतिम सिर पर फैलने वाला साया तथा वह प्यार कि जिसके सहारे ही वह आज तक जी रहा था। समय की बूढ़ी और ज़र ज़र होती अवस्था ने अपने एक ही झपट्टे में उसका सब कुछ छीना ही नहीं था, बल्कि उसकी झोली भी फाड़ दी थी। आज वह जैसे फिर एक बार हार गया था। हार गया था, उस शैतान से जो कि वर्षों से हमारे मसीही समाज को किसी ढहते हुये कगार का उजड़ा हुआ रूप देने का जी तोड़ प्रयत्न किये जा रहा है।

फिर जब क्षितिज की हर एक आशा और उम्मीदों ने अपना कफन ओढ़ लिया तो फिर उसने बहुत ही विवश होकर अपने गैर मसीही मित्रों के सुझाव पर तथा उनकी सलाह मान कर अपने दिल पर विवशता का भारी पत्थर रखते हुये अपनी मां के शव को यमुना के डूबते हुये किनारों पर चिता का रूप दे दिया। अपनी उस मसीही मां को उसने चिता के शोलों में दहका दिया, जिसने कभी अपने जीते जी उस पर धूप तक नहीं पड़ने दी थी।

क्षितिज इन्हीं सारी बातों को, अपनी मां की लाल शोलों में दहकती हुई चिता के करीब बैठा हुआ सोचे जा रहा था। जलती हुई चिता के अंगारों के समान ही उसके बदन के अंदर जजबातों के कारण उबलता हुआ उसका जवान ख़ून भी जलने लगा था। भावनाओं के उठते हुये

तूफानों के प्रभाव से उसकी आंखों में खूनी अंगारे भविष्य में लेने वाले किसी इन्तकाम की भभकती हुई ज्वाला के कारण जैसे कांपने लगे थे। अपनी प्यारी मां की लाल अंगार होती चिता के समान ही उसके चेहरे की आभा तक लाल हो चुकी थी। इस समय रात भी गहराने लगी थी। यमुना के किनारों पर बसे हुये गांवों तथा आस पास का सारा बीहड़ी इलाका वीरान और सूनसान किसी मुंह बाये विशाल अतिवाहिकिय रूप के समान न जाने किसको निगल जाने के ख्याल से घूर रहा था। गांवों के समान दिखने वाला यमुना का बीहड़ दूर दूर तक बैठे हुये क्षितिज को खतरनाक बागी रास्तों की झलक दिखा रहा था।

रात्रि उदास थी। आकाश पर चांदनी बिखरी पड़ी थी, मगर उसका भी हरेक कतरा जैसे उदासियों की बूंदें बन बन कर टपक रहा था। यमुना का ठहरा हुआ शान्त, लेकिन जैसे बेहद चिन्तित जल भी मानो किसी विछोह के वियोग में धीरे धीरे सिसक रहा था। आकाश के सीने से चिपकी हुई छोटी छोटी नादान तारिकायें भी आज जैसे क्षितिज के दर्द में चुप्पी साध गई थीं। वे भी ख़ामोश और मौन थीं। फिर होती भी क्यों नहीं आज उनका भी 'क्षितिज' उदास था। उसकी समस्त खुशियों का अंतिम वे देख ही रहीं थीं।

सो वातावरण के इस उदास और दर्द भरे माहौल का सहारा पाकर तथा चिता की लपटों में दहकती और तड़पती हुई चिंगारियों को देखते हुये क्षितिज का दिल भी किसी प्रतिशोध की अग्नि में लाल अंगारों के समान दहक उठा था। आज अपनी सारी लालसाओं की अर्थी तथा बनती संवरती ज़िन्दगी के तमाशे को देख उसकी रक्त की शिराओं का खून किसी भयानक बदले की भावना में जल जल कर फड़कने लगा था। शायद यही उसकी शराफत की ज़िन्दगी का सिला था____उसकी सच्चाई के मार्गों पर चलने का परिणाम..... कि, मानवीय प्रेम के रास्तों पर भागते भागते, जमाने के प्यार की आशा में उसे जी भर के नफरत प्राप्त हो गई थी। सदा अपने जीवन के अच्छे प्रदर्शन की चाहत में कोशिश करते हुये आज उसके जीवन का जैसे बदतमीज़ी के साथ खिलखिलाता हुआ मज़मा लग गया था।

आकाश पर चन्द्रमा अपनी छोटी छोटी मासूम और प्यारी प्यारी तारिकाओं के साथ एक ही स्थान पर टिका हुआ क्षितिज की उदासियों को ताकते हुये जैसे खुद भी उदास और नम हो गया था। वह भी क्षितिज के

लिये कुछ भी करने को शायद बेबस हो गया था। प्रकृति का भी हरेक नज़ारा उसकी दयनीय और बेहद दुखभरी दशा को देख देख कर विवश होकर अपना मुंह छिपा बैठा था। यमुना के आस पास का सारा शीतल सूना इलाका किसी मनहूस साये के समान खड़ा खड़ा, वातावरण की सिसकती हवाओं के प्रभाव से भांय भांय कर रहा था। हर तरफ एक गहरी, और संदिग्ध ख़ामोशी छा गई थी। मौत जैसी चुप्पी किसी चोर के समान दबे पांव अपने पैर पसारने में व्यस्त हो चुकी थी।

इसी मध्य क्षितिज ने बैठे बैठे अपनी मां की अंतिम दौर में जलती चिता की ओर देखा। चिता की कमजोर पड़ती लपटों को उसने बड़ी ही गहराई और गंभीरता से निहारा। इतनी देर से जलती हुई चिता की भी लपटें जैसे अब शांत हो जाना चाहती थीं। केवल उसमें भरे हुये शेष अंगारे ही उसके बेदर्दी से स्वाह हुये जीवन की गवाही दे रहे थे। क्षितिज जानता था कि चिता के ये लाल अंगारे भी कुछ समय के बाद अपने आप ही ठंडे पड़ जायेंगे। फिर रह जायेगी उनकी हवा में विलीन होती हुई राख; उसके मां के बदन की ख़ाक___वह भी धीरे धीरे कभी वायु के सहारे उड़ उड़ कर अपने रहे बचे अस्तित्व को सदा के लिये समाप्त कर लेगी। तब उसके पश्चात उसकी मां का इस दुनियां में कोई भी नाम ओ निशान तक नहीं रहेगा। ना ही कोई अवशेष और चिन्ह तक उसे प्राप्त हो सकेगा। थोड़ी बहुत यादें होंगी, वे भी समय की बढ़ती हुई सीढ़ियों के दबाव से कहीं दब कर ही रह जायेंगी।

बैठे बैठे क्षितिज ने जब इस प्रकार से सोचा तो भावनाओं के उतार चढ़ाव के कारण उसकी आंखों में डोरे तैर गये। खूनी डोरे___आंखें जलती हुई चिता के अंगारों के समान ही दहक उठीं। उसकी अन्तरात्मा ने मन में ही कहा कि, ' यदि आज मसीही कलीसियाओं का ये बिगड़ा और सौदेबाजी का बाजारी रूप नहीं होता_____मिशन की गद्दी पर बैठे हुये लालची यहूदाओं ने मसीह यीशु को न बेचा होता_____मसीही समाज और मिशन की सम्पत्ति तथा कब्रिस्थान नहीं बेचे गये होते तो वह क्यों आज अपनी मां की चिता के सामने बैठा बैठा मजबूरी के साथ अपनी कायरता के आंसू बहा रहा होता। यदि मसीही कलीसियाओं की सम्पत्ति की बोलियां नहीं लगाई गई होतीं तो आज उसकी मां की चिता के स्थान पर एक सुन्दर यादगार कब्र बनी होती। उसकी मां को मरने के पश्चात कायदे से मिट्टी दी गई होती। उसकी मां की आख़िरी निशानी_____एक मज़ार_____एक ऐसा

स्थान कि जहां पर मनुष्य चिरनिद्रा में इस आस और विश्वास के साथ सो जाता है कि एक दिन संसार के अन्त के दिन में वह फिर से जी उठेगा। यदि ऐसा होता तो आज उसके हाथों में रखे हुये बेला के सुगन्धित फूल उसकी मां की मज़ार पर रखे गये होते। केवल इस स्मृति में कि कब्र के अन्दर सोने वाला परमेश्वर की उस व्यवस्था और नियम का पालन कर रहा है कि जिसमें कहा गया है कि मनुष्य एक दिन इस संसार की यात्रा पूरी करने के बाद, मृत्योपरान्त पुनः मिट्टी में ही मिल जायेगा। मगर, मिशन के कुछ लालची और स्वार्थी यहूदाओं ने अवसर पाने पर अपने अधिकार का भरपूर लाभ उठा कर मसीही कलीसियों का सारा कुछ बेच डाला था। बेच कर उसे पराया बना दिया था।'

ज़रा तुलनात्मक ढंग से गौर करें, आज की मसीही बस्तियों, कम्पाउंडों और अन्य सम्पत्तियों की दशा और उस समय की दशा जब कि मिशन का प्रबन्ध विदेशी प्रचारकों के हाथों में था। उस समय मसीहियत हर तरफ नज़र आया करती थी, और आज जैसे उस समय के बनाये हुये तन्दूरों में बिज्जुओं का निवास है, और मिशन बंगलाओं में चमगादड़ और अबाबीलें चिपकती हैं। मिशन की लाल ईंटों की कहानी, कोई कहानी न होकर जैसे उन पर किये गये अत्याचार और यातनाओं का रोना लिखा हुआ है। मसीहियत के नाम पर बनाई गई इस सम्पत्ति की ख़रीद फरोख़्त पर यदि तत्काल रोक नहीं लगाई गई तो एक न एक दिन शैतानियत के पंजों में जकड़े हुये व्यापारी मसीह यीशु को फिर से न केवल बेच डालेंगे, बल्कि दुबारा सलीब पर चढ़ाने से भी बाज नहीं आयेंगे।

ठंडी पड़ती हुई चिता के करीब बैठे हुये उदास और नाकाम बने क्षितिज ने अपने लिये सोचा। अपने जीवन के बारे में गौर किया। वर्तमान की परिस्थिति पर फिर से ध्यान किया तो उसे लगा कि अब उसके जीवन में बचा ही क्या है। अब उसका जीना और जिन्दा रहना किसी के भी मतलब का नहीं है। जिसके लिये वह जी रहा था, उसकी आशाओं का जनाज़ा तो वह देख ही चुका है। सोचते सोचते क्षितिज की आंखों में सुलगते हुये ख़ूनी अंगारे फिर से दहकने लगे। दिल में किसी भयानक और ख़तरनाक भावना ने जन्म ले लिया। उसके मस्तिष्क में बार बार कोई दृढ़ होता हुआ संकल्प प्रवेश करने के लिये द्वार खटाखटाने लगा।

चिता के अंगारों को क्षितिज ने फिर एक बार देखा। लगातार वह उन्हें देखता ही रहा। बग़ैर पलकें झपकाये हुये वह एक टकटकी

लगाये रहा। फिर भावनाओं के प्रबल रूप से उठते हुये ज्वार भाटे में बहक कर उसने अपने हाथ में चिता के गर्म लाल अंगारों को भर लिया। किसी दृढ़ संकल्प और कसम की भावना के कारण उसको उनकी जलन और तपिश का तनिक भी एहसास न हो सका। अंगारों को अपनी मुट्ठी में भरे हुये वह उन्हें अपनी आंखों के सामने लाया। बहुत ही करीब। इतना पास कि उनकी लाल गर्मी के कारण उसका भी मुखड़ा पल भर में लाल हो गया। उनकी लालिमा की लाल रोशनी स्वंय उसकी भी आंखें अंगारों समान तपने लगीं। अंगारों की गर्मी की तपन से बेखबर उसने उन्हें और भी कस कर अपनी मुट्ठी में जकड़ सा लिया। जकड़ लिया तो फिर अपने जख्मी दिल की उफान भरी भावनाओं के तूफानों में खोकर वह बोला कि,

' मामा.....! हो सके तो अपने इस बदनसीब बेटे को मॉफ कर देना। मैं वक्त के साथ इतना अधिक मजबूर था, कि चाहते हुये भी आपको दिया हुआ वचन पूरा नहीं कर सका। मैंने आज आपकी अर्थी की चिता तो देख ली है, परन्तु मैं वायदा करता हूं कि आज के बाद अपने जीते जी किसी भी मजबूर मसीही की मां की चिता को नहीं सजने दूंगा। मैं आज के पश्चात वह करूंगा कि जिसके कारण मसीही समाज में हरेक पला हुआ यहूदा अपने मसीह को बेचना भूल जायेगा। आज का समय भावनाओं पर मरने और अपनी मजबूरियों पर आंसू बहाने का नहीं है। हरेक मसीही युवक को कुछ न कुछ करने का है। बैठे रहने और कायर बने रहने से कुछ काम नहीं बन सकेगा। फिर यीशु को छिनते देख उनके शिष्य पतरस ने भी तलवार उठा ली थी। यहोवा परमेश्वर के साये में न जाने कितने ही यहूदियों ने तलवार के बल पर ही अपने द्रोहियों और विरोधियों का नाश किया था। मैं भी अब आने वाले दिनों में वह कदम उठाऊंगा कि जिसके सबब से किसी भी मसीही व्यक्ति की मां की चिता तैयार न हो सकेगी, और ना ही किसी अन्य 'क्षितिज' को अपनी बेबसी से सजे हुये मजबूर आंसुओं का तमाशा बनना पड़ेगा। भूल जाना कि आपने अपने क्षितिज को कभी सच्चाई के मार्गों पर चलने और मर जाने का पाठ पढ़ाया था। उसे नम्रता और सीधाई के पथ पर बढ़ते रहने की शिक्षा दी थी, क्योंकि मैं अब आपके बाद अपने शराफत के लिबास को उतार कर जैसे भी हो सकेगा अपनी मसीही कलीसिया को बिकने और बरबाद होने से बचाऊंगा, और कभी भी किसी 'क्षितिज' की मां की चिता धू धू करके नहीं जलने दूंगा। मैं जा रहा हूं मामा.....। मैं जाता हूं। आपके बाद मैं वह नहीं रहूंगा, जो कि

आपके सामने था। हो सके तो इस बदले हुये क्षितिज कुमार 'कलवरी' को क्षमा कर देना। चम्बल का सूनसान बीहड़ मेरा इन्तजार कर रहा है। उसकी हरेक धूल भरी घाटी मुझे अपने आगोश में लेने के लिये पुकार रही है..... । मुझे क्षमा कर देना मामा..... मॉफ कर देना..... ।'

राजगांव।

छोटा सा गांव। खेतों और बागों के मध्य बसी हुई छोटी सी जगह। शहर से काफी दूर। एकान्त और अकेलेपन के साये में सिमटा हुआ गरीब ग्रामीणों का एक छोटा सा बसेरा। हरे भरे खेतों की लहलहाती बहारों में सजा हुआ राजगांव का प्राकृतिक वातावरण संध्या के सिमटते ही बड़ा ही मनोरम प्रतीत होता था। मगर रात के गहराते ही जैसे सारे गांव का वातावरण इस प्रकार भयभीत हो जाता था कि घर के बाहर कोई पंछी पंख भी मारने से जैसे घबराता था।

हर दिन के ढलने के बाद आज भी सम्पूर्ण गांव को रात्रि की स्याही ने अपने काले रंग से पोत दिया था। गांव के लगभग सब ही कच्चे पक्के मकानों में अंधेरा चुप्पी मार कर बैठ गया था। यदि किसी घर में कोई थोड़ी बहुत रोशनी थी तो वह भी किसी टिमटिमाते हुये दिये या फिर किसी दम तोड़ती हुई लालटेन की कोख़ से आती कमजोर किरणों की। फिर भी इस गांव में नई ईंटों की बनी हुई एक नई कोठी ऐसी भी थी जो कि इस रात की कालिमा में दूर से ही किसी मुगल राज्य के शहनशाह के द्वारा बनाई गई कोई ऐतिहासिक इमारत प्रतीत होती थी। कोठी के अंदर विद्युत का फैला हुआ प्रकाश था, परन्तु उसके बाहर सारे गांव में सन्नाटा इसकदर छाया हुआ था कि ज़रा से खटके को सुनते ही गांव के अंदर रहने वाले हर देशी नसल के कुत्ते एक साथ ही भौंकने लगते थे। उनके शोर मचाते ही गांव के युवा और जवान तो सतर्क होते ही थे, साथ ही सारे माहौल की शान्ति भी जैसे भंग हो जाती थी।

अपनी किस्मत का मारा क्षितिज, अपनी मां की चिता पर ढेरों आंसू बहाने के पश्चात इसी राजगांव के बाहर एक एकान्त का सहारा लिये हुये, चुपचाप बैठा हुआ गांव की इसी शानदार कोठी को दूर ही से ताक रहा था। अपनी आंखों में प्रतिशोध की भावना को अपना साथी बनाये हुये चेहरे पर भरपूर गंभीरता और ख़ामोशी को साधे हुये, दिल में कोई भयानक इरादा लिये हुये वह शाम का अंधेरा पड़ते ही यहां आकर छुप गया था। वह जानता था कि आज वह अपने जीवन का वह सबसे पहला गलत कदम उठाने जा रहा था जोकि एक मसीही युवक को कभी भी नहीं उठाना चाहिये। अपने कंधे पर लटकी हुई कारतूसों की पेटी को उसने अंधकार में देखा तो उसके दिल में बसे हुये भयानक इरादों के चित्र उसकी आंखों में और भी अधिक गहरे हो गये। बार बार वह अपने हाथ में अवैद्य

ढंग से बनाई हुई बारह बोर की एक फुट लम्बी बनी उस बंदूक को देख लेता था जिसे उसने कल ही खरीदा था।

फिर जैसे ही राजगांव में भयानक सन्नाटा छा गया। चारों ओर बसी हुई ख़ामोशी पहले से और भी अधिक मूक हो गई, और आकाश में चन्द्रमा उठ कर बाहर झांकता, उससे पहले ही क्षितिज के साथ उसकी छाया भी उसके साथ साथ कदम बढ़ाती हुई गांव में बनी हुई कोठी की तरफ बढ़ती गई। अपने दिल में खतरनाक इरादों में डूबी हुई भावनाओं को ठहराये हुये वह शीघ्र ही उस आलीशान कोठी में घुस जाना चाहता था, कि जिसे इस गांव के रहने वाले पहले के कभी गरीब, मगर अब धनाड्य समझे जाने वाले मिशन के सेवा निवृत्त यहूदा दास ने बनवाया था। यहूदा दास के लिये ये बड़ी ही अजीब और अनोखी बात देखने में आई थी कि जब वे अपने कार्यकाल के समय मिशन में ही बनी कोठी में, शहर में रहा करते थे, तो उनकी कोठी के बाहर उनका चौकीदार रात में उनकी हिफाजत करता था, मगर यहां अपने गांव में आने के पश्चात कोई भी उनकी कोठी के बाहर नहीं सोता था। शायद इसका कारण यही हो सकता था कि राज गांव में उनका अपना घर था। ये जन्म भूमि थी। सारा इलाका क्या, यहां तक कि वनस्पति की हरेक पत्ती तक उनको पहचानती थी। यहां उन्हें भय भी किससे और क्यों हो सकता था। यहां की बहने वाली मौसमी हवाओं तक से उनकी जान पहचान थी। अपने गांव में वे जिधर भी निकल जाते थे, उधर ही न जाने कितने हाथ उनको सलाम के लिये उठ जाते थे। फिर मिशन से आने के बाद उन्होंने अपने ही गांव के खेत खरीद कर अपनी जायदाद तो बढ़ाई ही थी, साथ ही एक प्रकार से आस पास के गांवों में ज़मीदार के रूप में सुप्रसिद्ध भी हो गये थे। ये एक अजूबा ही था कि कभी अपने ही घर में नंगे पैरों चलने वाला गरीब घर का बच्चा आज ज़मीदारों की हवेली का वारिस हो गया था। ईसाई समाज में इस प्रकार की सम्पन्नता को परमेश्वर की आशीष या खुदा की बरकत बोला जाता है। अब ये और बात है, कि कौन जानता है कि सचमुच में इस प्रकार की बरकत परमेश्वर की ही तरफ से भेजी गई है, या फिर कहीं और से...? ये तो स्वतः ही सोचने वाली बात है कि हरेक का अपना अपना ढंग होता है, अपने परमेश्वर की सेवा करने का। कोई इस सेवा के लिये अपना घरबार, खेत खलियान और अपनों को ही त्याग देता है, तो कोई इस सेवा की आड़ में अपना पेट भरने की हवस में दूसरों का ही घर

ख़ाली कर देता है। बग़ैर इस बात का ख्याल किये हुये कि दूसरों पर इसका कितना और कैसा प्रभाव पड़ सकता है।

फिर रात के लगभग ग्यारह बजे जब कि रात की ख़ामोशी राजगांव में पसरे हुये सन्नाटे का सहारा लेकर और भी अधिक वीरान हो गई तो यहूदा दास की कोठी के बाहर एक अरहर के खेत में छुपे हुये क्षितिज ने अपने दबे दबे से कदम बाहर निकाले। उसके पश्चात वह सीधा ही धीरे धीरे एक आगुन्तक के समान उसकी कोठी के मुख्य द्वार पर जा पहुंचा। जाते ही वहां कुछेक पल ठहर कर उसने आस पास के माहौल का निरीक्षण सा किया, फिर धीरे से उसने दरवाजे पर दस्तक दी।

" खट....खट.....खट.... ।"

" ख़ामोशी।"

अन्दर से किसी ने भी उसकी दस्तक का जब कोई भी प्रत्युत्तर नहीं दिया तो क्षितिज ने फिर एक आशा भरी दृष्टि से दरवाजे की दरार में से अन्दर झांक कर देखने का प्रयास किया तो उसे कुछ भी नज़र नहीं आया।' शायद घर के सब ही लोग बड़ी ही जल्दी सो चुके हैं।' ऐसा अनुमान किये हुये उसने फिर से दरवाजा खटखटाया।

" खट.....खट.... ।"

तब उसके कुछेक क्षणों के पश्चात ही अन्दर के कमरे में विद्युत का प्रकाश हुआ। किसी ने एक बार खांसा तो बाहर खड़े हुये क्षितिज ने अपने बदन पर ओढ़े हुये कम्बल को और भी ढंग से लपेट लिया। इसी बीच कोई अन्दर दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया था। तब किसी ने अन्दर से ही पूछा कि,

" कौन.....? " वे शायद यहूदा दास ही थे।

" मैं.... ।" क्षितिज ने बाहर से ही कहा।

" मैं कौन.....? "

" क्षितिज.... ।"

" क्षितिज... ।क्षितिज कौन.... ? " यहूदा दास ने अपने माथे पर बल डाले। कुछ याद करने की कोशिश की तो इसी मध्य बाहर से ही क्षितिज ने अपना परिचय दिया। वह बोला कि,

" मैं क्षितिज ; पास्टर दीनानाथ 'कलवरी' का लड़का। एक जरूरी काम से आया था।"

" ओह....अच्छा।" ये कहते हुये यहूदा दास ने फौरन ही द्वार खोल

दिया। फिर क्षितिज को देख कर पहचानते हुये एक संशय से वे बोले,
" तुम..... और फिर इतनी रात..... ?
" एक आवश्यक काम आ पड़ा था, इसीलिये आपके पास आना पड़ा था।" क्षितिज ने कहा तो यहूदा दास ने उसे जैसे टालने के ध्येय से कहा,
" लेकिन मैं एक रिटायर आदमी तुम्हारी क्या मदद कर सकूंगा।"
" शायद आपको ये ज्ञात नहीं है कि, जब भी किसी परेशान और कड़ी धूप में तपते हुये इंसान को प्यास लगती है तो वह सदैव ही कुयें के पास जाता है।"
" हां, वह तो ठीक है, परन्तु कुंये में पानी न मिलने पर वह निराश होकर वापस भी चला जाता है।" यहूदा दास ने कहा तो क्षितिज बोला कि,
" ये तो मैं अच्छी तरह से जानता हूं कि जिस कुंये के पास मैं आया हूं उसमें पानी है कि नहीं।"
" हरगिज नहीं। तुम लोगों की मांगने की आदत कभी भी नहीं जा सकती है। मिशन में रहते हुये जब देखो तब ही तुम लोग मेरे दरवाजे पर खड़े रहते थे। और आज जब मैं वहां से चला आया हूं तो यहां भी मुझे परेशान करने चले आये हो। मैं तुम्हारी कोई भी मदद नहीं कर सकता हूं।"
" मिस्टर यहूदा दास, मांगने की आदत तो तुम्हारी ज्यादतियों के सबब से अपने आप ही जाती रही है, मगर अब अपनी चीज जब मांगने से नहीं मिलती है तो उसे छीनने की आदत जरूर पड़ चुकी है।" क्षितिज ने अपनी आंखों की चमक तेज करते हुये कहा तो यहूदा दास जैसे घबरा गया। वह भय से बोला कि,
" तुम्हारा मतलब ?" क्षितिज की आंखों में गर्मी के कारण लाल होते हुये अंगारे देख कर यहूदा दास का दिल किसी अज्ञात भय से कांप गया। उसने एक बार फिर से क्षितिज की काया को ऊपर से नीचे तक गौर से देखा। फिर अपने धड़कते दिल से दुबारा कहा कि,
" आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?"
" मैं अपनी मां के पार्थिव शरीर को यमुना के किनारे शोलों में जला कर आया हूं। तुम मतलब अच्छी तरह से समझते हो कि मैं कहना क्या चाहता हूं। आज कुंआ अपनी गहराइयों के नशे में अपने उस बटोरे हुये पानी का भाव भूल गया है जो उसने मिशन के सारे मसीहियों को रेगिस्थान में फेंक कर जमा किया है। मैं आज वही सारी कीमत वसूलने आया हूं जो तुमने उत्तरी भारत के समस्त मसीहियों का हक और पेट काट कर एकत्रित की

है।" ये कहते हुये क्षितिज ने बारह बोर की देशी बंदूक की नली यहूदा दास के सीने से लगा दी।

" क्षितिज...बेटे।" यहूदा दास अपनी मौत को अचानक से सामने पाकर डर से फिर कांप गया।

" भूल जाओ क्षितिज को। आज पहली बार 'क्षितिज' ने नीचे उतर कर इस धरती पर हुये अत्याचारों को महसूस किया है। और अगर तुमने या घर के किसी भी सदस्य ने चिल्ला कर शोर मचाने की कोशिश की तो मैं यहीं तुम्हारी कब्र का कब्रिस्थान बना दूंगा।"

" फिर क्या चाहते हो मुझसे ?"

" वह सारा रूपया, वह कीमत जो तुमने ईसाई मिशन में रहते हुये अवैद्य रूप से जमा करके अपने घर में भर रखी है। मैं जानता हूं कि काला धन तुम किसी भी प्रकार से बैंक में रखने की भूल तो करोगे ही नहीं।"

" ले जाओ। ले जाओ।" यहूदा दास फिर से कांपने लगा था।

इस प्रकार क्षितिज ने अपने जीवन के इस पहले पाप को कर के अपने बदन पर लगे हुये बेगुनाही के समस्त सबूतों को मिटा डाला। वह पापी बन गया। गुनहगारों की सूची में उसका नाम लिख गया। एक मुजरिम और एक लुटेरा बन कर वह कानून और परमेश्वर दोनों ही की निगाहों में किसी ख़ानाबदोश लुटेरे के समान अपने पापी जीवन को हर रोज़ ही मैला करने लगा। यहूदा दास की सारी जमा की हुई पूंजी को लूट कर उसने बाकायदा अपना एक गिरोह बना लिया। फिर समय असमय वह स्थान स्थान पर डकैतियां डालने लगा। नार्थ इन्डिया सिनड के समस्त बिकी हुई सम्पत्तियों, गिरजाघरों, खेतों तथा बागों इत्यादि के बेचने वालों का वह जानी दुश्मन बन गया। मिशन के बेचने वाले स्वार्थी और लालची उच्चाधिकारियों को वह चुन चुन कर लूटने लगा। लूट कर उनसे मिले वापस धन से वह मिशन की सम्पत्ति को फिर मिशन को ही वापस करने लगा। इस प्रकार उसे जहां कहीं भी पता चलता कि अमुक मसीही सम्पत्ति बेची गई है तो वह बेचने वाले को ढूंढ़ कर पता लगाता और फिर उससे कीमत वापस लेता, तथा बाद में उसी कीमत से उस जगह को छुड़ा कर वह मिशन को ही वापस कर देता था। उसका ख्याल था कि इस प्रकार से वह मिशन की समस्त बिकी हुई या फिर अवैद्य रूप से कब्जा की गई सम्पत्ति को छुड़ा लेगा।

इस प्रकार केवल थोड़े से ही अरसे में उसका नाम एक कुख्यात

डाकू 'कलवरी' के रूप में सांबतवाड़ी, और उसके आस पास के क्षेत्रों में मशहूर हो गया। पुलिस उसके पीछे पड़ गई। कानून से वह अपना मुंह छिपा कर रहने लगा। फिर जब पुलिस का उस पर अधिक ज़ोर पड़ा तो वह एक दिन अपने सारे साथियों के साथ चम्बल की धूल भरी घाटियों में भाग गया। एक बागी लुटेरे के समान उसने अपने जीवन को चम्बल के सुपुर्द कर दिया। इतने दिनों में उसका नाम इतना अधिक कुख्यात हो चुका था, कि फिर किसी भी मिशन के आदमी ने मिशन सम्पत्ति का सौदा नहीं किया। लोग केवल उसके नाम से ही भयभीत होकर स्वतः ही मिशन की ख़रीदी या बेची गई सम्पत्ति को अपने आप ही वापस करने लगे। तब इस तरह से एक दिन मसीहियों का बिका हुआ मसीहा बन्दूक की नोक पर फिर से आज़ाद होने लगा। लोग उसके बारे जब कभी भी सुनते तो केवल अपनें कानों पर हाथ रख कर ही रह जाते थे। जो सोचते थे तो वे यही कि ये कैसा डाकू 'कलवरी' है जो धार्मिकता को जीवित रखने के लिये अधार्मिक रवैया उपयोग में ला रहा है। पाप और पुण्य, दोनों ही उसके संगी थे। पाप करके वह धर्म की सेवा कर रहा था_____कयामत के दिनों में उसका कैसा निर्णय होगा। शायद कोई भी नहीं जानता था ?

इस प्रकार कई दिन समाप्त हो गये।

कई माह। कई वर्ष यूं ही सरकते चले गये। क्षितिज का नाम एक कुख्यात डाकू 'कलवरी' के रूप में सांवतवाड़ी के अतिरिक्त भारतवर्ष के काफी जिलों में फैल गया। अख़बारों, रेडियो और दूरदर्शन में उसके बारे में चर्चा होने लगी। लेकिन ये अलग बात थी कि उसके नाम से केवल अमीर और धनाड्य लोग ही थर्राते थे। किसी भी गरीब और मजबूर को वह नहीं सताता था। एक प्रकार से वह बेइमानों का शत्रु और पिसे हुओं का साथी बन कर लोगों के होठों का विषय बन गया था। सो इतने वर्षों के अन्तराल में उसने मिशन की अधिकांश अवैद्य रूप से बेची गई सम्पत्ति केवल बन्दूक की नोक पर छुड़ा कर वापस मसीही मिशन को लौटा दी थी। इसके साथ ही इसकदर जालिम भी वह बन गया था कि, अधिकांश स्वार्थी यहूदाओं का सब कुछ छीन कर उसने उन्हें दाने दाने को मोहताज भी कर दिया था।

इतने वर्षों के अन्तर में क्षितिज इतना अधिक ख़तरनाक डाकू 'कलवरी' के नाम से प्रसिद्धि पा चुका था कि वह जिस भी इलाके में पहुंच जाता था वहां के धनी मानी लोगों की रातों की नींदें हराम हो जाती थीं। उसका बढ़ता हुआ प्रकोप देख कर पुलिस भी बेहद परेशान हो चुकी थी। अब तक उसने मिशन की लगभग सभी बेची हुई सम्पत्तियों को छुड़ा कर पुनः मिशन के ही भले कार्यकत्ताओं को सौंप दिया था, और अब उन जगहों पर परमेश्वर की स्तुति और आराधनायें होती थीं। हरेक रविवार को प्रार्थनायें और आराधनायें होने लगीं थीं। मगर ये भी एक आश्चर्यजनक बात थी कि, चाहे कोई भी आराधना क्यों हो, चाहे किसी भी रविवार की प्रार्थना सभा हो, लेकिन फिर भी हरेक दुआओं में लोग डाकू कलवरी को बचाने के लिये अपने परमेश्वर से विशेष दुआयें करने लगे थे। अपने ख़ुदा से विनती करते थे। शायद इसका कारण यही था कि लोग उसकी बदली हुई परिस्थिति का कारण समझते थे। उसने जो कुछ भी किया था, और जो वह कर रहा था, उसका एक विशेष कारण और उसकी विवशता थी। साथ ही उसने मसीहियों की मिशन के नाम की वह सम्पत्ति कि जहां पर परमेश्वर की इबादत होती थीं, गैर मसीहियों के हाथों में जाने से छीन लिया था। अब परमेश्वर में सोये हुये लोगों के लिये मिशन के कब्रिस्थान सुरक्षित थे। यही कारण था कि लोगों को क्षितिज से प्यार था। 'कलवरी' को बचाने के लिये वे दुआयें करते थे। उसकी परिस्थिति को समझने वाला

हरेक मसीही उसको मन से चाहता था। सब ही को उससे सहानुभूति और अपनत्व था। लेकिन ये अलग बात थी कि फिर भी कोई चाहते हुये उसका साथ नहीं दे सकता था। कोई भी उसके साथ एक कदम भी नहीं चल सकता था। इसका कारण था कि अपने 'मसीह' को बचाने के लिये उसने जो मार्ग चुना था, वह सीधा उस तरफ जाता था कि जहां पर जाने के लिये यीशु मसीह ने भी अपने शिष्य पतरस को डांट दिया था। वह पाप का दामन थाम कर धर्म को बचा रहा था। गुनाह करके ही उसने गुनाही के अत्याचारों को रोका था। मसीह को लूटने वालों को लूट कर ही उसने अपने बिकते और बोली लगते हुये मसीहा की रक्षा की थी, और बन्दूक की नोक पर चम्बल की शरण के सहारे उसने मिशन को उजड़ने तथा तबाह होने से बचाया था। साथ ही उसने मसीह को बेचने वाले समस्त यहूदाओं को बेघर और भटका कर ख़ानाबदोश कर दिया था।

कोई नहीं जानता था कि उसका इस प्रकार का बदला हुआ जीवन और व्यवहार उसके किसी इन्तकाम की आग थी, अथवा उसकी ज़िन्दगी का बदला हुआ वह सितारा कि जिसमें एक ओर हरेक मसीही के लिये आने वाले भविष्य की रोशनी थी, तो दूसरी तरफ उसका खुद अपने किये हुये कारनामों का वह भयानक अंधियारा कि जिसमें से उसे कोई भी नहीं निकाल सकता था। गुनाह और भलाई___सेवा और अंहिसा___बन्दूक और खुदा की ख़िदमत... ? ये कहां का नियम और दस्तूर था ? कौन सा रिवाज़ था ? शायद इसके बारे में कोई भी व्याख्या नहीं कर सकता था ? एक ओर वह खुलेआम परमेश्वर और मनुष्य दोनों ही का कानून और नियम तोड़ कर पाप कर रहा था तो दूसरी ओर उसी पाप के बल पर वह सेवा और भलाई के काम करता था। कौन उसको चाहता था, और कौन उसको पसन्द नहीं करता था ?

अब तक उसका गिरोह बहुत अधिक बढ़ चुका था। उसका ख़ौफनाक नाम भारत के कई प्रदेशों में एक पापी देवता के रूप में फैल चुका था। गलत काम करके धन कमाने वाले लोग उसके नाम से थर्राते थे। एक प्रकार से अमीरों का वह दुश्मन बन गया था। ईसाई मिशन की बिकी हुई सम्पत्ति के लिये वह इसकदर सतर्क था कि जब भी उसको सूचना मिलती कि अमुक स्थान की जमीन बेच दी गई है, तो वह तुरन्त उसके ख़रीदार से उस जमीन या सम्पत्ति को जबरन पुनः ख़रीद कर वहां की कलीसिया को दे देता था, और बेचने वाले यहूदा को कब्रिस्थान

पहुंचाने की धमकी देकर पहली बार तो छोड़ देता था, मगर दूसरी हरकत पर वह बाकायदा उसका नामो निशान तक मिटा देता था।

सो ये था उसका वह बदला हुआ रूप_____उसके जीवन की वह परिवर्तित और बिखरी हुई कहानी कि जिसका एक भी हिस्सा यदि कोई पढ़ लेता था तो एक बार को उसका भी मन डाकू कलवरी के प्रति मलिन हो जाता था। फिर होता भी क्यों नहीं....? वह अपनी ज़िन्दगी को दगाबाज और बेवफा समझ कर लगातार उसके साथ एक प्रकार से झूठी खिदमत कर रहा था। वह जानता था कि उसको जमाने का प्यार नहीं मिला था, मगर वह जमाने की गरीब आहों से मुहब्बत कर बैठा था। उसने अपनी मसीही बपतिस्मायुक्त मां की चिता के शोले दहकाये थे, लेकिन उसने दूसरों की मांओं को चिताओं में जलने से बचाया था। मिशन के लालची यहूदाओं ने उसकी आंखों के सामने ही उसके प्रभु को बेचना आरंभ किया तो उसके गर्म खून ने पतरस बन कर बन्दूक उठा ली थी। वह अपने परमेश्वर____अपने यीशु ख्रीष्ट की रक्षा के लिये धूल भरे ठिकानों का बागी बन गया। संसार की निगाहों में एक भयानक लुटेरा____चम्बल का शरणायक_____रात दिन अपनी जान को अपनी हथेली पर रख, कभी भी एक ही स्थान पर न टिकने वाला एक गुनहगार वह मसीही युवक कि जिसके कंधे पर गुनाही का बोझ लादने वाले कोई दूसरे नहीं, बल्कि अपने ही मसीही लोग हैं।

उसके बारे में जानने वाले जानते हैं कि, कैसा भी कुछ क्यों न हो। वह नरक की आग में ही चाहे क्यों न डाला जाये, मगर फिर भी उसने अपने मसीह की रक्षा की थी। उसे बचाया था। उसके बदन के कपड़ों को फिर से बिकने से रोका था।

ये थी उसकी ज़िन्दगी की करूण कहानी का वह भयानक तमाशा कि आज जो भी उसके बारे में सुनता था तो मारे बेबसी के बहुत चाहते हुये भी कुछ कह नहीं पाता था। उसके उस जीवन का वह चेहरा जो एक दिन बन संवर कर किसी दीपक के समान अपना प्रकाश दे सकता था, परन्तु समय की मजबूत बेवफा धारा ने उसकी बदनसीबी से बेइमानी का सौदा करके उसके सारे जीवन को काला कर दिया था। उसे अपने ही समाज से बाहर निकाल कर चम्बल का ख़ानाबदोश लुटेरा और डाकू बना दिया था। दुनियां से छुप छुप कर जीने पर विवश कर दिया था। गरीबों को दो वक्त की रोटी देने की लालसा में वह आज दूसरों की रोटी छीनने वाला

एक लुटेरा था। न जाने कितने ही जीवनों को बचाने की आशा में, आज स्वंय उसके जीवन का सड़क के किनारे लगने वाला मज़मा बन चुका था।

नीलू अब तक अपना नर्सिंग का प्रशिक्षण समाप्त करके सांवतवाड़ी आ गई थी। क्षितिज की यादों को वह बेखबरी के दायरों में बंद करके अब मरीजों की सेवा कर रही थी। अपनी पूरी लगन और आत्मा से वह परमेश्वर की सेवा में जुट गई थी। दूसरी तरफ क्षितिज आकाश की बुलन्दियों से नीचे उतर कर पाप और सेवा के मिले जुले मटमैले अंधकारों की बाहों में पूरी तरह से पहुंच गया था। चम्बल का एक नामी बागी और डाकू लुटेरा बन कर वह बन्दूक को अपना हमकदम और हमसफर बना कर वह पूर्ण रूप से अपने जीवन के काले और ख़ौफनाक अंधेरों के सहारे अपनी राह-ए-सफर में अपनी खोई हुई मंजिल की तलाश कर रहा था। उसकी एक ऐसी मंजिल जो यदि मिल भी गई तो वह भी सचमुच में उसकी अपनी नहीं हो सकती थी। और यदि ना भी मिले तो उसे मालुम था कि उसका जीवन एक दिन भटकते हुये रास्तों पर जगह जगह पड़ाव डालते हुये पड़ावों में ही बस कर समाप्त भी हो जायेगा। मसीहियत में एक दिन जन्म लेने वाली एक आत्मा, एक जीवन जो किसी दिन विवशता और बदले की ज्वाला में तड़प कर समाज की प्यारभरी पगडन्डियों से दूर हट कर भटक गया था, आज वही पूरी तरह से भटक भटक कर गुमनामी और बदनामी के सहारे चम्बल के बीहड़ का शरणायक बन कर रायफल की निकली हुई गोली के सहारे जी रहा था। ये कहानी थी उन दो प्यार करने वाले नादान बच्चों की कि जिन्होंने समाज और अपनों से पूछे बगैर किसी दिन एक साथ न केवल साथ चलने की कसमें खाई थीं, बल्कि साथ साथ मर जाने के लिये भी तैयार थे।

क्षितिज एक ओर अपनी बन्दूक की गरजती हुई 'गोलियों' से मनुष्यों के घरों को लूट कर गरीब और मोहताज़ लोगों को जीवन दे रहा था तो दूसरी तरफ नीलू भी 'गोलियों' के सहारे ही मृत्यु की शैया पर पड़े हुये मरीजों का जीवन बचा रही थी।

सो ये खेल था क्षितिज का। तमाशा था उसकी तबाहियों का। नज़ारे थे एक मसीही युवक की बरबाद ज़िन्दगी के, कि वक्त के हालात ने मजबूरियों से दोस्ती करके 'क्षितिज' को जमीन पर उतार कर चम्बल की ख़ौफनाक घाटियों का शागिर्द बना दिया था। साथ ही ये एक मोड़ था नीलू की उस स्वछन्द ज़िन्दगी का, कि वह आज अपने अतीत की किसी मनहूस ठोकर का दर्द पीकर बदल गई थी। गुमराह होने के पश्चात सही मार्ग पर आई थी, परन्तु क्षितिज आज ऊपर उठने की लालसा में

इतना नीचे गिर चुका था कि अब उसको अपने जीवन के काले अंधेरों के अतिरिक्त और कुछ भी नज़र नहीं आता था। वह और बन्दूक। बन्दूक और वह_____बस यही था उसका जीवन____जीवन का उद्देश्य। उसके जीवन का रहा बचा वह अस्तित्व जो एक दिन इसी प्रकार कानून और जमाने की निगाहों से छुपते-बचते कहीं बेनाम होकर रह जायेगा।

ये कहानी थी मसीही कलीसिया के एक युवक की बेबसी की, कि जिसे आज शैतान अपने पंजों में दबोच कर, उसे अपने उद्धारकर्त्ता से बेगाना बना कर, अपने लिये जी भर के खुलेआम इस्तेमाल कर रहा था। क्षितिज जो कभी आसमान का सितारा और नये चमन की बहारों का नादान पौधा था, वही आज उजाड़ होती हुई ख़िज़ाओं का टूटा हुआ तारा बन कर खुद अपने रहने का बसेरा भूल चुका था।

सांवतबाड़ी।

छोटा मगर विकसित शहर। छोटा सा कस्बा, मगर यहीं एक वीरान और भयानक अंधेरों का भंडार बना हुआ एक झाड़ और ऊंटकटारों का बाग। इस बाग की शरण में आये हुये क्षितिज को अपने गिरोह के साथ ठहरे हुये मुश्किल से अभी दो घंटे ही हुये थे। चम्बल के बीहड़ से सटा हुआ ये इलाका जहां पर क्षितिज को जब पुलिस की सरगर्मी ने अधिक परेशान किया तो वह अपने साथियों के साथ भाग कर यहां आकर छुप गया था। रात का अंधेरा पड़ते ही वह यहां आ गया था, और अब रात्रि के बारह बजना चाहते थे। बाग भीषण काले अंधकार का साया बना हुआ रात की काली कालिमा में मिश्रित हो चुका था। आस पास का हरेक इलाका तक शान्त मगर भयावह बना हुआ था। चप्पे चप्पे में चुप्पी छाई हुई थी। चारों ओर का ख़ामोश इलाका रात्रि के सन्नाटों से दोस्ती करके जैसे और भी अधिक मौन साध गया था। केवल बाग में छिपे हुये क्षितिज के गिरोह के साथ ही भूमि से चिपके हुये कीड़े मकोड़ों की राग अलाप का संगीत वहां पर छाई हुई मूक मनहूस चुप्पी को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

रात पड़ रही थी। अमावस्या की काली रात थी। रोशनी की कहीं झूठी किरण तक नहीं दिखाई देती थी। काली मनहूस रात यूं भी और भी अधिक भयानक और डरावनी प्रतीत होती थी। क्षितिज के कुछेक साथी यात्रा और बागी जीवन की भागमभाग दौड़ की थकान मिटाने के ध्येय से विश्राम कर रहे थे। कुछेक सो भी गये थे, और बाकी के उसके साथ ही जाग कर एक दूसरे की रखवाली के लिये पहरा दे रहे थे। बाग में सन्नाटा इसकदर भयानक था कि केवल छोटे मोटे कीड़े मकोडों की झंकार ही वहां के मूक वातावरण में अपना राग अलापने में मस्त थी।

अचानक ही क्षितिज के किसी साथी ने बीड़ी जलाने के लिये जैसे ही माचिस जलाई की तुरन्त ही सन्नाटों का सीना तोड़ती हुई थ्री नॉट थ्री रायफल की सनसनाती हुई गोली की भयानक आवाज़ ने सारे बाग में सोई हुई ख़ामोशी को हिला कर रख दिया। क्षितिज और उसके साथियों को समझते देर नहीं लगी कि किसी ने गोली चलाकर उन पर अनुमान से माचिस की रोशनी देख कर हमला किया था। रायफल की गोली भी बीड़ी जलाने वाले के कान पर से सनसनाती हुई गुज़र गई थी। वह बाल बाल बच गया था।

" अवे, बीड़ी पीना बंद कर।" क्षितिज के एक साथी ने बीड़ी जलाने वाले को डांटा।

गोली की इस आवाज ने क्षितिज और उसके समस्त साथियों को चौकन्ना कर दिया था। वे सतर्क हो चुके थे। वे जान गये थे कि पुलिस ने उन पर वार किया है, इसीलिये सब ही ने अपना स्थान पुलिस का मुकाबला करने के लिये निर्धारित कर लिया था। सब ही ने पोजीशन ले ली थी। वे पुलिस के द्वारा घिर चुके थे। अपने बचाव के लिये उन्होंने भी गोलियां चलानी आरंभ कर दीं। पुलिस ने भी उनकी गोलियों का जवाब गोलियों से ही दिया। गोलियों की दनदनाती हुई भयानक आवाज़ों ने पल भर में सारे बाग में बसी हुई ख़ामोशी का दम घोंट दिया। अंधेरी रात में पुलिस और डाकुओं की इस मुठभेड़ ने रात का माहौल इतना अधिक भयानक बना दिया था कि तावड़तोड़ गोलियों के शोर के कारण बाग के वृक्षों पर रात में अपने बसेरे पर बैठे हुये पक्षी भी भयावह होकर उड़ते हुये इधर उधर टक्करें मारने लगे। कीड़े मकोड़ों का अलाप स्वतः ही बंद हो गया।

दोनों ओर से लगातार गोलियां चल रहीं थीं। पुलिस अपने भरपूर प्रबन्ध के साथ प्रादेशिक सेना को भी साथ लेकर आई थी। जब कि क्षितिज को यूं पुलिस के हमले की कोई भी भनक नहीं मिल सकी थी। ना ही उसको ऐसा कोई ज्ञान हो सका था। बाग के एक ओर नदी का किनारा था और दूसरी तरफ से पुलिस के सिपाही गोली चला रहे थे। क्षितिज के साथियों के कारतूस और गोलियां भी समाप्त होती जा रहीं थीं। ऐसे में जब उसने देखा कि उसके साथियों के बचाव की स्थिति बिगड़ चुकी है तो उसने अपने समस्त साथियों को नदी के दूसरे छोर से पानी के सहारे छुप कर भाग जाने की सलाह दी। उसने उनसे कहा कि वह पुलिस पर गोली चलाता रहेगा, जिससे पुलिस ये समझे कि सारा गिरोह यहीं बाग में है। तब इस बीच तुम सब लोग नदी में तैर कर अपने को बचा लो। सो इस प्रकार वह गोली चलाता रहा तथा उसका एक एक साथी बाग के पीछे से नदी के पानी में छुप कर भाग गया।

फिर जब क्षितिज का हरेक साथी निकल गया तो उसने भी गोलियां चलाते हुये धीरे धीरे सरकने की कोशिश की। मगर वह अभी अपने पेट के बल सरक ही रहा था कि अचानक ही एक गोली सनसनाती हुई आई और उसके पैर की जांघ में धंस गई। गोली अपने इतने ज़ोर के साथ घुसी थी कि वह तुरन्त ही एक भयानक चीख़ मारता हुआ लगातार

कई कलावाज़ियां खा गया..... .....'

.....अचानक ही क्षितिज ने भड़भड़ाकर अपनी आंखें खोल दीं। आंखें खोल कर देखा। नर्स और डाक्टर उसकी चीख़ सुन कर उसकी चारपाई के पास आ गये थे। पुलिस के कई एक सिपाही भी उसके चारों तरफ खड़े हुये थे। अपने हाथ और पैरों में पड़ी हुई हथकड़ियां और बेड़ियां देख कर उसने अपनी निगाहें नीची कर लीं। उसे लगा कि उसके कमरे में खड़े हुये डाक्टर, नर्सें और पुलिस के सिपाही केवल एक औपचारिकतावश जैसे उसको घूर रहे थे। उसको पूरी तरह से होश आ चुका था, और वह ये समझ चुका था कि पुलिस की गोली से घायल होने के बाद बेहोशी की दशा में ही वह पुलिस के कब्जे में आ चुका है।

उसने अपने हाथ की कलाई पर बंधी हुई घड़ी में समय देखना चाहा, परन्तु हथकड़ी पड़ी होने के कारण वह असफल हो गया। तब पास में खड़े हुये डाक्टर ने उसकी परेशानी को महसूस किया तो फिर अपने हाथ की बंधी हुई घड़ी में समय देख कर कहा कि,

" ग्यारह।"

" थैंक यू।"

" ?? "

लेटे हुये क्षितिज ने उसको धन्यवाद दिया तो डाक्टर आश्चर्य से उसका मुखड़ा ताकने लगा। शायद इसका कारण था कि डाक्टर को एक डाकू के मुख से इस प्रकार के व्यवहार की आशा नहीं थी।

सुबह के ग्यारह बज रहे थे। हस्पताल में डाकू कलवरी की मात्र एक झलक देखने के लिये मनुष्यों की भीड़ हर पल बढ़ती जा रही थी। बिस्तर पर घायल और पुलिस की गिरफ्त में लेटे लेटे क्षितिज ने महसूस किया कि वह घायल और बेहोशी के आलम में भी अपने जीवन की कितनी ढेर सारी यादों को एक सपने के समान, यहां सांवतवाड़ी के हस्पताल में लेटे हुये दोहरा गया था। उसके पिछले अतीत का हरेक जिया हुआ पल हवाओं का एक झोंका बन कर उसके दिमाग के पर्दे पर आया था और कुछ ही पलों में उसका बग़ैर कोई भी उत्तर सुने हुये, लापरवाही से सर्र से निकल कर चला भी गया था। मगर कितने आश्चर्य की बात थी कि उसके अतीत की इन दोहराई हुई स्मृतियों में नीलू का कोई भी जिक्र तक नहीं था। वह नीलू कि जिसने एक दिन उसको अपने जीवन का 'क्षितिज' मान कर उसको नीलमदेश की प्यारभरी हसरतों में सदा के लिये

डुबो लेने का वादा किया था____शायद इसका कारण यही था कि, डाकू जीवन की हर समय भागती हुई उसकी कठिन ज़िन्दगी की यात्रा ने उसको नीलू के प्रेम के फूल फिर कभी भी दोबारा चुनने का अवसर ही नहीं दिया था____वे प्यार के झूठे वादों की कसमसाती हुई सुगन्ध से भरे फूल जो उसके हमराही बनते बनते आज उसके डाकू जीवन के कभी भी न मिटने वाले दाग़ के अफसाने बन कर रह गये थे।

# कलवरी के आंसू

## तृतीय परिच्छेद

### कचहरी______कोर्ट और मुकद्मा

क्षितिज पर डाकू कलवरी के नाम से तमाम वारदातों में लूट, राहजनी, डकैतियां और ईसाई मिशन के धनी मानी लोगों पर अत्याचार करने के जुल्म में मुकद्मा चलने लगा तो नीलू की रातों की नींद स्वतः ही न जाने कहां खो गई। सारी सारी रात वह यूं ही क्षितिज को अपने मन मस्तिष्क का विषय बना कर जागने लगी। हर समय ही उसको एक अज्ञात भय का साया सताने लगा। उसके दिमाग की रग रग में बसा हुआ ये भय था क्षितिज का। उस पर मुकद्में के पश्चात मिलने वाली सजा का। डाकू जीवन में उसके द्वारा विभिन्न प्रकार की, की गई वारदातों व अपराधों का परिणाम कुछ भी हो सकता था। मृत्यु की सजा______फांसी_____या फिर आजीवन कठिन कारावास..... ।

क्षितिज के लिये नीलू सोचती तो सोचती ही जाती थी। उसके ख्याल आते तो फिर लगातार आते ही रहते थे। न जाने ये कौन सा लगाव और आकर्षण क्षितिज के प्रति अब रह गया था कि इतना सब कुछ अपनी आंखों से देखने और कानों से सुनने के पश्चात भी वह उसके लिये सोचती थी और परेशान हुआ करती थी। क्षितिज के प्रति इन्हीं सारी बातों के कारण उसके मन का चैन भी जैसे छिन चुका था। इसी कारण उसकी चिन्ता और भय के सबब से वह दिन रात खोई खोई, परेशान और उदास रहने लगी। किसी भी काम में उसका मन नहीं लग पा रहा था। स्वतः दिन रात की सोचा विचारी से उसकी भूख भी कम हो गई। ऐसा होना बहुत स्वभाविक भी था। दिल यदि परेशान हो, मन पर कोई बड़ा बोझ हो तो मनुष्य के दैनिक कार्यों का मन्द पड़ना और अस्त व्यस्त हो जाना कोई भी विशेष बात नहीं है। यही दशा नीलू की भी हो गई। उसको हर समय क्षितिज के ख्याल सताने लगे तो वह भी सुस्त और चुप रहने लगी।

इस प्रकार से नीलू का रवैया और उसकी दिनचर्या में परिवर्तन आया और वह प्रायः ही ख़ामोश और खोई खोई सी रहने लगी। अक्सर ही उसकी आंखें न जाने किस उद्देश्य से शून्य को ताका करतीं। और फिर उसका बदला हुआ रूप तथा सदैव ही उसको गुमसुम देख उसकी सखी नर्सों ने भी एक दिन उसे टोक दिया। उसके मन के अंदर छिने हुये चैन और सकून को देखा तो उन्होंने भी उससे पूछना आरंभ कर दिया। जब देखो वे उसे कुरेदने का प्रयास किया करतीं। मगर वह तब भी चुप और मूक ही बनी रही। किसी को भी उसने अपने दिल के अंदर सुलगते हुये भेद से परिचित नहीं होने दिया।

तब नीलू के कुछेक दिन इसी उहापोह और विचारों में बीत गये। धीरे धीरे क्षितिज की अदालत में चलते हुये मुकदमें की तिथि करीब आती गई तो नीलू पहले से और भी अधिक परेशान हो गई। दिल के किसी कोने में क्षितिज के प्रति अतीत का भरा हुआ दर्द उबलने को आतुर हो आया। फिर मन में बसा हुआ दुख का सागर जब उसके होठों पर सिसक उठा तो उसके कोमल होठ भी अपना दर्द ब्यान करने के लिये तरस गये। होठों पर स्वतः ही सूख़ापन झलकने लगा। उसके चेहरे की समस्त खिली हुई आभा जैसे उदास पड़ गई। मगर वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सकी। फिर कर भी क्या सकती थी। चाह कर भी किसी से कुछ कह भी नहीं सकी। जब कि वह क्षितिज के बारे में सब ही कुछ जानती थी। जानती थी वह कि कितने पास का रिश्ता उसका क्षितिज से था। दिल में सदियों पहले उसके छिने हुये प्यार की कोई अधूरी कहानी थी। उसके प्यार का वह अफसाना था कि जो आज क्षितिज को लेकर चर्चा का विषय तो बना हुआ था, मगर फिर भी कोई उसकी नायिका को नहीं जानता था। वर्षों पहले उसने क्षितिज को क्यों खो दिया था; अपनी ज़िन्दगी के इस भेद को वह आज तक नहीं समझ सकी थी। और आज जब क्षितिज उसको फिर से मिला था तब भी वह उसके पास नहीं आ सकती थी। उसके कितने पास आकर वह फिर से चला गया था। चला भी गया था, इसका फिर भी उसे मलाल नहीं था, चिन्ता थी तो केवल इस बात की कि, अदालत के फैसले के पश्चात उसका हश्र क्या होगा। अब तक उसने दूसरों पर जुल्म ढाये थे, और अब खुद उसको जुल्मों से सामना करना पड़ेगा। अदालत के फैसले से यदि वह एक बार को बच भी गया लेकिन परमेश्वर की अदालत से उसे कौन बचायेगा। उसका प्रायश्चित ही उसको बचा सकता है। मगर एक

डाकू आदमी से अपने गुनाहों का पश्चाताप और प्रायश्चित की आशा रखना.. हो ही नहीं सकता था कि कभी ऐसा भी हो जाये। हां, कोई चमत्कार ही उसको फिर से इंसान बना सकता था।

क्षितिज की जब भी कोई नई अदालत की तारीख पड़ती तो नीलू सदैव ही उसके परिणाम की प्रतीक्षा करती रहती। हरेक बदली हुई या फिर से डाली गई अदालत की तारीख के दिन वह कितनी उदास और चिन्तित रहती थी, ये वह जानती थी और उसका क्षितिज के ख्यालों में डूबा हुआ दिल। वह समझती थी कि इतने वर्षो के क्षितिज के डाकू जीवन के संघर्षो ने उसको परमेश्वर से कितना अधिक दूर भी कर दिया था। किसकदर उसका जीवन और वह स्वंय परिवर्तित हो चुका था। उसका चेहरा ही बदल चुका है। जब वह यहां हस्पताल में था, तभी उसके चेहरे पर कितनी अधिक झाड़ियों समान दाढ़ी बढ़ रही थी। सिर के बाल बढ़ते हुये उसके कंधों पर झूलने लगे थे। होठों पर उसके वह वेदना थी कि जिसको वह चाहते हुये भी नहीं कह सकता था। इतना सब होने पर भी जो सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात थी, वह यही कि इतना सब होने के पश्चात भी उसकी आंखों में वह खूंखारपन नहीं था, जो कि एक डाकू की आंखों में होना चाहिये था। उसकी आंखों में ऐसी विशेष कशिश थी, मानो दुनियां जहांन का दर्द भरे हुये इस दुख के आलम को बर्दाश्त कर रहा हो। शायद इसी दर्द के कारण वह एक डाकू होकर भी आज तक लोगों पर रहम करता आ रहा था। उसने अपने डाकू जीवन में सदा ही लूटपाट की थी। लूटपाट भी सोने चांदी से चमकते हुये अमीरों के महलों की। अपने समाज, अपनी मसीही कलीसिया को फिर से जिन्दा किया था। उसे बिकने से रोका था। ये और बात थी कि पाप करके ही उसने भलाई के काम किये थे। जालिम बन कर ही वह दया का पात्र बन सका था।

फिर जैसे जैसे क्षितिज की अदालती मुकदमे के परिणाम की तारीख नजदीक आती गई, तो नीलू का कोमल दिल भी घबराने लगा। हर समय ही उसको क्षितिज की नजदीक आती हुई मौत का भय सताने लगा। दिन रात उसको अपना क्षितिज फांसी के फंदे पर झूलता नज़र आने लगा। मगर वह कर भी क्या सकती थी। कानून का नियम हरेक नागरिक के लिये समान होता है। उसको मालुम था कि क्षितिज को एक डाकू होने के कारण फांसी के अलावा कोई अन्य सजा का होना कठिन है। मगर फिर भी उसने क्षितिज के जीवन की भीख़ अपने प्रभु परमेश्वर से रोज़ाना ही

मांगनी आरंभ कर दी। वह तो यूं भी उसके लिये पहले ही से दुआयें कर रही थी। अब जेल में पड़ा होने के कारण वह और भी अधिक मन लगा कर करने लगी थी। उसका विश्वास था कि यदि उसका प्रभु चाहेगा तो उसकी दुआओं का उसे उत्तर देगा और क्षितिज का जीवन बचा लेगा। परमेश्वर से मांगी गई दुआ कभी भी बेकार साबित नहीं होती है, यदि वह सच्चे मन से मांगी गई हो। ऐसा ही उसको अपने दिल पर विश्वास था। और इसी विश्वास को अपनी जीत समझ कर वह अपने परमेश्वर से लगातार अपने क्षितिज के जीवन की याचना करती रही। करती रहेगी, तब तक, जब तक कि उसकी दुआओं का असर क्षितिज के नये जीवन का प्रकाश बन कर उदय नहीं हो जायेगा।

चार दिसम्बर की दम तोड़ती हुई सांझ।

दांतों को किटकिटाती सर्दी के प्रभाव के कारण सुबह की भीगी हुई बगीचे की क्यारियों में मुस्कराते हुये फूलों के होठ भी ठंड के कारण ठिठुर चुके थे। नीलू बहुत ही उदास मन से अपने हॉस्टल के वही पुराने रोज़गार्डन में बैठी हुई थी, कि जहां पर वह अक्सर ही आकर बैठ जाया करती थी। पत्थर की बेजान मूर्त्ति समान___बेहद चुप____बिल्कुल ख़ामोश अपने विचारों में लीन___गुमसुम, बैठी हुई अपने ही मन मस्तिष्क में अपने अतीत और वर्तमान की स्मृतियों को मिला जुला कर ताना-बाना सा बुन रही थी।

आज सुबह से उसका मन फिर से उदास हो गया था। अदालत की लगातार आठ महिनों की कार्यवाहियों ने क्षितिज को लूटपाट, राहजनी और देश में अपने भय से सामाजिक शान्ति भंग करने के अपराध में चौदह वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई थी। कल ही अदालत में उसके ख़िलाफ ये फैसला हुआ था। अदालत का ये फैसला सुनकर नीलू को प्रसन्न्ता हुई थी कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं को सुन लिया था। उसके क्षितिज को फांसी के तख्ते पर लटकने से रोक लिया था। मगर जहां एक ओर नीलू को अदालत के द्वारा किये गये फैसले से प्रसन्नता होती थी, वहीं उसको ये सोच कर दुख भी होता था कि जब सिपाही क्षितिज को अदालती फैसले के पश्चात जेल में लिये जाते थे तो उसने पुलिस के इन्सपेक्टर से कितने रौबीले स्वर में कहा था कि,

' इन्सपेक्टर साहब, चौदह साल में किसी की ज़िन्दगी समाप्त नहीं हो जाया करती है। जब लौट कर आऊंगा तो ये भी बचा हुआ हिसाब बराबर हो जायेगा।'

क्षितिज के ये ब्यान अख़बार वालों ने बड़ी सुर्ख़ियों में छापे थे। तब से नीलू इसी सोचा विचारी में परेशान थी। वह बार बार सोचती थी कि, इसका मतलब तो यही हुआ कि क्षितिज जेल से अपनी सजा काटने के बाद फिर से डाकू जीवन का मार्ग अपनायेगा। फिर लूटमार करके अपना जीवन व्यतीत करेगा। शायद पहले से भी अधिक जोर शोर के साथ वह उसी रास्ते पर जायेगा कि जिस पर चलने के कारण उसे ये सजा मिली है। अपना चौदह वर्ष का कठिन कारावास काटने के पश्चात भी वह सुधरेगा नहीं, परन्तु और भी बिगड़ा हुआ शैतान बन जायेगा।

नीलू ने बैठे बैठे क्षितिज के बारे में ऐसा सोचा तो सोचते ही

किसी अज्ञात भय से उसका नन्हा सा कोमल दिल कांप गया। कलेजे में कहीं आने वाले भविष्य की किसी मुसीबत की जैसे पूर्व सूचना मिलते ही धक् सी होकर रह गई। कैसे उसको सुधारा जाये। किस प्रकार उसकी बिगड़ी हुई राहों को मोड़ा जाये। कोई उसका ऐसा रहा भी तो नहीं है जो कि उसको अपना कह कर समझा सके। उसके दिल में उपजी नफरत के स्थान पर प्यार और अपनेपन का पौधा उगा सके।

सोचते सोचते नीलू ने बार बार क्षितिज का ख्याल किया। उसके बारे में हरेक दृष्टिकोण से विचार किया। सोचा कि किस तरह से उसको बचाया जाये। कैसे उसको डाकू से इंसान में बदला जाये। वह तो बड़ा ही ज़िद्दी स्वभाव का मनुष्य है। जो ठान लेता है करके ही रहता है। सो कैसे उसका जीवन बचाया जाये, ताकि उसकी आत्मा भी बच सके। वह तो निश्चय ही पाप पर पाप करके नरक का भागीदार बन रहा है। उसे बदलना चाहिये। किसी न किसी प्रकार उसके जीवन में परिवर्तन आना ही चाहिये। यदि वह अभी बदलेगा तो तभी उसका शेष जीवन भी बदल सकेगा। यदि उसने अपने को नहीं बदला तो फिर कभी भी उसकी ज़िन्दगी में कोई भी बदलाव नहीं आ सकेगा।

सोचते सोचते अचानक ही नीलू को याद आया, आज से कई वर्ष पहले का वह दृश्य और वह नज़ारा, जब कि क्षितिज उससे अपने डाकू बनने से पहले अंतिम बार मिला था। मिला था, उससे बेहद एक टूटे और भटके हुये मनुष्य के रूप में। तब उसने किस प्रकार अपनी गंभीर आवाज़ में उससे कहा था कि,

' नीलू, तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा जो इस समय हूं। 'क्षितिज' के जब सारे अरमान टूट जाते हैं तो वह अपना सिर उठाना भूल जाता है। और जब वह धरती की नीचाइयों में आकर शरण लेता है तो उसका रूप और वह स्वंय किस सीमा तक गिर भी सकता है, शायद तुमने इस बात की कभी कल्पना भी नहीं की होगी। सहन करने की भी एक हद होती है। मैंने बहुत कुछ सहन करके देख लिया है, अब और अधिक सहन करना मेरी सीमा के बाहर है।'

'' क्षितिज.....? ''

विचारों की गहन भावना के बहाव में नीलू के मुख से सहसा ही निकल पड़ा। वह होठों में ही क्षितिज का नाम दोहरा गई। दोहरा गई तो क्षितिज का चित्र फिर एक बार उसके जहन के पर्दे पर आकर मंडराने

लगा। तब उसने आगे सोचा कि, तो क्या... 'क्षितिज' सचमुच ही धरती पर उतर आया है। हां, अवश्य ही। उसकी आत्मा ने जैसे उसको उत्तर दिया। यदि नहीं उतर कर आता तो वह क्यों एक डाकू और लुटेरा बना होता। क्यों लोगों पर अत्याचार करता होता। डाकू जीवन से पहले उसका जीवन कैसा अधिक सुन्दर था। किसकदर साफ और स्वच्छ। मगर आज वक्त की कीचड़ ने उसको हर तरफ से मैला तो किया ही है, साथ ही उसको सारे जमाने में बदनाम भी कर के रख दिया है। उसके जीवन पर पड़ी हुई ये कीचड़ हटानी होगी। वही ऐसा कर सकती है। वह करेगी तब ही वह बच सकेगा। यदि बचेगा तभी उसका जीवन और आत्मा एक नये जीवन में प्रवेश कर सकेगी। और उसके इस नये जीवन का केवल एक ही हल है_____केवल एक ही मार्ग_____'तुम्हारे बाद'। नीलू ने क्षितिज के द्वारा उससे कहे हुये कई वर्ष पहले के शब्द दोहराये। उन शब्दों की गूढ़ता पर विचार किया। 'तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा, जो इस समय हूं।' इसका मतलब है कि उसको क्षितिज का जीवन बचाने के लिये खुद का जीवन बलि की वेदी पर स्वाह करना पड़ेगा। क्षितिज को दोबारा डाकू बनने से बचाने के लिये स्वंय उसको ही अपनी ज़िन्दगी भेंट करनी होगी। तब ही वह बदलेगा। उसका जीवन परिवर्तित होगा। क्योंकि स्वंय मेरे बाद वह, वह नहीं रहेगा जो कि इस समय है। इस समय वह एक खतरनाक डाकू है। मेरे बाद वह डाकू नहीं रह सकेगा। नहीं रहेगा यदि ज़रा भी उसके कहे हुये शब्दों में सच्चाई होगी। यदि वह सच्चा और अपने वचन का पक्का होगा तो मेरे पश्चात अपने जीवन को बदल लेगा। यदि उसको क्षितिज को बचाना है तो स्वंय उसको अपना जीवन दांव पर लगाना होगा।

सोचते विचारते नीलू ने इस प्रकार से सोचा तो स्वतः ही उसकी आंखों में आंसू भर आये। छलक गई। गला भर आया। भर आया इसलिये क्योंकि उसको क्षितिज का जीवन बचाने के लिये स्वंय अपना जीवन कुर्बा न करना था। दर्द और दुख तो होना ही था। सब ही कुछ तो उसको सहन करना था। खुद ही ये सदमा झेलना था। वह किसी के मुरझाये जीवन के फूल फिर से खिलाने के लिये स्वंय अपनी ज़िन्दगी के चमन के फूलों का गला दबाने की योजना बना रही थी; मलाल तो होना ही था। आंसू भी उसी के ही बहने थे।

ऐसा सोचते सोचते नीलू ने दूर कहीं आकाश को निहारा। शाम

पूरी तरह से डूब चुकी थी। रात का धुंधलका आकर ठहरने लगा था। आकाश में आवारा बादलों के टुकड़े जैसे बेकार ही में आ आकर एकत्रित होने लगे थे। जाने कहां कहां से चले आते थे। क्यों आ रहे थे। अनुमान था कि जैसे रात में होने वाली वर्षा की तैयारी कर रहे थे। कभी कभार कहीं दूर आकाश की छोरों पर बिजली यूं चमक जाती थी कि जैसे किसी ने चांदी की परात का पेट फाड़ दिया हो। नीलू अपने ही स्थान पर बैठी थी। वह बैठी थी, और वहीं बैठी भी रही। तनिक भी अपने स्थान से नहीं हिली। रात के बढ़ने के साथ साथ वातावरण में भी सर्दी पड़ने लगी थी। मौसम के बदलते देर भी नहीं लगी थी। पल भर में ही हवायें भी जैसे सिसक उठी थीं। आकाश पर अब काले काले ख़ानाबदोश बादलों के काफिले चले आते थे। इस प्रकार कि जैसे सब ही ने रात में होने वाली भीषण वर्षा का एलान कर दिया हो। तब ऐसे में मौसम और भी अधिक ख़राब होता, उससे पूर्व ही नीलू चुपचाप रोज़गार्डन से उठ कर अपने कमरे में आ गई। बहुत उदास। गंभीर और अपने मन में एक भयानक विचार की भूमिका बनाये हुये।

आधी रात के लगभग हवाओं की सनसनाहट के साथ ही दूर आकाश के कलेजे में जब बिजली ने खिसियाकर अपनी करवट बदली तो तुरन्त ही सारे सांवतवाड़ी शहर का इलाका उसके प्रकाश में कुछेक पलों के लिये जगमगा गया। बिजली अब रह रह कर तड़पने लगी थी। बार बार वह परेशान होकर मचलती थी। इस तरह कि मानो किसी नई नवेली दुल्हन को बेबस उसके सुहाग के सामने ही सती किया जा रहा हो। वातावरण ख़राब हो चुका था। हर क्षण वह और भी अधिक बिगड़ता जा रहा था। आकाश को भी स्थान स्थान से आये हुये अतिथि बादलों के गुबारों ने चारों ओर से जैसे अपने पूरे बल के साथ बुरी तरह से घेर रखा था। हवायें तेज हो चुकी थीं। इसकदर कि उनके प्रभाव के कारण आस पास के खड़े हुये वृक्ष भी झूमने लगे थे। आकाश में बिजली बार बार बादलों की भीषण गड़गड़ाहट के सहारे कांप कांप जाती थी। वातावरण इतना अधिक ख़राब हो चुका था कि आकाश में ठहरे हुये बादलों के पड़ाव किसी भी समय हवाओं और गरजती हुई बिजली का नाजायज़ लाभ उठाकर अपनी बरसने की हरकत पर उतारू हो सकते थे।

नीलू अभी तक अपने हॉस्टल के कमरे में बैठी हुई थी। अपनी मेज के सामने ही। उसके कमरे में साथ रहने वाली उसकी रूम मेट उसके दिल के सारे हालात से अनभिज्ञ अपने सपनों की दुनियां में गहरी नींद सो रही थी। उसकी गहरी गहरी नींद की सांसों से प्रतीत होता था कि जैसे वह सपनों में नींद के सहारे अपने प्रेमी के साथ कहीं नौका बिहार कर रही हो। नीलू का मन क्षितिज की तरफ से इतना अधिक चिन्तित और परेशान हो चुका था कि उसके बारे में सोचते हुये उसने ना तो सुबह ही कुछ खाया था और ना ही आज संध्या को। क्षितिज को मिली चौदह वर्षों की सजा के बारे में जानने के पश्चात ही उसका मन दुखी हो गया था।

रात भंयकर हो चुकी थी। हवाओं में अब तक भरपूर तेजी आ चुकी थी। बादल भी बुरी तरह से गरज उठे थे। बार बार बिजली अब भी चमक रही थी। उसकी एक ही कौंध में बादल आपस में एक दूसरे से रगड़ते हुये जैसे पागलों समान चीख़ पड़ते थे_____और इसी भयानक बिगड़े हुये वातावरण तथा अंधेरी रात के तूफानी माहौल ने नीलू के दिल में भी एक भंयकर विचार पैदा कर दिया था। एक बड़ा ही दृढ़ संकल्प का सहारा लिये हुये वह अपनी मौत_____अपनी आत्महत्या के द्वारा क्षितिज

के नये जीवन को जन्म देने की शुरूआत के लिये मन ही मन कोई इरादा कर चुकी थी। उसकी भावुक और कमजोर दिल की भावनाओं ने उसको अपना जीवन किसी के लिये अर्पित कर देने को लालायित कर दिया था। बार बार उसके मानसपटल में आज से कई वर्षों पहले क्षितिज के कहे हुये शब्द हथौड़ों के समान चोट कर रहे थे।

' तुम्हारे बाद... .. तुम्हारे बाद... .....। तुम्हारे बाद.....मैं वह नहीं रहूंगा, जो इस समय हूं।' ....सोचते हुये नीलू ने अपनी आंसुओं भरी उदास आंखों से खिड़की के शीशे में से बाहर के वातावरण को एक बार निहारा। वर्षा न जाने कब की आरंभ हो चुकी थी। उसकी बूंदें हवाओं की तीव्रता के साथ खिड़की के शीशे से टकराती थीं, और फिर पल भर में ही अपना सारा अस्तित्व समाप्त कर देती थीं। हवायें भी इसकदर तेज हो होकर नीलू के कमरे की दीवारों से टकराती थीं कि मानो बेबस होकर अपना सिर ही तोड़ देना चाहती हों। बादल भी बार बार गरज उठते थे। बिजली की एक ही कौंध में सारे सांवतबाड़ी के इलाके का कलेजा तक फटा जाता था। ऐसा लगता था कि आज प्रकृति इन तूफानी हवाओं के सहारे फिर किसी के प्राण लेने के लिये बिगड़ बैठी थी। बाहर पूरा बिगड़ा हुआ तूफान था। पता नहीं इस अचानक से आये हुये तूफान के आने का क्या मकसद था। कौन सा लक्ष्य उसे पूरा करना था। न जाने किस उद्देश्य को अपने दिल में बसाये हुये वह खिसिया रहा था। जाने किसके घर उसे उजाड़ देने थे_____और न जाने किस किसको उसे आज जी भर के भटका देना था_____घर से बेघर करना था।

नीलू ने एक बार सारे कमरे की ख़ामोशी को निहारा। सारा कमरा जैसे बाहर आये हुये तूफान से बेख़बर होकर उसी को टुकुर टुकुर निहार रहा था। अपनी रूम मेट को भी नीलू ने एक नज़र भर देखा, तब बाद में उसने मेज पर से कलम उठाया और क्लिपबोर्ड पर लगे हुये कागज पर लिखने लगी,

' क्षितिज,

आशा करती हूं कि तुम अच्छे ही होगे।

याद करो कि आज से कुछ वर्ष पहले जब सांवतबाड़ी की मसीही बस्ती में एक दिन तुमने मुझसे अपने प्यार की समस्त गहराइयों में डूबते हुये कहा था कि, ' नीलू , तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा जो इस समय हूं।'

मैं जानती हूं कि, तुम आज परमेश्वर और इंसान दोनों ही की निगाहों में एक बड़े ही ख़तरनाक, कुख्यात चम्बल के बीहड़ों के डाकू लुटेरे हो। तुम्हारी मजबूर परिस्थितियों की भूख़ी जालिम दासता की जंजीरों ने आज इंसानियत का तुम्हारे चेहरे पर एक चिन्ह भी बाकी नहीं रहने दिया है। जमाने की शायद हरेक दृष्टि तुमको भले मनुष्य के समान नहीं देख सकेगी, मगर मेरे दिल में, मेरे लिये तुम्हारा तो वही स्थान आज भी सुरक्षित है, जो कभी पहले था। बल्कि यूं कहो कि आज तुम्हारी छवि की जगह मेरे दिल की हर नई जन्म लेने वाली भावनाओं में पहले से और भी अधिक दृढ़ हो चुकी है। समय बदल गया, लेकिन इस बदले हुये समय की हरेक धारा इस बात की गवाह है कि कभी हम दोनों ने एक साथ एक ही मंजिल में बसने का सपना देखा था। हमने साथ चल कर अपना घर का बसेरा बनाने का प्रयास भी किया था। मगर वह बात अब और है कि हम ऐसा नहीं कर सके। शैतान की दुर्गन्ध ने हमारे पवित्र प्यार के चमन में आकर अपने अलगाव और अरूचि के पौधे बो दिये। हमारी पसंद बदली। हम बदले। हमारी राहें अलग हो गईं। लेकिन फिर भी मार्ग बदल जाने से मनुष्य चलना तो नहीं छोड़ देता है। समय की बदलती हुई धाराओं के बहाव में हम दोनों ही ऐसा भटक गये कि फिर कभी चाह कर भी साथ नहीं चल सके। लेकिन सोचो कि केवल साथ न चलने के कारण ही क्या मनुष्य हमेशा के लिये सचमुच दिल से भी अलग हो जाता है ? मैं इसका क्या उत्तर दूं ? तुम ख़ुद ही अपने दिल से सोचो कि क्या सचमुच तुमने मुझे या फिर मैंने तुमको भुला दिया है ? वक्त और इंसान की मजबूरियों की पाबंदी के बावजूद भी ये इंसान की आत्मा का चलन है कि मनुष्य अपने जीवन के उन लम्हों को कभी भी नहीं भूल पाता है जो कि उसकी कच्ची उम्र की हाथ की अंगुली से दिल की तख्ती पर लिखे जाते हैं।

मैं जानती हूं कि तुम कभी मुझको बहुत ही अधिक प्यार किया करते थे। शायद अब भी करते होगे ? और मेरे दिल के अंदर बसी हुई तुम्हारे प्रति पवित्र प्रेम की भावनाओं का सबूत.....? यही है कि आज मैं तुमको एक आवारा, कुख्यात और जालिम लुटेरे डाकू के रूप में नहीं देख सकती हूं। इसलिये मैं बहुत चाहते हुये भी तुम्हारे सामने नहीं आ सकी थी जब कि तुम मेरे ही हस्पताल में मेरी ही निगरानी में, मेरे ही बार्ड में एक घायल मरीज़ की हालत में स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। मैं सचमुच तुमको एक

पल के लिये भी इस बिगड़ी हुई दशा में नहीं देख सकूंगी।

इसलिये फिर से याद करो कि, तुमने कभी मुझसे कहा था कि, 'नीलू, तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा, जो कि इस समय हूं।' यही सोचते हुये मैंने ये फैसला किया है कि तुम्हारे इस पापी जीवन को बचाने के लिये मेरे अपने जीवन का बलिदान बहुत जरूरी है। यदि तुम अपनी बात के ज़रा भी सच्चे मनुष्य हुये, और मेरे लिये तुम्हारे दिल में तनिक भी तुम्हारे प्यार का कतरा बाकी बचा है तो मुझे विश्वास है कि तुम मेरी बात को कभी भी नहीं ठुकराओगे। अपनी जेल की चौदह साल की सजा काटने के पश्चात अवश्य ही बदल जाओगे। फिर कभी भी चम्बल के बीहड़ में जाकर शरण नहीं लोगे, और दोबारा डाकू नहीं बनोगे। एक भले इंसान बन कर अपने नये जीवन का जन्म लोगे। फिर अपने इस नये जीवन की प्राप्ति के सहारे तुम अन्य भटके हुये लोगों को सही मार्ग पर लाने का प्रयत्न करते रहना। उन्हें प्रभु यीशु का शुभ सन्देश प्रसारित करना। क्योंकि यही हमारा धर्म है। संस्कार है। हमारी मसीहियत है। एक सच्चे मसीही व्यक्ति की निशानी है कि हम सदैव ही प्रभु की सेवा करें। अपनी सेवकाई के द्वारा बहुत सी भटकी हुई ख़ानाबदोश रूहों को बचा लें। हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कभी भी बन्दूक या तलवार के द्वारा अपनी सेवकाई का काम करने का वचन नहीं सुनाया है।

अच्छा क्षितिज, अब मैं चलूं। रात काफी हो चुकी है। बाहर बारिश और बिगड़े हुये वातावरण का तूफान शोर मचा रहा है। शायद मुझे अपनी बाहों में सदा के लिये समेटने को बार बार बुला रहा है। मेरे दिल में भी एक तूफान है। तुम नहीं समझ सकोगे। और जब तक समझोगे तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। मेरी तुमसे प्रार्थना है। एक विनती है कि, अपनी जेल की सजा तुम संयम से काटना, और सजा के पश्चात तुम अवश्य ही बदल जाना। एक भले इंसान बन कर जीना। डाकू के समान नहीं। तुम बदल जाना। बदल जाना क्षितिज। केवल एक बार। मेरे बाद तुम अवश्य ही अपने को एक सच्चा मसीही बन कर दिखाना। फिर से डाकू के समान मेरी आत्मा को बार बार परेशान न करना। यदि करोगे तो कभी भी मेरी आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी।

मैंने ये अच्छी तरह से महसूस किया है कि तुमको और तुम्हारे जीवन को बचाने के लिये मुझे अपनी ज़िन्दगी की भेंट चढ़ानी ही होगी। फिर ये जमाने का सिद्धान्त है कि कुछ पाने के लिये कभी कभी

मनुष्य को बहुत कुछ खोना भी पड़ता है। और जब वह 'कुछ' मिल जाता है तो वह फिर किसी किसी के लिये अनन्त जीवन की ढेरों ढेर खुशियां भी बन जाता है। यदि मेरे अपने जीवन की कुर्बानी से तुम्हारा अपना डाकू जीवन बदल कर एक इंसान बन जाता है, मैं समझती हूं कि तौभी ये सौदा मंहगा नहीं है।

अच्छा क्षितिज, अब अंत में मैं फिर तुमसे विनती करती हूं कि तुम मेरे बाद अवश्य ही बदल जाना। एक इंसान के रूप में जी कर दिखाना।' मेरे बाद तुम वह नहीं रहना, जो कि तुम इस समय हो।'
अच्छा अब जाती हूं। विदा। सदा सदा के लिये।

नीलू।'

पत्र लिखने के पश्चात नीलू ने उसको फिर से पढ़ा तो आंखें स्वतः ही छलक आईं। गला भर आया। आंखों में आंसू भर आये। उसके दिल में कहीं बीते हुये अतीत की स्मृतियों की उस प्यार की माला के दर्द का एहसास हो आया कि जिसके सारे मोती एक एक करके न जाने कहां विलीन होते जा रहे थे। ग़म और विषाद के भार के कारण नीलू का चेहरा निराश कामनाओं की अर्थी सजाते हुये उदासियों का बुत बन गया। मन दुखी हो आया। फिर होता भी क्यों नही। वह किसी के जीवन के बुझे हुये चिरागों को रोशन करने के लिये स्वयं अपने जीवन के दीप समय से पहले ही बुझा रही थी। क्षितिज को एक इंसान बनाने के लिये खुद अपने जीवन की आहुति देने जा रही थी।

फिर पत्र लिखने के पश्चात नीलू ने उसे मोड़ कर एक लिफाफे में रखा। दूसरा पत्र उसने हस्पताल के निदेशक के नाम पहले ही से लिख लिया था। निदेशक के नाम लिखे पत्र में उसने अपनी आत्महत्या, अपनी आत्महत्या का कारण, डाकू क्षितिज से उसके अतीत और वर्तमान जीवन का वास्तविक संबन्ध तथा क्षितिज के नये जीवन की प्राप्ति की लालसा और अपने जीवन के इस बलिदान का स्पष्ट वर्णन किया था। साथ ही अपनी आत्महत्या का दोषी केवल खुद को ही माना था। दोनों पत्रों पर पते लिख कर, फिर उन्हें पेपरवेट से दबाकर वहीं मेज पर रख दिया। तब बाद में अपनी रूम मेट पर एक नज़र डालती हुई चुपचाप से कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर आ गई। बाहर निकलने के बाद उसने पुनः दरवाजे को धीरे से बंद कर दिया।

रात्रि के इस तूफानी अंधकार में वर्षा अभी भी बुरी तरह से हो रही थी। हवायें इसकदर तेज हो गईं थीं कि सड़क की ट्यूब लाईट के मद्धिम प्रकाश में भी वर्षा की बूंदों की झड़ी दूर दूर तक उड़ी चली जाती थी। आकाश में पल पल में बिजली किसी खिसियानी नागिन के समान तड़प रही थी। बादल पागलों समान आकाश की शून्य यात्रा में चिल्लाते हुये भाग रहे थे। वातावरण का पूरा बिगड़ा हुआ तूफानी रूप था। सारा माहौल ही भयभीत हो चुका था।

नीलू अपने कमरे से निकल कर जैसे ही बाहर बारिश के तूफान में आई तो वर्षा के जल में तुरन्त ही भीग कर तर हो गई। हवाओं की तेजी के कारण वर्षा की मोटी मोटी बूंदे उसके कोमल गालों पर चोटें मारने लगीं। मगर अब उसे भी इस भंयकर तूफान की कोई भी परवाह नहीं थी। बिगड़ी हुई हवाओं का उसे कैसा भी भय नहीं रहा था। आकाश में चीख़ते हुये बादलों की ख़ौफनाक आवाज़ों का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सका। उसका निश्चय दृढ़ था। मन में किया हुआ संकल्प पक्का पड़ चुका था। और इसी दृढ़ संकल्प की प्रबलता के बहाव में बहकती हुई वह तूफानी वर्षा की परवाह किये बगैर अपने निश्चय को पूरा करने के ध्येय से आगे बढ़ती गई। बढ़ती गई उस कुंये की ओर कि जिसका जल लगभग सारे हस्पताल के मरीजों को जीवन देता था।

वर्षा बार बार उसके कदमों के सामने आकर बरस रही थी। हवाओं की तीव्रता भी शायद उसको उसके निश्चय से विचलित करने का प्रयास कर रही थी। इसीलिये उसके पानी से तर भीषण झोंके बार बार उसको चलने से गिरा देते थे। बादलों की भयानक गर्जन ने भी नीलू को उसके इस बेहूदा और असंयमी हरकत से रोकने का जी तोड़ प्रयास किया। वह बार बार गरजा। हर बार बिजली कौंधी, परन्तु सब कुछ ही असफल रहा। नीलू अपने मन में अपनी ख़ुदकुशी का गलत निर्णय लिये हुये बढ़ती हुई कुंये के पास आ गई। पास आकर उसने एक बार सारे माहौल को निहारा। आस पास कहीं कोई भी नहीं था। सब ही इस भयानक अचानक से आई हुई तूफानी वर्षा के कारण अपने अपने घरों में बंद थे। बारिश के तूफान ने सांवतबाड़ी के सारे इलाके को चपेट में लेकर अपने शोर से भर दिया था।

नीलू अपने विचारों की भावुकता में भटकती हुई कुंये की मुंडेर पर आकर बैठ गई। बैठ कर उसने अपने दोनों पैर कुंये के जल की ओर

लटका दिये। एक बार उसने चारों ओर के माहौल को फिर से देखा। बारिश अभी भी बुरी तरह से हो रही थी। हवायें बार बार अपनी तीव्रता के सहारे मानो हस्पताल की दीवारों से अपना सिर ही फोड़ लेना चाहती थीं। रह रह कर बिजली कौंध रही थी। सारे इलाके में पूरा तूफानी शोर था। लगता था कि जैसे तूफान भी अपने पूरे जोश और प्रबन्ध के साथ आया था। वातावरण भयंकर और डरावना हो चुका था_____और वातावरण की इसी भयंकरता के सहारे नीलू ने अंतिम बार हस्पताल की लाल ईंट की बनी हुई बड़ी इमारत को देखा। कितने वर्षों से वह इसी हस्पताल में काम करके यहां के मरीजों को जीवन दे रही थी, परन्तु आज वह स्वंय अपना जीवन किसी बिगड़े हुये मनुष्य के जीवन को सुधारने के लिये कुर्बान कर रही थी। किसी के जीवन के लिये उसने अपना जीवन दांव पर लगाया था। शायद इसके अतिरिक्त उसके पास कोई अन्य उपाय था भी नहीं। क्षितिज के लिये, समय से पहले ही वह इस संसार का सफर पूरा किये बगैर भाग रही थी। भाग रही थी____बहुत दूर____फिर कभी भी न वापस आने के लिये। उस परमेश्वर के पास कि जिसने उसे इस संसार में अपना कर्तव्य पूरा करने के लिये भेजा था। उस क्षितिज के लिये कि जिसको एक दिन बड़ी ही लापरवाही से उसने अपने जीवन से निकाल भी दिया था।

विचारों और सोचों के खतरनाक सैलाब के जोश में आकर नीलू ने जैसे ही कुंयें की गहराइयों की ओर छलांग लगाई तो अचानक ही आकाश में कहीं दूर बिजली इतनी बुरी तरह से चीख़ मारती हुई कौंधी कि उसके प्रकाश में सांवतबाड़ी का सारा इलाका ही पल भर के लिये दमक गया। उसके बाद ही बादल भी दनदनाते हुये गरजे तो फिर बड़ी देर तक गरजते ही रहे। वर्षा बराबर होती रही। हवायें भी तेज बनी रहीं। बिजली इस बीच इतनी ज़ोरों से कांपी थी कि जैसे बादल भी एक युवा लड़की को यूं भीगती बारिश के प्रकोपों में अपना जीवन नष्ट करते देख घबरा कर चीख़ पड़े थे। तूफान अपने पूरे जोश पर था। इसी बारिश के तूफानी शोर में हस्पताल की विशाल इमारत किसी कायरों के समान एक नर्स को निरर्थ क अपनी जान गंवाते हुये देख अपनी लाचारी का परिचय देती रही। सांवतबाड़ी के हस्पताल की वह इमारत____वह मरीजों को जीवन देने वाला घर_____वह जगह, वह जीवन से परेशान और थके हुये लोगों का शरणस्थल कि, जहां पर सदा जीवन को बचाया जाता रहा है; आज

एक युवा और लाचार नारी को यूं बेबस वर्षा के तूफान में अपना जीवन नष्ट करते देखती रही। चुपचाप निगाहें झुकाये हुये____शायद बेबस और कुछ भी करने से मजबूर। मनुष्य का अपनी मर्जी और अपनी आत्मा का यही वह स्थान है कि जहां पर ठहर कर फिर कोई भी उसके जीवन की रक्षा करने में असमर्थ हो जाया करता है।

दूसरे दिन।

नीलू की अकस्मात मृत्यु की ख़बर सुन कर सारे हस्पताल में हलचल मच गई। हस्पताल के सारे कार्यकर्त्ता व आस पास के मसीही समाज के तमाम लोग आदि नीलू को देखने के लिये दौड़ पड़े। पिछली रात को आया हुआ तूफान अपना करिश्मा दिखा कर अब शांत हो चुका था। वर्षा बंद थी, परन्तु उसकी ठंडक का असर अभी भी सारे वातावरण में पर्याप्त था। वृक्षों की टूटी हुई पत्तियां व टहनियां भीगी हुई धरती के सीने पर बिछी पड़ी थीं। रात के बसेरे पर बैठे हुये पक्षियों के नीड़, उनके शव व पंख पिछली रात भयंकर वर्षा के द्वारा हुई बरबादी का ब्यान कर रहे थे। स्थान स्थान पर गड्ढों में पानी अभी भी भरा हुआ था। कहीं कहीं झुके और टूटे हुये वृक्ष पक्षियों के अस्त व्यस्त पंख और घोंसले तथा गिरी हुई ईंट की दीवारें पिछली रात में आये हुये तूफान के दुर्व्यवहार के द्वारा मचाये हुये उत्पात की करूण कहानी का रोना रो रहे थे।

हजारों नम और दुखद आंखों के सामने सांवतवाड़ी के मशहूर हस्पताल की जानी पहचानी मुख्य नर्स मृत नीलू का ठंडा शव कुंये की गहराइयों में से रस्सियों के सहारे, स्थानीय पुलिस की निगरानी में बाहर खींचा जा रहा था। सारा हस्पताल उदास था। हर आंख नम और मूक थी। हस्पताल में काम करने वाले हरेक मनुष्य, स्त्री आदि सब ही का दिल उदास था। कुंये के चारों तरफ नर्सों, मनुष्यों, डाक्टरों, देखनेवालों तथा अन्य हस्पताल के कार्यकर्त्ताओं की भीड़ लगी हुई थी। इन्हीं दर्शकों की भीड़ में नीलू की वे सारी नर्स सखियां भी थीं कि जिन्होंने कल तक नीलू को जीता जागता देखा था। जिसके साथ बैठ कर खाया पिया था। अपने जीवन के कई बहुमूल्य वर्ष उन्होंने नीलू के साथ इसी हस्पताल में कार्य करते हुये व्यतीत किये थे। लेकिन जब वह आज अचानक से उन सबको रोता बिलखता हुआ यूं दर्द का घूंट भरने के लिये छोड़ कर चली गई थी, तो सब कुछ जानते और देखते हुये भी जैसे किसी को विश्वास नहीं हो पा रहा था कि उनकी प्यारी और हर समय खिलखिलाकर बात करने वाली सखी नर्स इस भरे संसार से सदा के लिये चली भी गई है। सारी की सारी नर्सें उदास और भरी भरी आंखों से नीलू की क्षत् विक्षित लाश को एक टक देख रही थीं। उनको तो दुख था ही, साथ ही हर देखने वाले की नज़रों में भी एक दुख और विषाद के बादल का टुकड़ा ठहरा हुआ

था। ऐसा बादल का टुकड़ा कि जो किसी भी समय बरसने को आतुर था। सब ही को दुख था। हस्पताल के हर मनुष्य की भी आंखें आज ऐसा दर्दनाक करूण दृश्य देख कर छलक आईं थीं। सब ही को नीलू से प्यार था। अपनत्व था। एक अनोखा लगाव था। हरेक नज़र उसको चाहती थी। फिर चाहती भी क्यों नहीं.....? नीलू इस हस्पताल की एक बहुमूल्य स्टॉफ नर्स थी। सब ही उससे और उसके कामों से प्रसन्न थे। किसी को कभी भी उससे कैसी भी शिकायत नहीं रही थी। सब उससे प्यार करते थे। इसी कारण जब वह यूं उन सबको अचानक से छोड़ कर चली गई तो सब ही को एक आघात् सा लग गया था। उसकी मृत्यु की अचानक से मिली ख़बर को सुन कर सबके ही चेहरे बुझ गये थे।

नीलू की सारी की सारी सखी नर्सें अभी तक झुकी झुकी निगाहों और लटके हुये मुखों से, अपनी उदास आंखों से नीलू के पार्थिव शरीर को देखे जा रही थीं। चुपचाप, मन में नीलू की ढेर सारी स्मृतियों को जैसे बार बार दोहराते हुये; परन्तु सब ही कुछ भी करने से लाचार और बेबस थे। सबको एक आश्चर्य था। कौतहूल था। सच्चाई देखते हुये भी किसी को नीलू की मृत्यु का विश्वास भी नहीं हो पा रहा था। उसकी आत्महत्या का सब को एक बड़ा आश्चर्य था। सब ही सोच रहे थे कि नीलू को आख़िरकार ऐसा कौन सा सदमा या आघात् लगा था_____ऐसा कौन सा दुख और दर्द था कि, जिसके कारण उसने अपनी ऐसी दर्दनाक मौत को स्वीकार किया था। क्यों उसने आत्महत्या जैसा इरादा किया और इस संसार को अपने समय से पहले ही छोड़ दिया...?

इसी प्रकार से उसकी सखी नर्सें सोचती थीं। सोचती थीं और फिर मन ही मन परेशान होती थीं। शायद ऐसे ही सोचती भी रहेंगी। बहुत दिनों तक_____बहुत वर्षों तक_____तब तक, जब तक कि नीलू की यादों का एक कतरा भी उनके मानसपटल पर स्थिर रहेगा। सांवतवाड़ी के इस हस्पताल के चप्पे चप्पे में नीलू की कहानी बसी रहेगी, और जब तक यहां उसकी सखी नर्सें मरीजों की सेवा करती रहेंगी तब तक वे नीलू की स्मृतियों को भी समय असमय दोहराती रहेंगी।

पुलिस की समस्त कार्यवाही पूरी होने के पश्चात नीलू की लाश हस्पताल की पूरी मान मर्यादा एंव रीति के अनुसार पूरे मान सम्मान के साथ हस्पताल के ही मसीही कब्रिस्थान में दफ़ना दी गई। नीलू की जीवन की अंतिम यात्रा के दौरान समस्त सांवतवाड़ी का मनुष्यों का हुजूम ही उमड़

आया था। हस्पताल का हरेक कर्मचारी, डाक्टर तथा नर्से आदि सब ही मौजूद थे। इसके अतिरिक्त और भी वे सारे लोग मौजूद थे जो कि आस पास की मसीही बस्तियों व मिशन कम्पाउंडों में रहा करते थे। इतनी अधिक भीड़ का करूण वातावरण बन गया था कि राह चलते लोग व मोटर गाड़ियां तक उसको अंतिम श्रृंद्धांजलि देने के लिये रूक गये थे। उसका अंतिम संस्कार देखने के लिये जैसे आसमान में उड़ने वाले पक्षी तक वृक्षों और पेड़ों की डालियों पर चुपचाप बैठ कर इस दुखद नज़ारे को अपना मुंह लटकाये देख रहे थे_____मगर ये कितने आश्चर्य की बात थी कि, जिसके जीवन को एक नई राह की रोशनी देने की खातिर नीलू ने अपना जीवन निछावर किया था, उसका नीलू के इस अंतिम संस्कार के समय कहीं नामो निशान तक नहीं था_____क्षितिज कुमार 'कलवरी'। वह मशहूर और अखबारों की सुर्खियों में बसा हुआ कुख्यात नाम 'कलवरी' कि जिसने कलवरी की सलीब के आंसुओं की रक्षा के लिये अपने जीवन में न जाने कितने दुख और जोखिम उठाये होंगे____कितने ही आंसू उसने बरबाद किये थे____आज वही 'कलवरी' हजारों आंखों को नीलू की मौत के सहारे नम कर गया था।

क्षितिज ने कभी कहा था कि 'तुम्हारे बाद'_____नीलू ने उसको उत्तर दिया था _____'मेरे बाद' ; और अब नीलू के जाने के पश्चात केवल रह गया था _____'उसके बाद' या 'तुम्हारे बाद' क्षितिज को जब भी नीलू के उसके प्रति इस अपार, अनकहे और असीम प्यार तथा उसके कारण दिये गये उसके जीवन का समर्पण और बलिदान के बारे में ज्ञात होगा तो वह भी यही सोचने पर विवश हो जायेगा कि, ' तुम्हारे बाद'। बार बार उसके मस्तिष्क और दिल की सोचों में यही शब्द टकरायेंगे_____'तुम्हारे बाद' _____'तुम्हारे बाद' ; तुम्हारे बाद मैं वह नहीं रहूंगा जो तुम्हारे सामने था।

नीलू के जीवन के अंतिम संस्कार के समय आई हुई भीड़ का शायद कोई भी जन उपरोक्त लिखे गये शब्दों का अर्थ नहीं समझता होगा। शायद कोई भी इस गूढ़ भेद को नहीं जानता होगा। मगर फिर भी ये मानव जीवन का सिद्धान्त है कि कभी कभी एक जीवन को बचाने के लिये किसी जीवन की ही आहुति देनी पड़ जाती है; और इसका सबसे बड़ा तथा महान दुनियां का केवल एक ही अनूठा उदाहरण है कि मसीहियत के संसार

में प्रभु यीशु मसीह महान ने समस्त संसार को बचाने के लिये अपने प्राणों का बलिदान कलवरी की सलीब पर किया था। इस दुख को सहने के लिये उन्होंने कितने ही आंसू बहाये होंगे; मनुष्यों में से शायद कोई भी इन आंसुओं का मूल्य नहीं आंक सकता है। यदि हम मसीही हैं, और हम प्रभु यीशु मसीह के अनुयायी तथा उनकी भक्ति करने वाले भक्त होने का एलान करते हैं और यदि हमारे पास उसकी सेवकाई के काम को करने के लिये कोई जिम्मेदारियां हैं तो हमें ये सोचना होगा कि हम कलवरी की सलीब पर बहे हुये रक्त तथा उसके आंसुओं का कितना मूल्य अदा करते हैं ? यदि सही और सच्चे रूप में हम अपने मसीह की सेवा करते हैं तो ये निश्चित है कि फिर कभी कोई भी 'क्षितिज' मजबूर होकर 'कलवरी' डाकू और दुर्दान्त लुटेरे के नाम से कुख्यात नहीं हो सकेगा। बन्दूक या तलवार के बल पर ऐसी परिस्थितियों का कोई भी विकल्प नहीं हो सकता है, मगर सोचना ये है कि बन्दूक या तलवार चलाने के पीछे जो कारण और जो लोग हैं, उन पर हम कैसे नियत्रंण कर सकते हैं। उत्तरी भारत में डॉयोसीज़ के नियत्रंण में चलाये जानी वाली मिशन सेवाओं के किसी भी चर्च कम्पाऊंड, मसीही गिरजाघरों तथा अन्य संस्थानों पर एक नज़र डालिये और देखिये कि मसीही बस्तियों, मसीही कम्पाउंडों के घरों, मकानों तथा बाउंड्री की गिरती और जीर्ण होती हुई दीवारें, मसीही गिरजाघरों की छतों से बारिश के समय रिसती हुई छतें तथा मसीही बस्तियों में अपने रहन सहन के लिये अपने स्थायी ठिकाने बनाते हुये गैर मसीही लोगों के गगन चुम्बी आलीशान मकानों को देख कर कहीं ऐसा तो प्रतीत नहीं होता है कि फिर कोई 'कलवरी' इनकी रक्षा के लिये बन्दूक थामने की योजना बना रहा है। ये जमाने का चलन है कि पाप समाप्त करने की योजना और एलान मनुष्य सदैव ही करता आ रहा है, मगर अपराधी कभी स्वंय बनते नहीं हैं, उन्हें बनाया जाता है। चम्बल की नदी के तीर तथा वहां की धूल भरी धरती आज भी इस बात की गवाह है कि जिन लोगों ने वहां शरण लेकर एक बागी का जीवन गुजारा, उन्होंने बन्दूक खुद नहीं उठाई थी, बल्कि उन्हें उठाने पर मजबूर किया गया था। ऐसे बागियों के कदमों के निशान आज भी चम्बल के बीहड़ों से बरामद किये जा सकते हैं।

नीलू के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार करने के पश्चात जब भीड़ का हुजूम वापस लौटने लगा तो उदास और थके पांवों में जैसे कोई बल ही नहीं था। लेकिन लौटना तो सब ही को था। सो धीरे धीरे सारे कदम

पीछे आने लगे।जीवन से थकी हुई लाशों के समान.....;और इन्हीं कदमों की यात्रा के बाद समाप्त हो गई एक कहानी_____मानव जीवन का एक सच्चा और अधूरा नाटक_____एक नर्स की प्यार से भरी ज़िन्दगी की दर्दभरी दास्तॉन_____एक मसीही युवक की बरबादियों की जोख़िमों से खेली हुई इबारत_____मसीही कलीसियाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा मसीही सम्पत्तियों की अवैद्य सौदेबाजी के ख़िलाफ एक मसीही युवक का अपना छेड़ा हुआ जेहाद..... .....
..... .....; यदि भविष्य में यही सब लगातार होता रहा तो न जाने कितने ही 'क्षितिज' बागी बनने के लिये विवश हो जायेंगे, और फिर उनको बचाने के लिये कितनी ही 'नीलू' अपने जीवनों की भेंट चढ़ाती रहेंगी।न जाने कितने ही हस्पतालों में हर बार एक नई 'नीलू' की कहानी जन्म लेती रहेगी_____शायद हरेक नये दिन की नई रश्मि के साथ हरेक वर्ष_____हरेक युग में।

# कलवरी के आंसू

## अंतिम परिच्छेद

कई दिन बीत जाते हैं।

कई माह। कई वर्ष_____लगभग पन्द्रह वर्ष यूं ही जमाने के बदलते हुये मौसमों के समान अपना रंग बदलते हुये बीत जाते हैं।

वही सांवतबाड़ी है। वही सांवतबाड़ी का हस्पताल। वही जगह है। वही हवायें_____सब कुछ वही है। सांवतबाड़ी में बहुत कुछ बदल गया है। बहुत कुछ नया बन गया है। हस्पताल का क्षेत्र काम की अधिकता के कारण काफी बढ़ चुका है। कितने ही विभाग इसमें नये खुल गये हैं। नई इमारतें बन चुकी हैं। हस्पताल के कब्रिस्थान में दिवंगत नर्स नीलू की कब्र संगमरमर के सफेद पत्थरों से पक्की कर दी गई है। अब उसकी यादें केवल उसकी मज़ार के रूप में कब्रिस्थान के प्राचीर तक ही सीमित रह गई हैं। लोग नीलू को भूल चले हैं। उसके याद करने वालों में कुछेक ही हैं जो समय असमय जब भी उसका जिक्र चलता है तो भरी हुई आंखों के गिरते हुये आंसुओं की बूंदों के साथ उसको स्मरण कर लिया करते हैं। नीलू की प्यार भरी शोख़ बातें, मरीजों के प्रति उसके दिल में बसी हुई उसकी अपार सहानुभूति ; सब ही कुछ वक्त की मोटी मोटी पर्तों के नीचे दब कर दफन हो चुका है। कोई उसे आज याद नहीं करता है। कोई भी शायद उसका नाम नहीं दोहराता होगा। मगर हां, हस्पताल के इतिहास में अवश्य ही उसकी कहानी लिखी जा चुकी है। ऐसी उसकी कहानी कि जब तक सांवतबाड़ी का हस्पताल जीवित रहेगा तब तक उसका नाम उसमें जीवित रहेगा।

सांवतबाड़ी के हस्पताल के कब्रिस्थान में बनी हुई नीलू की कब्र

पर आज भी हवायें आती हैं, और उसको एक बार बहुत ही प्यार के साथ चूम कर चली जाती हैं। सारी सारी रात चन्द्रमा उसकी कब्र को एक टक निहारता रहता है। छोटी छोटी नादान और मासूम तारिकायें उसको टुकर टुकर ताकती रहती हैं। आज समय की धुंध में हस्पताल के कुछेक सेवा निवृत्ति के किनारे बैठे हुये वयोवृद्ध कर्मचारी ही नीलू की कहानी को जानते हैं। लेकिन फिर भी कभी कभी उनका बढ़ता हुआ बुढ़ापा उनको नीलू की स्मृतियों को फिर से याद करने की जैसे इजाजत ही नहीं देता है। इसीलिये कोई भी उसकी सफेद संगमरमरी कब्र की ओर झांकता भी नहीं है। सब ही कुछ नीलू के जाने के पश्चात जैसे यादों की धुंध में कैद होकर रह गया है।

मगर फिर भी एक मानव छाया उसकी कब्र पर प्रति दिन ही फूल चढ़ाने के लिये आती है। हस्पताल के कई एक लोगों ने अक्सर ही उस मानव छाया को शाम पड़ते ही कब्र के पास घन्टों बैठे देखा है। शरीर और स्वास्थ्य की दृष्टि से ये मानव छाया काफी कमज़ोर और बूढ़ी हो चुकी है। लगता है कि समय से पहले ही उसका शरीर बेहद थक चुका है। उसकी बढ़ती दाढ़ी, कंधों तक झूलते हुये उसके लम्बे खिचड़ी बाल और आंखों के गड्ढों में ठहरी हुई उसकी आप बीती कहानी ; ये सब चीजें इन बातों की गवाह हैं कि इस मानव छाया ने जैसे मनुष्य की ज़िन्दगी को बहुत करीब से न केवल देखा है, बल्कि भुगता भी है। अपनी उम्र से बहुत पहले ही ये मानव छाया झुक कर चलने लगी है। उसके बदन पर पड़े हुये मैले कुचैले कपड़े उसकी दरिद्रता की कहानी कहते हैं।

ये मानव छाया जब भी आती है, तो कुछ कहती नहीं है। किसी से कोई बात भी नहीं करती है। अपने बारे में कोई परिचय नहीं देती है। कोई यदि उससे कुछ पूछने की चेष्टा भी करता है तो कोई भी उत्तर दिये बगैर चुपचाप अपना स्थान छोड़ कर चली जाती है। लोगों ने सदैव ही उसको बेहद चुप और ख़ामोश ही देखा है। हर समय गंभीर और उदास रहना ही शायद इस मानव छाया के जीवन का एक कठोर कर्तव्य बन गया है। शाम ढलते ही और सूर्य की अंतिम रश्मि के दम तोड़ते ही ये मानव बूढ़ी छाया हस्पताल या फिर कब्रिस्थान के प्राचीर में आ जाती है, और दिन की पहली किरण के उदय होते ही कहां चली जाती है, इस बात को कोई भी नहीं जानता है।

नीलू की कब्र पर अपनी बेवसी और किस्मत के रूठे हुये फूल

चढ़ाने वाली मानव छाया कोई अन्य नहीं बल्कि क्षितिज कुमार 'कलवरी' है। 'कलवरी' डाकू, जो कि जेल से अपनी चौदह वर्षों का कठोर कारावास काटने के पश्चात अपने जीवन के शेष दिन पश्चाताप की ज़िन्दगी के सहारे काट रहा है। नीलू की मृत्यु के बाद वह 'वह' नहीं रहा है, जो कि पहले था। पहले वह एक डाकू और लुटेरा था, मगर आज वह एक सच्चे मसीही के समान अपना शेष जीवन पश्चाताप और परमेश्वर की सेवा में गुजार रहा है। दिन निकलते ही वह परमेश्वर से दूर और भटके हुये लोगों में प्रभु के सन्देश के पर्चे बांटने निकल जाता है। सारा सारा दिन वह यही करता है। लोगों को प्रभु का सुसमाचार सुनाता है। उन्हें प्रभु यीशु मसीह के महान निस्वार्थ प्रेम के बारे में बताता है। फिर संध्या के डूबते ही वह इसी सांवतबाड़ी के हस्पताल के कब्रिस्थान में नीलू की कब्र के पास आ जाता है और फिर नीलू की कब्र के पास ही अपनी रात कब्रिस्थान के प्राचीर में व्यतीत करता है। यही उसका जीवन है। यही कब्रिस्थान उसका ठिकाना है। नीलू की कब्र ही उसके बैठने और अपनी दास्तॉन को बार बार दोहराने का स्थान है। सारी सारी रात, चाहे बरसात हो, कड़ी गर्मी हो, या फिर जाड़े की किटकिटाती सर्दी हो, वह इसी कब्र के सहारे बैठ कर अपने आंसू बहाता रहता है। उसकी याद में परेशान होता है। उसे याद करता है। उसके ख्यालों में डूब कर अपनी किस्मत का रोना रोता है। उस नीलू की स्मृति में कि जिसके महान त्याग और बलिदान के फलस्वरूप वह आज सचमुच एक इंसान बन सका है। आज से कई वर्ष पहले नीलू की आत्महत्या का कारण यदि कोई जानता है तो केवल क्षितिज_____वही क्षितिज कुमार 'कलवरी' कि, जिसने मिशन डॉयोसीज़ में फैले हुये भ्रष्टाचार के ख़िलाफ कानून को अपने हाथ में लेकर एक दिन दुर्दान्त डाकू और लुटेरे 'कलवरी' के नाम से सांवतबाड़ी और उसके आस पास के इलाकों में जी भर के ऊधम मचाया था।

सांवतबाड़ी के हस्पताल के उस कमरे में कि जिसमें एक दिन डाकू कलवरी घायल होकर स्वास्थ्य लाभ के लिये पुलिस की निगरानी में लाया गया था; उसकी उस समय की तस्वीर महज एक कड़वी स्मृति के रूप में केवल इस उद्देश्य से टांग दी गई है कि, ' हस्पताल में जीवन दान देने की कोशिश, बगैर किसी भी भेदभाव के हरेक को दिये जाने का प्रावधान है।' _____मगर ये कितने आश्चर्य की बात है कि वहां पर नीलू का कोई भी नामो निशान तक नहीं है। उस स्टॉफ नर्स नीलू का कि

जिसके महान और निस्वार्थ बलिदान के फल स्वरूप ही डाकू कलवरी आज एक परमेश्वर का सच्चा अनुयायी बन सका है। शायद यही मानव जीवन है। यही प्रकृति का नियम है। यही विधाता है_____परमेश्वर है__मनुष्य का जीवन है ___जीवन का प्रतिफल कि ; कहीं गीत है तो कहीं शोर___कहीं जुल्म है तो कहीं अमन_____कोई छीनता है तो कोई लूटता है____कभी लिया जाता है तो कभी दिया जाता है_____और कभी कभी एक बेहद ही निस्वार्थ भावना से इतना लुटाया जाता है कि लुटाने वाला खुद ही लुट कर रह जाता है। किसी को इंसान बनाने की लालसा में कोई कोई अपना सारा कुछ ही निछावर कर जाता है। अपना सब कुछ बांट देता है। बांट देता है अपना प्यार_____अपनी धन सम्पत्ति_____और अपने प्राणों की आहुति भी वह देने से नहीं चूकता है। शायद इसीलिये वही लोग अमर भी हो जाया करते हैं जो कि अपने समय से बहुत पहले किसी के जीवन के बदलाव के लिये मर जाया करते हैं। मानव जीवन के इतिहास में इंसानी जीवन भी वही सच्चा जीवन है जो कि अपनी मृत्यु के पश्चात मर कर भी कभी न मर सके। नीलू और क्षितिज ; दोनों ही के जीवनों का हश्र कुछ ऐसा ही हुआ था_____एक जीते जी मर कर भी नहीं मर सका, तो एक मरने के पश्चात भी जमाने की नज़र में अमर हो गया।

**समाप्त**

**‘Calvary ke Aansoo’**
A Complete Novel
written by
**SHAROVAN**

इस उपन्यास में स्थानों के नाम तो
कहीं कहीं वास्तविक हो सकते हैं, परन्तु
कथा साहित्य में पात्रों के नाम, घटनायें व संस्थायें
काल्पनिक हैं। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत से किसी
भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

- प्रकाशक

# शरोवन

**जन्म स्थान**

सहारनपुर, उत्तर प्रदेश [भारत]

**शिक्षा**

बी. एस. सी. जीवविज्ञान व रसायन शास्त्र

स्नातकोत्तर [हिन्दी व समाजशास्त्र]

**रसायनशाला**

सी. एल. टी. [एन. सी. ए.], यू. एस. ए.

एम. टी. [ए. एम. टी.], यू. एस. ए.

सी. एल. एस. [सी] रसायनशास्त्र [एन. सी. ए.] यू. एस. ए.

**लेखन**

उपन्यास, कहानी एंव लेख

**संपादन**

यीशु के पास, इनकारपोरेटिड

हिन्दी मसीह पत्र प्रकाशन

अमेरिका के अन्तर्गत **'चेतना'** हिन्दी मसीही पत्रिका का संपादन व प्रकाशन

**प्रकाशन**

उपन्यास: **बिखरे फूल, तुम दूर चले जाना, नैया, चरवाहा,**

**भारत की रचना, जिल्पा** – कहानी संग्रह तथा सरिता, मुक्ता, बाल भारती

भूभारती, युवक एंव 'चेतना' में कहानियां व लेख प्रकाशित

**सम्प्रति**

क्लीनीकल लेबोरेटोरी, यू. एस. ए. में मेडिकल टैक्नोलोजिस्ट

व क्लीनीकल लेबोरेटोरी सांइटिस्ट रसायनशास्त्र के रूप में कार्यरत्

## 'यीशु के पास' हिन्दी मसीह पत्र प्रकाशन से प्रकाशित व वितरित होने वाली अन्य पुस्तकें —

- प्रेम करता है वह—
- मसीही गवाहियों का संकलन
- जिल्पा—कहानी संग्रह
- शहीदों का दर्पण—
मेनोनाइट शहीदों की खूनी दास्तां
- तुम दूर चले जाना— उपन्यास
- नैया— उपन्यास
- चरवाहा— उपन्यास
- भारत की रचना— उपन्यास
- कलवरी के आंसू—
उत्तरी भारत की सी. एन. आई. में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आधारित एक मार्मिक उपन्यास
- A Clue in the Royal Room
- चौदह वर्षीय बाला (Rebecca Mohan) के द्वारा लिखा गया उपन्यास

सब ही पुस्तकें एक साथ खरीदनें पर मूल्य केवल
$ 75.00 एंव डाक खर्च मुफ्त.
मंगाने का पता है —
Yeshu ke Paas, Inc.
Hindi Masih Patra Prakashan
2379 Cochise Drive.
Acworth, Ga – 30102, USA
E-mail_ Yeshukepaas@comcast.net

## हमारी आने वाली अन्य पुस्तकें हैं —

- **बिल्हा** – कहानी संग्रह

- **प्रकृति मानव और धरती**
  उपन्यास

- **आहें** – उपन्यास

- **फूलों का दर्द**
  उपन्यास

- **फिर वहीं**
  शशोवन की आरंभिक कहानियों का संकलन

- **यीशु नासरी**